Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

युगावतार

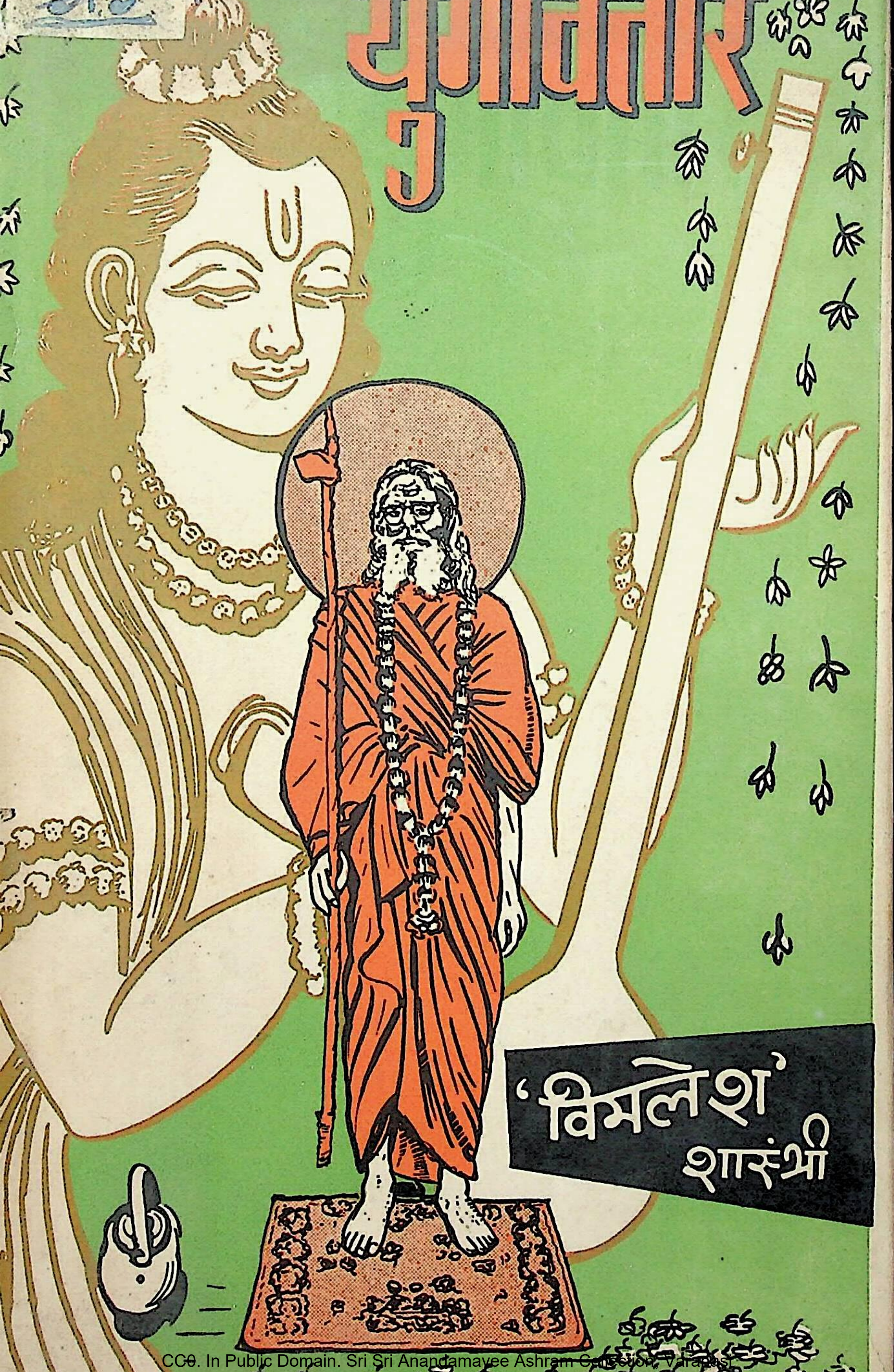

'विमलेश' शास्त्री

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

313

युगावतार

'विमलेश' शास्त्री

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

युगावतार

9/23 B

रचयिता :—
आशुकवि पं० राधाकृष्ण मिश्र 'विमलेश' सा० शास्त्री

प्रकाशक :—
युगावतार प्रकाशन समिति
नेहरूनगर, कानपुर ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मूल्य—सात रुपए

प्रकाशक :—
युगावतार प्रकाशन समिति
१०७/२४१ नेहरूनगर, कानपुर।
प्रकाशन काल :—
मार्च, १९६८।
मुद्रक :—
विवेक प्रिंटर्स, ब्रह्मनगर, कानपुर।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नैमिषपीठाधीश्वर, जगदाचार्य, अनन्त श्री विभूषित
श्री नारदानन्द सरस्वती जी महाराज

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समर्पण

तीर्थ नैमिषारण्य के सन्त !
भक्त जनता के प्राणाधार !
व्यास पीठाधिप ! जगदाचार्य !
समर्पित तुमको युगावतार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कवि परिचय

कविवर पं० 'विमलेश' जी शास्त्री का जन्म १ मई सन् १९२५ ई० को कानपुर प्रान्त के औनहाँ नामक ग्राम में हुआ। बाल्यावस्था में ही पिता जी का देहावसान हो जाने के कारण आप बड़े कष्ट से व्याकरण में मध्यमा तथा साहित्य से शास्त्री परीक्षा तक अध्ययन कर सके। बाल्यावस्था से ही इनमें प्रचुर काव्य प्रतिभा थी, परन्तु आर्थिक-संकट एवं संसार की विषम परिस्थितियों के आघातों ने आपकी काव्य-कला में एक चेतना सी उत्पन्न कर दी।

आपकी कविता रामलीला के विभिन्न नाटकीय पात्रों से प्रारंभ होकर, छायावाद, रहस्यवाद की ओर उन्मुख हुई और आप सफल गीतागार के रूप में उदित हुये। आपके गीतों में संस्कृत गर्भित सरस पदावली द्वारा अन्तर्जगत की सूक्ष्म अनुभूतियों का सफल चित्रण हुआ है। इसके पश्चात् आप श्री स्वामी नारदानन्द जी सरस्वती के माध्यम से धार्मिक-प्रचार क्षेत्र में आये। फलतः कविता की धारा में भी मोड़ आ गया और आप कवित्त, सवैया आदि छन्दों में सफल रचना करने लगे।

चीन के आक्रमण से आक्रोशित होकर आपने वीर रस के महान काव्य ग्रन्थ 'गर्जना' की रचना की। आपका अधिकांश साहित्य अभी तक अप्रकाशित है। सर्व-प्रथम 'गर्जना' के माध्यम से आपने साहित्यिक जगत में प्रवेश किया। आपकी कवितायें समय-समय पर 'प्रार्थना', 'गौरव' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। आपके कई सफल एकाङ्की नाटक प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। आपकी लिखी हुई कहानियाँ तथा बालोपयोगी कवितायें अपने-अपने स्थान पर अलग महत्व रखतीं हैं।

संक्षेप में 'विमलेश' जी की प्रतिभा सर्वतोमुखी है। साहित्यिक-जगत को उनसे बड़ी-बड़ी आशायें हैं। युगावतार महाकाव्य उनके प्रौढ़ मस्तिष्क के धार्मिक चिन्तन का मूर्त रूप है।

'साधक' मिश्र व्यास

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भूमिका

कविवर 'विमलेश' जी के युगावतार को पढ़कर, प्रत्येक पाठक उनकी काव्य-प्रतिभा से प्रभावित होगा। युगावतार में २३ सर्ग हैं, जो उसके महाकाव्य-पद की सूचना देते हैं। महाकाव्य के नायक रूप में महर्षि-नारद के अवतार को महत्ता प्रदान की गई है। कवि की लेखनी प्राकृत-जन के गुणगान में निरत नहीं होती; सरस्वती की वरद संतति, अपने प्रयत्न की सार्थकता, लोक के उत्कर्ष में देखती है। उसका प्रमुख लक्ष्य मानव की विकृतियों का निराकरण और सदंशों का उन्नयन करना है। मानवता का सम्वर्धन इसी प्रक्रिया द्वारा होता है।

जीवन अपनी यात्रा में उच्चावच-परिस्थितियों को परिलक्षित करता है। वह स्वयं कभी द्यावा की ओर बढ़ता है, तो कभी पार्थिवता में लीन हो जाता है। प्रपंच के पाश, जब उसे अभिभूत कर लेते हैं, तो वह जड़वत् बन कर श्वासमात्र लेता रहता है, परन्तु ज्यों-ज्यों इन पाशों से मुक्त होता जाता है त्यों-त्यों उसका सत्व शुद्ध होता जाता है और वह उर्ध्वारोहण की भूमिका में विचरण करने लगता है। इस भूमिका में दो उच्च तत्व उसके सहवर्गी बनते हैं एक तो ऐश्वर्य और द्वितीय दिव्यता। दिव्यता में प्रकाश है ऐश्वर्य में तेज। तेज मानव की निम्न प्रवृत्तियों पर अंकुश रखता है और प्रकाश उसे सन्मार्ग सुझाकर प्रगति-पथ पर अग्रसर करता है। दोनों का समन्वय, मानव के अन्तस्तल में उत्थान रूपी सूर्य की किरणों का प्रसार कर देता है, जिससे वह आभ्यंतर रूप से तो जगमगाने लगता ही है, बाहर भी उसके प्रकाश का प्रसरण तथा विकिरण होने लगता है। भीतर से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वैयक्तिक और बाहर से सामाजिक संगठन की प्रभा आलोकित होने लगती है। जीवन में दोनों का महत्व है।

युगावतार के कवि ने दोनों ही तथ्यों पर ध्यान रक्खा है, और अपने काव्य में महाकाव्य के उपयुक्त उन सभी तत्वों का समावेश किया है, जो सत् के सम्पोषण के लिये आवश्यक हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चतुर्वर्ग का भी काव्य में निरूपण किया गया है। नैमिषारण्य का ऐतिहासिक रूप, उसके वातावरण की पवित्रता यज्ञ, तप, दान आदि के अनुष्ठान, दीर्घकाल व्यापी सत्रों का समायोजन, मनु और शतरूपा की कथा, आदि का वर्णन, पढ़ते ही बनता है। शौनक और उनके साथी अट्ठासी हजार ऋषि जब नैमिष में साधनालीन होकर अपने पुरातन ज्ञान, विज्ञान का संग्रह कर रहे थे, उसके संरक्षण में दत्त-चित्त थे, तब वातावरण में उनसे भी पूर्व के न जाने कितने ऋषि, महर्षि अपनी चर्चा सुनने के लिये एकत्र होते होंगे और सम्भवतः उपस्थित साधकों की हृदयस्थली को अपनी भाव धाराओं से आप्यायमान करते होंगे। भृगु, कश्यप, बृहस्पति, शुक्र सभी तो इन सूर्य की किरणों में आज तक क्रीड़ा कर रहे हैं। कवि ने उनकी गाथाओं को अपने काव्य में निवद्ध करके हमें अपने पूर्वजों की कुछ झांकी तो दिखा ही दी हैं। हमारा वर्तमान यदि पूर्वजों की परम-पूत विचारधारा से कुछ भी आलोक गृहण कर सके तो हमारी आज की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

कवि ने इस काव्य में प्रकृति का अनुपम-चित्रण किया है। चतुर्थ सर्ग के प्रारम्भ में उषा का मनोहारी-वर्णन है—

'निशा नायिका के आभूषण,
एक-एक कर हुये विलीन ।
रजनीपति यह दृश्य देखकर,
हो जाते हैं दीन मलीन ॥
× × × ×

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मलय समीरण डोल रहा था,
कलरव करते विपुल विहंग ।
रवि द्युति दीपित लोल लहरियों—
से हँसती थी गंग तरंग ॥

× × × ×

विटपावलियाँ भी झुक-झुक कर,
करती लहरों का रसपान ।
कोई स्नान कर रहा साधक,
कोई करता प्रभु का ध्यान ॥

इसी प्रकार पंचम सर्ग में ग्रीष्म ऋतु का अतीव आकर्षक चित्र उपस्थित किया गया है ।

यथा—

साँय-साँय कर लू की लपटें,
मानव को झुलसाने वाली ।
भट्टी की सी आग उगलती,
सड़क पड़ी थी खाली-खाली ॥

नवम सर्ग में वैकुण्ठाश्रम का वर्णन है जो महाकवि बाल्मीकि, कविवर कालिदास और बाण भट्ट की कादम्बरी में आये आश्रम-वर्णन की स्मृति जागृत कर देता है । बाल्मीकि को तो अनेक वृक्षों के नाम याद थे ही, 'विमलेश' जी को भी उनसे कम याद नहीं हैं । वे लिखते हैं—

कदली, कुंद, कनैर, करौंदा,
कल कदम्ब, कमरख, कटहर ।
बट, बदरी, बकुची, बबूल थे,
बिल्व, बंश, बञ्जुल, बड़हर ॥

× × × ×

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पीपल, प्लक्ष, पलाश, प्रचुर थे,
शीशम, शमी, शाल्मली, शाल ।
आम्र, अनार, आँवला अतिशय,
तरुवर-तिन्तिडि, ताल, तमाल ॥

× × × ×

झूम रही थीं ललित लतायें,
भ्रमरावलि करती रस-पान ।

× × × ×

कहीं मयूर नृत्य करते थे,
भाग रहे हरिणों के झुंड ।
गंगा-तट पर ध्यान मग्न कुछ—
साधक जिनके लगा त्रिपुंड ॥

शिशिर का वर्णन करते हुये कवि लिखता है—

जल था या असि-धार तीव्र थी,
यदि हाथों में छू जाता था ।
अँगुली स्तब्ध, शून्य होतीं नर,
कम्बल तन में लपटाता था ॥

प्राकृतिक ऋतुओं के वर्णन के साथ कवि की अलङ्कार योजना भी सार्थक बन पड़ी है ।

उपमा—

रवि रश्मिजाल अरविन्दों को,
चन्द्रानन चारु चकोरों को ।
जिस भाँति प्रफुल्लित कर देता,
घन मण्डल, वन में मोरों को ॥

× × × ×

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शलभों ने दीप शिखा पाई,
मधुपों को सौरभ-पान मिला।
कुमुदावलि को चन्द्रिका मिली,
चकई को स्वर्ण विहान मिला ॥

× × × ×

जनता को नारद का दर्शन,
जैसे दरिद्र को भूति मिले।
या ब्रह्म ज्ञान की मोदमयी,
योगी को शुभ अनुभूति मिले ॥

उत्प्रेक्षा—

पुष्पित, अरुण पलाश-पुष्प थे,
मानों लिये हुये सन्यास।
कलि-कल्मष की चिता धधकती,
उसी लालिमा का आभास ॥

× × × ×

अथवा नैमिष के विषाद की,
विभावरी का अब है अन्त।
यह प्रभात का अरुणोदय ले,
आया है ऋतुराज वसन्त ॥

रूपक—

वन रूप गगन में शिविरों—
की घिरी श्वेत घन माला।
विद्युत भी चमक रही क्या,
पावस ने डेरा डाला ॥

श्लेष अलङ्कार का उदाहरण एक नवीन प्रयोग है। यहां मोटर के साथ लक्ष्मी जी की उपमा देकर, चक्रपाणि, चंचल गति,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा स्नेह वारि में श्लेष रक्खा गया है; चक्रपाणि = विष्णु, चक्रपाणि = ड्राइवर, स्नेह वारि = प्रेम रस, स्नेह वारि = पेट्रोल, जल ।

है चक्रपाणि वश वर्तिनि,
चंचलगति चलने वाली ।
शुभ-स्नेह वारि की भूखी,
लक्ष्मी सी सुषुमा-शाली ॥

यमक अलङ्कार कई स्थानों पर आया है, यहाँ पर कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

अभी पहुँचा तक, चातक नहीं,
स्वाति की जल-कणिका के पास ।
वियोगी की कब्र पूरी हुई,
बता दो घन ! जीवन की आस ॥

× × × ×

सरोवर सा वरसा ने किया,
ताल, खेतों को एकाकार ।
आज पावस, पा बस में मेघ,
व्यक्त होता बन कर साकार ॥

× × × ×

अर्थान्तरन्यास—

अब तो ग्रामीण जनों का,
लगने लगता है मेला ।
जिसमें अनुराग भरा हो,
वह रहता नहीं अकेला ॥

इस प्रकार 'युगावतार' काव्य के तत्वों से परिपूर्ण एक महाकाव्य है । देवोपम चरित्रों की उद्घाटना द्वारा, वह लोक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मंगल विधायक भी बन पड़ा है, उसमें देश की पराधीनता, और उसमें गान्धी का उदय, सत्याग्रह का सन्देश प्रार्थना समिति में मालवीय जी का अन्तिम-सन्देश, अंग्रेजों की दुरभिसन्धि से देश का विभाजन, नोआखाली आदि के वर्वर-अत्याचार आदि का वर्णन भी देश तथा समाज के चित्र को समुपस्थित कर रहा है। कवि के अध्ययन की छाप पग-पग पर दृष्टिगोचर होती है। गीता, योगवाशिष्ठ आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों के सार वाक्य यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। गुरुदेव स्वामी एकरसानन्द जी महाराज की तपश्चर्या, उनके कई शिष्यों के रूप में प्रतिफलित हुई, परन्तु स्वामी नारदानन्द जी के रूप में उसका जो तेजस्वी-रूप जनता के समक्ष आया है, वह सब में मूर्धन्य है।

आशा है कविवर 'विमलेश' जी अपनी काव्य-प्रतिभा के द्वारा और भी श्रेष्ठ-काव्यों की सर्जना करके अध्यात्म प्रेमी जनता को तृप्त करते रहेंगे।

डा० मुन्शीराम शर्मा 'सोम'
एम० ए०, पी-यच० डी०, डी० लिट्०
संचालक वैदिक शोध संस्थान
आर्यनगर, कानपुर।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust, Funding by MoE-IKS

आत्म निवेदन

मानस रोगाक्रान्त, भव-वारिधि की वीचिमालाओं द्वारा विताडित, असंख्य जीवन, जिनके दर्शन एवं चेतनादायक, उपदेश-सूत्रों से परमानन्द की प्राप्ति करते हुये प्रशस्त पथ पर आगये, कलि-काल ग्रस्त जीवों का उद्धार करने के लिये, दयालुता से अभिभूत होकर वैकुंठ धामाधिपति भगवान श्री नारायण से 'सत्य नारायण को अपने जीवन में स्थापित करने का व्रत' रूप उपाय लेकर कलि में सत्ययुग की स्थापना करने वाले; वृन्दावन धाम में, नयनों से अजस्र-अश्रुधारा प्रवाहित करने वाली भक्ति के, ज्ञान, वैराग्य नामक जरा जीर्ण, पुत्रों को अपने अथक परिश्रम तथा अदम्य साहस-बल से श्रीमद्भागवतामृत का पान करा कर नवजीवन प्रदान करने वाले, देवर्षि—नारद जी के हम पतित प्राणियों पर अनन्त उपकार हैं।

ब्रह्मा जी के द्वारा सनकादिक मुनीश्वरों का सृजन करके सृष्टि-विस्तार विषयक कामना में प्रतिघात से क्रोध उत्पन्न हुआ। उस क्रोध को बुद्धि से निगृहीत करने पर ब्रह्मा जी के भ्रू-मध्य से भगवान शंकर की सृष्टि हुई, किन्तु ब्रह्मा जी को अभी सन्तोष न था अस्तु मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह क्रतु, भृगु, वशिष्ठ, दक्ष, नारद इन दस महात्माओं को अपने मानस से सृजन किया। इसके पश्चात् कर्दम, सरस्वती, धर्म आदि के सृजनानन्तर, ब्रह्मा जी का शरीर द्विधा-विभक्त होकर, मनु-शतरूपा के रूप में मैथुनीय-सृष्टि का संचालक बना। यह मानस तथा मैथुनीय-सृष्टि का सूक्ष्म इतिहास है, जो सिद्ध करता है कि श्री देवर्षि नारद जी अयोनिज हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री 'विमलेश' शास्त्री

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपर्युक्त ब्रह्मा जी के सनकादिक तथा मरीच्यादिक-पुत्रों का उल्लेख, इतिहास में द्वापर युग तक मिलता है। परन्तु विविध पुराणों के नारद विषयक उद्धरण देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि हम कलिकाल-ग्रस्त, आधि व्याधि प्रपीडित व्यक्तियों पर सान्त्वना का वरद-हस्त रखने के लिये इस युग में भी वह समय-समय पर प्रकट हो जाते हैं। देवर्षि के पूर्ण-गुण तथा प्रतिभा एवं भव-भ्रान्त पथिकों पर पूर्ण प्रेम-प्रवणता देख कर ही त्रिकालज्ञ गुरुदेव श्री स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज ने श्री जगदाचार्य जी को 'नारदानन्द' नाम से अभिहित किया था ? नारद शब्द का अर्थ है—नार = अज्ञान, द = खण्डन करने वाला। अज्ञान को खण्डित करने वाला। श्री जगदाचार्य जी ने बाल्यावस्था से ही अपनी जन्म-भूमि मियांगंज में सत्संग-मंडल की स्थापना की। वैकुण्ठाश्रम उनके शैशव काल में भी धार्मिक प्रचार की उत्कट अभिलाषा का प्रतीक है।

श्रृंगीरामपुर, देवकली-अरण्य, धन्धारी वन, तथा नैमिषारण्य आदि विविध तपस्थलियों में तपस्या करके शतशः सहस्रशः ऐसे साधक संत तैयार कर दिये, जो समस्त भारत में ही नहीं अपितु देश के बाहर भी अज्ञानान्धकार में पड़ी हुई जनता को विवेक रश्मि-मालाओं से आलोकित कर रहे हैं। जिस समय अपना हिन्दु-समाज विघटन की विषम परिस्थिति में दुःख, दैन्य, पराजय, तथा प्रताडना का लक्ष्य बन रहा था, श्री जगदाचार्य जी ने विघटित हिन्दु-समाज को एक श्रृंखला में आवद्ध करने के लिये सामूहिक प्रार्थना का प्रबल आधार दिया। नैमिषारण्य में लगभग १ मील का ऋषि आश्रम बनाकर उसमें आधुनिक ढंग से कुंज गुफाओं का निर्माण करके तपोनिष्ठ-संतों के वैज्ञानिक-चाकचक्य से बाह्य-मुख जीवन को अन्तर्मुख बनाया। भारत के समस्त तीर्थों एवं सन्तों के पास निरभिमान होकर जाना तथा अश्रुमुखी भक्ति के कष्ट

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निवारणार्थ एक प्रार्थना के सामूहिक मंच पर उनको एकत्र करना उनके लोक संग्रही जीवन की एक झांकी है।

नायक के विषय में अपनी दृढ़ भावना है कि यह वही देवर्षि नारद हैं; कलिमल ग्रस्त पापात्माओं का उद्धार करने हेतु ही इनका अवतरण हुआ है। इसीलिये मैंने इस पूरे महाकाव्य में इनके गृहस्थाश्रमीय नाम 'पं० बाबूराम पाण्डेय' या सन्यासाश्रमीय नाम 'नारदानन्द सरस्वती' का उल्लेख न करके सर्वत्र देवर्षि या नारद नाम का ही उल्लेख किया है। पाठकों के भ्रम-निराकरण के लिये यहाँ यह निर्देश कर देना मैं अपना आवश्यक कर्तव्य समझता हूँ— कि इस महाकाव्य में बाबूराम नामक दो पात्रों का उल्लेख है एक तो पं० बाबूराम जी वाजपेयी, जो आजकल विज्ञान पूजन वानप्रस्थी के नाम से नायक के प्रमुख-शिष्य हैं, दूसरे इस काव्य के नायक जिनके लिये केवल एक ही स्थान पर, एक ही पंक्ति में बाबूराम व नारदानन्द शब्द आये हैं, परन्तु प्रधानता नारद नाम की ही है। यथा—

'नारद का बाबूराम नाम,
बदला व नारदानन्द हुये ।'

लगभग २१-२२ वर्षों तक श्री चरणों में बैठ कर मुझे जिस शान्ति का अनुभव प्राप्त हुआ, तथा उनकी जन्मस्थली से लेकर नैमिषारण्य तक जहाँ-जहाँ बैठ कर उन्होंने साधनायें कीं, उन-उन स्थानों से अपने सामर्थ्य तथा सीमित-साधनों द्वारा उनके विषय में जिस सत्य का मैंने स्वयं साक्षात्कार किया, इस महाकाव्य में अंकित करने का प्रयास किया है। सरल शब्दों में उच्च-वेदान्त को व्यक्त करने की उनकी अपनी शैली है, उसी शैली से उनके ऐतिहासिक, प्रवचन-सूत्रों को इस काव्य में यथासम्भव उपनिबद्ध करने का प्रयास किया गया है। इस महाकाव्य के सृजन का यह भाव-पक्ष है, कला-पक्ष की कसौटी में इसे कितनी सफलता मिली

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है, इसका निर्णय करना समीक्षकों का कार्य है। उस विषय को स्पर्श करने का भी अधिकार कवि को नहीं है, कवि अपने चिन्तन को मूर्त-रूप देकर मौन हो जाता है।

यद्यपि आधुनिकतावादी, कवि-मण्डल का एक नारा है—कि 'कला कला के लिये है' परन्तु भारतीय काव्य-कला की परम्परा, सत्यम् को शिवम् के लिये सुन्दरम् का आवरण पहना कर, कवि की 'स्वान्तः सुखाय' रचना को 'सर्व जन हिताय' का स्वरूप दे दिया करती है। श्री युगावतार, नारद की समस्त प्रचारकीय-लीलायें इसमें आगईं हैं, यह कहना सर्वथा असम्भव है, फिर भी अनन्त-समुद्र में डुबकी लगाकर जो-जो रत्न मैं अपनी स्वल्प-बुद्धि से संकलित कर सका हूँ, उनका एक हार 'युगावतार' के रूप में संगुम्फित कर अपने गुरुदेव को अर्पण कर रहा हूँ।

इस महाकाव्य के लिखने की मेरी अन्तःप्रेरणा को श्री स्वामी विवेकानन्द सरस्वती तथा कविवर श्री पं० 'गिरिजेश' मिश्र इटावा से विशेष बल मिला। इसके लेखन-काल में श्रद्धेय श्री श्रद्धापूजन जी वानप्रस्थी, तथा श्री पद्म-पाणि जी ब्रह्मचारी का सहयोग चिर-स्मरणीय रहेगा। इस ग्रन्थ को इतना परिष्कृत-रूप प्रदान करने में श्री गंगावत्स सिंह जी एडवोकेट, उन्नाव, तथा श्री अर्जुनमल दुदानी एम० ए० बी० यल० राजस्थान, से सुन्दर, सामयिक सत्परामर्श प्राप्त हुये हैं। इसकी प्रेस कापी करने में अपने प्रिय अनुज पं० ओमप्रकाश जी शास्त्री तथा पं० सिद्धेश्वर जी पाण्डेय एम० ए० यल० टी० के द्वारा पूर्ण सहयोग मिला है। एतदर्थ उपर्युक्त महानुभावों के समक्ष आभार प्रदर्शन करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। पूज्य श्री जगदाचार्य जी के अमूल्य-संस्मरण, श्री स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती तथा श्री स्वामी प्रेमानन्द जी सरस्वती एवं श्रद्धेय चाचा विज्ञान पूजन जी वानप्रस्थी द्वारा प्राप्त हुये हैं, अतएव उपर्युक्त संतों के श्री चरणों में श्रद्धा से नत-मस्तक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हूँ। परम श्रद्धेय डा० मुंशीराम जी शर्मा एम० ए० पी० यच० डी०, डी० लिट० (डाइरेक्टर वैदिक रिसर्च इंस्टीट्यूट आर्यनगर, कानपुर) ने इस ग्रन्थ की भूमिका तथा 'कवि से' इस शीर्षक से उद्‌वोधनात्मक कवितायें देकर जो अनुग्रह किया है उसके लिये हम हृदय से उनके कृतज्ञ हैं।

इस महाकाव्य को पढ़ कर पाठकों ने यदि इसके चरित्र-निर्माण परक कुछ सूत्रों को भी अपने जीवन में उतार लिया अथवा लोकोत्तर, परमानन्द-रस की कुछ बिन्दुयें भी प्राप्त कर सके, तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूंगा।

'विमलेश' शास्त्री
भागवताचार्य

औनहाँ, कानपुर
१९-३-६८

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कवि से—

अभी अन्त क्या देखा तुमने, नायक का कविवर 'विमलेश' !
जीवन-अवधि विशाल सामने, नहीं काल की गति अनिमेष ॥
जब से चक्र चला है तब से, कितने उच्चावच गति रूप ।
जीव, स्वधा के वशीभूत हो, भोग रहा व्यंजन विद्रूप ॥
अरे ! अभी क्या एक अनेकों, होंगे इस भूतल पर सन्त ।
तम, रज पर धर पैर बढ़ेंगे, सत्पथ पर वे पथिक अनन्त ॥
आश्रित है जिन पर मानवता, सत्ता-प्रेरक सत्व विशेष ।
कहीं तिरोहित हो जाता तो, रहता यहाँ न रचना-लेश ॥
ज्ञान, कर्म, इच्छा, प्रवाह सम, रचना में बहते अज्ञात ।
नर-प्रसूति ही नार कहाती, नार प्रदाता नारद ख्यात ॥
आपः नार प्रवाह नाम से, आत्मा, शाश्वत गति या ज्ञान ।
यही सिखादे यही दिखादे, उसका सार्थक यशो वितान ॥
वह प्रणम्य गुरु शिक्षक सब का, धन्य उसी का कीर्तन-गान ।
धन्य लेखनी जिसने पाया, निज नायक वसुधा-वरदान ॥
अरे ! अभी प्रारम्भ हुआ है, वलिदानी जीवन का सत्र ।
अभी कहाँ लपटें ज्वाला की, अभी कहाँ रक्तारुण छत्र ॥
अर्थ, काम अरि अनी अड़ी है, खड़ी चन्द्रिका निज वलि हेतु ।
भ्रष्टाचार असुर ने आगे, घेर लिया है संयम सेतु ॥
पाप-प्रतन्या पुण्य-पदों से, दब जब पावेगी गति रुद्ध ।
सत्, चित् चमकेंगे मानस में, होगा जब विज्ञान प्रबुद्ध ॥
तभी नारदानन्द मन्द्र-ध्वनि, भर देगी नव हृदयाकाश ।
जय-जयकारों में चमकेगा, तभी सनातन-धर्म-प्रकाश ॥
ठहरो ! अभी प्रतीक्षा कर लो!, पूरा होने दो मधुमास ।
अभी मञ्जरी गदरानी है, दूर पक्व सहकार सुवास ॥

'सोम'

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकाशकीय वक्तव्य

सुधी जनों के समक्ष कविवर 'विमलेश' शास्त्री द्वारा रचित 'युगावतार' महाकाव्य प्रस्तुत करने में मुझ सरीखे अकिंचन को भी निमित्त बन जाने का अनायास ही जो एक सौभाग्य प्राप्त हुआ, उसके लिए मैं उन सभी सहयोगी बंधुओं का अनुगृहीत हूँ जिन्होंने प्रकाशन कार्य संबंधी गंभीर दायित्व को संभालने के लिए मुझे पात्र समझा।

कवि 'विमलेश' की इस रचना के बारे में पाठकों को मैं कोई आलोचनात्मक दृष्टि दे सकूं, इस महाकाव्य के कला-पक्ष को लेकर मैं शास्त्रीय ढंग से इसके गुणावगुणों पर विचार कर सकूं, ऐसी साहित्यिक प्रौढ़ता का मैं अपने में सर्वथा अभाव ही अनुभव करता हूँ। इस दृष्टि से तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि काव्य कला के मर्मज्ञ और रसज्ञ इस ग्रंथ को लेकर अपनी सार ग्राहिणी सूक्ष्म दृष्टि से यथा समय अपनी समालोचना द्वारा सहृदय पाठकों के सामने, इसकी अंतर्निहित विशेषताओं को रखेंगे ही, मैं तो कविवर 'विमलेश' के प्रति अपनी कृतज्ञता इसलिए व्यक्त कर देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि उन्होंने इस महाकाव्य के प्रणयन से आज की इन संक्रमण कालीन घड़ियों में राष्ट्र के प्रबुद्ध जन-मानस के समक्ष कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण सामयिक प्रश्नों के समाधान, उभार कर रख दिये हैं जिनके संबंध में भ्रान्ति की गहरी छाया सर्वत्र व्याप्त है।

कवि ने अपने महाकाव्य के लिए एक ऐसे 'धीर प्रशान्त नायक' का चयन किया है जो जन-मानस के लिए निरी कल्पना अथवा मात्र श्रद्धा का विषय न होकर जीवन्त सत्य और जीते-जागते यथार्थ का मूर्त्त रूप है। किसी भी समकालीन युगपुरुष को लेकर, प्रबंध काव्य के रूप में, उसके जीवन चरित्र द्वारा समस्त

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राष्ट्र को दिशा-निर्देशन देने का यह प्रयास वस्तुत: स्तुत्य ही नहीं अपितु हिन्दी-वाङ्मय के लिए अद्वितीय भी है।

समग्र राष्ट्र जब आत्म-विभ्रम का शिकार बन कर अंतर्बाह्य कूटनीतिक कुचक्रों और निहित स्वार्थी अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों की दुरभिसंधियों से आपादग्रस्त हो, देश की नयी पीढ़ी जब अपने परम्परागत सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्रोत से विच्छिन्न होकर भोगवादी अभारतीय जीवन-दर्शन की ओर आकर्षित हो, राष्ट्र के आध्यात्मिक केन्द्रों में जन-जागृति की अपेक्षा भौगिक क्रियाओं के माध्यम से अथवा साम्प्रदायिक अंध श्रद्धा को उभार कर परिग्रह की प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिल रहा हो, ऐसे संक्रमण काल में देश के एक आत्मनिष्ठ तत्वदर्शी को महाकाव्य के माध्यम से नायक के रूप में प्रस्तुत करना स्पृहणीय ही कहा जावेगा। प्रस्तुत महाकाव्य के नायक पिछले पचास वर्षों से अनासक्त कर्मयोगी की तरह मूक-भाव से राजनीति के आकर्षण और उहापोह से दूर, वशिष्ठ, विश्वामित्र, व्यास, आदि गुरु शंकर और समर्थ रामदास के पद-चिन्हों का अनुसरण करते हुए वैदिक जीवन-प्रणाली को युगधर्म की बदलती हुई परिस्थितियों के साथ पुन: प्रतिष्ठापित करने के लिए अहर्निश प्रयास शील हैं। कवि ने ऐसे जीवन्मुक्त ब्रह्मर्षि को 'युगावतार' के रूप में अधिष्ठित कर विशुद्ध भारतीय परंपरा का ही निर्वहन किया है। देश का निष्पक्ष विचारशील वर्ग आज जब राजनैतिक प्रपंचों से ऊब कर किसी आध्यात्मिक महापुरुष के नेतृत्व की गहरी आवश्यकता अनुभव कर रहा हो, उस समय नैमिष पीठाधीश्वर जगदाचार्य महर्षि नारदानंद सरस्वती सरीखे स्थित प्रज्ञ संत के पावन चरित्र को बुद्धि जीवी वर्ग के समक्ष 'सत्यं-शिवं-सुन्दरम्' के हृदयग्राही रूप में चित्रित करने का यह सामयिक प्रयास सर्वथा वांछनीय एवं श्लाघनीय है।

मेरी अपनी दृष्टि से इस महाकाव्य की महत्ता इस बात में नहीं कि इसके लेखक को देश के कोने-कोने में फैले हुए काव्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नायक के सहस्रों-लाखों दीक्षित शिष्यों और श्रद्धालु भक्तों की बृहत् संख्या पाठकों के रूप में सहज ही सुलभ हो गई है, मैं कवि के श्रम की सार्थकता इस बात में भी नहीं मानता कि उसकी सिद्धहस्त लेखनी से मुग्ध होकर कुछ काव्य रसिक, इसके कलापक्ष में निहित सौन्दर्य को लेकर समय-समय पर आलोचनात्मक ग्रंथ निकालेंगे अथवा कवि की काव्य प्रतिभा पर विद्वज्जन प्रशस्तियां लिखेंगे, मेरा अंतःकरण तो इसलिए आश्वस्त एवं उल्लसित है कि कवि के अंतराल में प्रवाहित राष्ट्र प्रेम के निर्झर ने लक्ष-लक्ष युवकों के पिपासु मानस को अमृतपान करवाया है जो आज देश के कोने-कोने में उस युग पुरुष के नेतृत्व की प्रतीक्षा में आंखें बिछाए बैठे हैं जो उन्हें 'हिंसा-अहिंसा', 'धर्म-अधर्म', 'सत्य-असत्य' और 'कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य' के अंतर्द्वन्द्व से बाहर निकाल कर अनासक्त कर्मयोग के प्रशस्त राज-मार्ग की ओर दिशा-निर्देशन दे सके।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि मां भारती के पावन मंदिर में अपनी प्रतिभा और श्रद्धा से सौरभयुक्त कवि का पुष्पहार न केवल भारत की कोटि-कोटि जनता के लिए ही, अपितु 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के युगीन मंत्र दृष्टा महर्षि नारदानंद सरस्वती के प्रति कवि का यह समर्पण समग्र मानवता के लिए भी स्थायी शांति और सौहार्द का अनुपम उपहार सिद्ध होगा।

अपनी बात समाप्त करने से पूर्व, मैं 'युगावतार प्रकाशन-समिति' के संयोजक के नाते विवेक प्रिंटर्स, कानपुर के मालिक श्री प्रतापचन्द्र जी शुक्ल एम. ए. के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना आवश्यक समझूंगा जिनके आत्मीयतापूर्ण सहयोग के फलस्वरूप ही, यह ग्रन्थ इतना शीघ्र और परिमार्जित रूप में पाठकों के हाथों में पहुँच सका है।

—अर्जुनमल दुदानी

———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

9/23 B

युगावतार

महाकाव्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ शारदे !

विश्व के विपुल, विषम-व्याघात,
बनाते जब मानस को म्लान ।
तभी अवलम्बन देके अम्ब !
मुझे देती कविता-वरदान ।

स्वयं संस्थित हो सुन्दर-शब्द,
सरसता का करते सञ्चार ।
अलंकारों की होती सृष्टि,
कल्पना हो जाती साकार ।।

हृदय-तन्त्री से गाती तुम्हीं,
मुझे कर लेती मात्र निमित्त ।
भुला कर जग के कटु व्यवहार,
शान्त, संयत करती मम चित्त ।

हुईं हृत्-पद्मासन आसीन,
खोल कर आवृत अन्तर्द्वार ।
लेखनी में भरके नव-शक्ति,
लिखाती तुमही युगावतार ।।

विबुध वन्द्ये ! वर वीणापाणि !
भाव भर दो उर में अभिराम ।
आपके पदाम्बुजों में विनत,
कर रहा कवि 'विमलेश' प्रणाम ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रथम सर्ग

जहाँ पर मनु शतरूपा गये,
किया था तप अति तीव्र अपार।
एक पग से होकर के खड़े,
बिताये वर्ष अनेक हजार॥

जहाँ पर सत्यवती के पुत्र,
व्यास ने करके विमल विचार।
चार भागों में किया विभक्त,
वेद को, करने हित उद्धार॥

जहाँ पृथिवी में हुआ प्रविष्ट,
चारु चतुरानन प्रेषित-चक्र।
जहाँ के ऋषियों का तप देख,
क्षुब्ध होता था मन में शक्र॥

जहाँ पर पौराणिक था सूत,
व्यास का अनुपम शिष्य उदार।
व्यास विरचित अष्टादश मंजु,
पुराणों का शुभ व्याख्याकार॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शौनकादिक अट्ठासी सहस,
जहाँ पर आये थे मुनिराज।
सूत जी से सुन करके कथा,
हुआ आह्लादित संत समाज ।।

पान कर सोमलता का स्वरस,
जो कि जीवन-वर्धक है तत्व।
सहस्रों वर्षों चलती कथा,
जहाँ का इतना बड़ा महत्व ।।

जहाँ पर राघव ने दुर्दान्त,
मार कर रावण को, ससमाज।
किया था अश्वमेध सुपुनीत,
सभा संस्थित, सुर मुनि द्विज-राज ।।

तभी निज लव कुश सुतों समेत,
आदि कवि वाल्मीकि के संग।
प्रवासित वैदेही आ गईं,
देख निज पति को पुलकित अंग ।।

आदि कवि बोले—राघव ! सुनो,
तुम्हारी सीता है निर्दोष।
तुम्हारे ही लव, कुश हैं पुत्र,
करो स्वीकृत मुझ को हो तोष ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम्हारे अश्वमेध का अश्व,
इन्हीं ने रोका था कर युद्ध ।
विमूर्छित हनुमदादि को किया,
किया सब भ्राताओं को क्रुद्ध ।।

तुम्हीं को त्रेता से भी प्रथम,
बना कर, इष्ट हुआ मैं सिद्ध ।
आप की लीलायें लिख चुका,
किन्तु इस लीला से उर विद्ध ।।

सुनो ऐ नैमिष-वासी संत !
तथा आगन्तुक सज्जन वृन्द !
राम से पहिले राम चरित्र,
किया है जिन छन्दों में बन्द ।।

उन्हें ये दोनों राज-कुमार,
सुनायेंगे होकर निर्द्वन्द्व ।
श्रवण-सम्पुट को सब ही खोल,
सुनो, सब करो कुतूहल बन्द ।।

सहस्रों ऋषियों से परिपूर्ण,
सभा में शान्ति हुई अभिव्याप्त ।
और फिर वीणा सी बज उठी,
हुआ सब को अनुपम रस प्राप्त ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"जिस समय रावण-वध हो चुका,
अवध में हुआ राम अभिषेक।
रजक की गुप्त वार्ता मध्य,
सुने जब दोषारोप अनेक ॥

तभी लक्ष्मण को माध्यम बना,
कर दिया सीता का परित्याग।
आदि कवि आश्रम के अति निकट,
प्रदर्शित कर निज प्रजानुराग ॥

धरणिजा एकाकी रह गईं,
किया अति दारुण दुखद विलाप।"
श्रवण कर करुणा रस की कथा,
हुआ सब को ही अति सन्ताप ॥

सभी के नेत्रों से बह चली,
अश्रुओं की अब अविरल धार।
सभी ने करुण स्वरों से कहा,
राम! कर लो सीता स्वीकार ॥

तभी मर्यादा पालक राम,
कह उठे—"सीता तुम निर्दोष।
किन्तु परिचय समाज को मिले,
तभी मम उर में हो परितोष ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अभी तक सीता जी थीं मौन,
किन्तु अब अधर पुटों को खोल ।
ओज से युक्त हुई अभिव्यक्ति,
किन्तु था शिष्ट मधुर रस बोल ॥

"प्राणपति ! करके अग्नि-प्रवेश,
शुद्धता का परिचय उस बार ।
दे चुकी, फिर अब तुम को रहा,
परीक्षा का है क्या अधिकार ॥

अस्तु हे धरणी माता ! सुनो,
धरणिजा का तुमसे अनुरोध ।
स्वांक-संस्थित अब मुझको करो,
ताकि हो जनता को प्रतिबोध ॥"

उसी क्षण धड़-धड़ का स्वर हुआ,
फटी धरणी, निकला सुविमान ।
शीघ्र कर सीता को आसीन,
धरा में धसा महा छविमान ॥

दौड़ते "हा सीते !" कह राम,
दिखाई पड़ा मात्र था मुंड ।
मुंड अवनत हो हुआ विलुप्त,
रह गया अहो ! जानकी-कुंड ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इसी नैमिष में ही वह कुंड,
हुईं थीं सीता जहाँ विलुप्त ।
यहीं पर सरस्वती है नदी,
पुराणों में वर्णित, पर गुप्त ॥

श्रेष्ठ तीर्थों में इसको श्रेष्ठ,
ज्ञात कर आये थे प्रह्लाद ।
यहीं नर नारायण से हुआ,
दैत्य-पति का अति प्रखर विवाद ॥

यहीं अभिमत फल दात्री दिव्य,
रही हैं ललितेश्वरी विराज ।
अमावस्या को दर्शन हेतु,
सुसंस्थित होता विपुल समाज ॥

जहाँ बहती मन्थर गति लिये,
गोमती की है निर्मल धार ।
जहाँ की विपिनस्थली विलोक,
सकल जग लगता है निस्सार ॥

जहाँ का हत्या-हारी कुंड,
सकल जगती में है विख्यात ।
पाँच पाण्डव आये थे जहाँ,
वास करने को चिर अज्ञात ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जहाँ पर परशुराम द्विज श्रेष्ठ,
पितृ-वध से हो खिन्न महान ।
प्रवल तप द्वारा पाकर शक्ति,
बन गये थे, नर से भगवान ।।

तीर्थ-भ्रमणार्थ यहीं बलराम,
पधारे, फिर मारा था सूत ।
पूर्ण करके परिक्रमा जहाँ,
हुए द्विज-हत्या से परिपूत ।।

जहाँ पर मुनि दधीचि के निकट,
पधारे सुर होकर संत्रस्त ।
प्रार्थना मिलकर करने लगे,
शौर्य, साहस था उनका ध्वस्त ।।

कहो अमरो ! क्या विपदा पड़ी,
रो रहे क्यों, बोलो मुख खोल ।
मुनीश्वर के शब्दों को सुना,
तथा श्रद्धा का भाव टटोल ।।

शचीपति बोले—"'हम हैं त्रस्त,
वृत्र ने स्वर्ग लिया है छीन ।
भटक कर आये हम त्रैलोक्य,
न कोई त्राता, हम अति-दीन ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बताया लक्ष्मी-पति ने मुझे,
जाइये मुनि दधीचि के पास।
अस्थियाँ उनकी यदि मिल जायँ,
दूर तब हो सकता है त्रास ॥

कहा मुनिवर दधीचि ने तभी,
कामना मेरी है कुछ शेष।
स्नान कर लूँ सब तीर्थों मध्य,
सफल हो जिससे मुनिवर वेष ॥

कहा वासव ने मुनिवर शीघ्र,
मँगाता सब तीर्थों का वारि।
डालता इस शुभसर में अभी,
बनाता इसको कल्मष-हारि ॥

प्राप्त कर सुरपति का निर्देश,
चला सत्वर देवों का झुंड।
सभी तीर्थों से लाकर वारि,
भर दिया मुनि दधीचि का कुंड ॥

इसी मिश्रित जल में कर स्नान,
दिये मुनिवर ने अपने प्राण।
मिला अमरों को अस्थि-समूह,
हुआ तब उनका था परित्राण ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अस्थियाँ परहित में की दान,
त्याग का इतना उच्चादर्श।
इसी नैमिष-वन से था मिला,
हुआ गर्वोन्नत भारतवर्ष ॥

त्याग, तप में जो इतना बढ़ा,
हुआ जिसका था अति उत्थान।
वहीं पर कलियुग हुआ प्रविष्ट,
स्वार्थ की लेकर प्रखर कृपाण ॥

जहाँ पर योगी रहते रहे,
वहाँ अब भोगी जन समुदाय।
लुटेरे सक्रिय होने लगे,
भक्त जनता सब थी असहाय ॥

बालुका नेत्रों में कर क्षिप्त,
वस्तु ले होते अन्तर्ध्यान।
कहीं कुछ मुद्राओं के हेतु,
लिये जाते थे दिन में प्राण ॥

कहीं सब वस्त्राभरण उतार,
कर दिया यात्री को हा ! नग्न।
प्राप्त करके उसका सर्वस्व,
बहुत होते थे मन में मग्न ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सजगता खो जाती थी यहाँ,
अत्यधिक सक्रिय छल-व्यापार ॥
घूमते थे साधू के वेश,
यहाँ पर चोर और बटमार ॥

हो गया तीर्थ-यात्रियों हेतु,
तीर्थ था अति ही दुखद दुरूह ।
क्योंकि भक्तों से था अति प्रबल,
लुटेरों का संगठित समूह ॥

एक दिन नैमिष हो साकार,
बहाने लगा, दृगों से नीर ।
सोचता था परित्राता कौन ?
आदि-गंगा गोमा के तीर ॥

त्याग, तप, संयम, जप या होम,
कथा, सत्संग, साधना, नेम ।
हमारे सब आभूषण लुटे,
न अब दिखलाता हमको क्षेम ॥

सोचकर मन में हो अति खिन्न,
लगा करने अति करुण-विलाप ।
प्रभो ! अब मेरी विपदा हरो,
करो अब दूर सकल संताप ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसी क्षण सघन निकुंजों मध्य,
श्रवण-गत हुई सुरीली तान।
चकित हो नैमिष लखने लगा,
आ गये क्या दुखहर भगवान॥

दृगों के सम्मुख महा प्रकाश,
छा गया, मन की हलचल मौन।
प्रकाशित तप से सारी देह,
आ रहा है यह सम्मुख कौन!!

सहस्रों रवि की सी द्युति लिये,
शीस पर पिंगल जटा महान।
हाथ में लेकर वीणा मंजु,
आ गये श्री नारद भगवान॥

देखकर मुनिवर को सस्नेह,
पदों पर नैमिष पड़ा समोद।
त्राहि की ध्वनि सुन करके कहा,
देवऋषि ने उससे सविनोद॥

"वत्स! यह कलियुग की है कृपा,
काल का क्रम अति ही दुर्दान्त।
दुःख सुख पतन और उत्थान,
इन्हीं द्वन्द्वों से जगती क्रान्त"॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"प्रभो ! मैंने पुराण में सुना,
यहाँ पर कलि का नहीं प्रवेश ।
हमारी विपदा को अब हरो,
दूर कर, सारे मानस-क्लेश ।।"

कहा नारद ने—"नैमिष वत्स !
हरूँगा तेरे कष्ट महान ।
भक्त जन मानस के दुख-त्रास,
न सह पाते हैं श्री भगवान ।।

उन्हीं की मुझे प्रेरणा मिली,
हरूँगा मैं दुरितों का भार ।
साथ ले अपने सिद्ध अनेक,
धरा पर होगा मम अवतार ।।

बनाऊँगा वह आश्रम दिव्य,
गुफाओं, कुंजों से भरपूर ।
कि जिसका दर्शन करके शीघ्र,
सकल संसृति-दुख होंगे दूर ।।

सभी प्रान्तों, तीर्थों में मंजु,
बनाकर ऋषि आश्रम अभिराम ।
खोल कर धार्मिक-विद्यापीठ,
हरूँगा, कलि-कलमष दुख धाम ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रेष्ठतम तीर्थ विश्व में कौन ?
जहाँ पर मन विशुद्ध हो जाय।
विकारों की जड़ जगदाशक्ति,
जहाँ का दर्शन कर खो जाय ।।

किन्तु अब तीर्थों-तीर्थों मध्य,
कहाँ हैं, वे सुविवेकी संत।
कि जिनके सदुपदेश से भगें,
काम क्रोधादिक दोष अनंत ।।

सुनो नैमिष ! तेरे उर बैठ,
प्रकट कर दूंगा संत अपार।
वही तीर्थों-तीर्थों में घूम,
करेंगे जगती का उद्धार ।।"

दिव्य देवऋषि की वाणी से,
सकल दुःख अवसान हुआ।
वह प्रकाश का पुंज, निकुंजों,
में फिर अन्तर्ध्यान हुआ ।।

———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

द्वितीय सर्ग

पूर्व कल्प में श्री नारद जी,
साधारण शिशु-वेश लिये ।
सांसारिक अनेक जीवों सम,
भ्रमण शील, भव क्लेश लिये ॥

उनकी माता थी अभागिनी,
दरिद्रता की प्रतिमा सी ।
सम्मार्जन आदिक कृत्यों के—
हेतु विप्र की थी दासी

जिस द्विज के अधीन सेवा में,
रहती थी नारद-माता ।
उसके यहाँ शुद्ध संतों का,
एक बार दल आ जाता ॥

द्विज अनुनय से उन ऋषियों का,
होता है चातुर्मासा ।
दूर-दूर से व्यक्ति आ गये,
ले-ले कर निज जिज्ञासा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जंगल में मंगल होता था,
कभी ज्ञान-चर्चा चलती ।
कभी शंख, घंटा-ध्वनि होती,
माधव की अर्चा चलती ॥

द्वैत और अद्वैत—निरूपण—
पर, छिड़ता शास्त्रार्थ कभी ।
वेद तथा वेदान्त सूत्र का,
होता था भावार्थ कभी ॥

सायंकाल कई घंटों तक,
चलती थी अभिराम-कथा ।
जो जन-मन को कर्षित करले,
ऐसी थी घनश्याम-कथा ॥

इन संतों की सेवा करती,
नारद-माता बड़ भागिनि ।
जूठन इन संतों की, सुत को,
देती थी मुनि अनुरागिनि ॥

संतोच्छिष्ट-भोज्य खाने से,
सुत की बुद्धि सुधर जाती ।
कृष्ण-कथा में मन लगता है,
सत्संगति में रुचि आती ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नित्य भाव से एकासन पर,
कथा-श्रवण करने वाला ।
पुत्र बन गया था दासी का,
मुनि जन-मन हरने वाला ॥

जब सत्संग समाप्त हो गया,
निकल गया चातुर्मासा ।
रोता तब तार स्वर से वह,
दासी-सुत तज कर आसा ॥

तभी कथा वाचक मुनिवर ने,
कृष्ण-ध्यान विधि बतलाई ।
बालक को सन्तुष्ट कर दिया,
उसमें ज्ञान-प्रभा आई ॥

मुनि-गण सबको चिर विषाद में,
छोड़ विपिन से जब जाते ।
तब वियोग से व्यथित विप्रवर,
उर-अन्तर में अकुलाते ॥

दासी-सुत मन में प्रसन्न था,
वह निज ध्यान लगाता था ।
अपने उर-प्रदेश में संस्थित,
कृष्ण-चन्द्र को पाता था ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कभी ध्यान में बैठ गया तो,
घंटों तक समाधि लगती ।
माता कर-स्पर्श जब करती,
बाह्य-वृत्तियाँ तब जगती ॥

भगवद्‌भजन-भाव में बाधक,
माता पर झुँझलाता था ।
'माँ ! भगवान-ध्यान करने दे',
बहुत उसे समझाता था ॥

पर वह कहती थी तू बेटा !
बन जायेगा सन्यासी ।
मैं रो रोकर मर जाऊँगी,
तेरी स्नेह सुधा प्यासी ॥

एक दिवस गो-दोहन करने,
जाती सुत का ध्यान लिये ।
काले विषधर ने उसको तब,
काटा, तत्क्षण प्रान लिये ॥

उसकी वृत्ति पुत्र में लय थी,
पुत्र, श्याम में लीन अहा !
तब गो-लोक बुलाकर उसको,
माधव ने इस भाँति कहा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तेरा सुत मम ध्यान कर रहा,
वह अति उन्नति पायेगा ।
अग्रिम-कल्प-मध्य देवों का,
ऋषि नारद कहलायेगा ॥

लोकानुग्रह की काङ्क्षा से,
पतितों को भी तारेगा ।
अजामील से घोर पापियों—
को अति शीघ्र उबारेगा ॥

ध्रुव, प्रह्लाद आदि बालक भी,
निज प्रभु को पा जायेंगे ।
अविवेकी सद् ज्ञान प्राप्ति से,
सत्-पथ पर आ जायेंगे ॥

चौबिस अवतारों की गणना—
में भी वह आ जायेगा ।
भक्ति-भावना के प्रचार में,
सारा समय लगायेगा ॥

तभी बोलती दिव्य-रूपिणी,
माधव से तत्क्षण दासी ।
कब तक बनी रहूँगी उसके,
प्रेम-सुधा की मैं प्यासी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कब अपनी करुणार्द्र-क्रोड में,
लेकर उसे खिलाऊँगी ।
मुझे बतायें कब निज-सुत का,
मनहर दर्शन पाऊँगी ॥

यही बता दो नाथ ! मुझे अब,
मेरा प्यारा लाल कहाँ ?
मुझ माता का आश्रय दाता,
मानस मंजु मराल कहाँ ??

उसका करुण-विलाप सुना तो,
करुणानिधि ने समझाया ।
विमल-विवेक बुद्धि में भर कर,
हर दी सब ममता माया ॥

मेघ-मन्दुरा मृदु वाणी से,
फिर दामोदर बोल उठे ।
नारद-माता के मानस में,
मधुर-सुधा-रस घोल उठे ॥

"तुम गोलोक-वासिनी बन कर,
यहाँ सुखद-विश्राम करो ।
रसमय रास मध्य रम जाओ,
निज जीवन अभिराम करो ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वैवस्वत के मन्वन्तर में,
चतुर्युगी जब सत्ताइस ।
काल क्रम से बीत जायँगी,
फिर आयेगी अट्ठाइस ॥

अट्ठाइसवीं चतुर्युगी के,
कलि का प्रथम-चरण होगा ।
तब भारत की बसुंधरा में,
तेरा दु:ख-हरण होगा ॥

फरुखाबाद प्रान्त में सुन्दर,
धर्म-धान्य, धन धेनु लसी ।
सुयसी वासव के पुर सी,
वह नगरी जिसका नाम झसी ॥

उसमें छिपी वासना तेरी,
तुझे खींच ले जायेगी ।
विप्र-अयोध्या के घर गेंदन—
देवी नाम कहायेगी ॥

गंगातट पर मियांगंज में,
तेरा शुभ परिणय होगा ।
बुद्धसेन पाण्डेय तुम्हारा,
प्रिय पति परम अभय होगा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कलि के जब दुर्दान्त करों से,
पीड़ित नैमिष-वन होगा ।
धेनुमती के सुन्दर तट पर,
जब उसका क्रन्दन होगा ।।

तब दयार्द्र-देवर्षि दिव्य द्युति,
उस वन में प्रकटायेंगे ।
और करेंगे प्रण नैमिष ! हम,
तेरे कष्ट नशायेंगे ।।

प्रवल-प्रतिज्ञा से निवद्ध वह,
गर्भ-मध्य तब आयेंगे ।
तेरा वर वात्सल्य-प्रेम पा,
तुझ को सुखी बनायेंगे ।।

तुम ममता से क्रुष्ट करोगी,
पर वह बन्धन तोड़ेगा ।
प्रभु के पावन पदाम्बुजों में,
अपने मन को जोड़ेगा ।।"

पुर्नमिलन की मृदु-आशा से,
सुत-वियोग दुख दूर हुआ ।
श्री घनश्याम शब्द से हर्षित,
मानस मंजु मयूर हुआ ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गंगातट पर मियागंज में,
पांडे कुल विख्यात हुआ ।
उसी वंश-सर में प्रकटित था,
एक मंजु जलजात हुआ ॥

बुद्धसेन था नाम, बुद्धि थी,
विमल सतोगुण से स्नाता ।
सब सद्‌गुण विराजते उनमें,
धर्म-तत्व के थे ज्ञाता ॥

उनकी पत्नी गेंदन देवी,
देवी की उपासिका थी ।
गंगा-स्नान तथा जप करती,
सुन्दर सफल साधिका थी ।

सुन्दर-सात्विक पुत्र-प्राप्ति हित,
देवी-पूजा करती थी ।
उसके मानस में देवी की,
प्रतिमा दिव्य विहरती थी ॥

माता हुई प्रसन्न एक दिन,
स्वप्न-मध्य आकर बोली ।
'निर्मल पुत्र मिलेगा, सुनकर,
प्रमुदित हो आँखें खोली ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुसमय पर ऋतुमती हुई तब,
सात्विक गर्भाधान हुआ ।
माता के प्रेमाकर्षण से,
गर्भ-स्थित भगवान हुआ ॥

कुल-दीपक मम योग्य-पुत्र हो,
यही कामना बनी रही ।
दुर्गा जी की समाराधना—
में, वह देवी सनी रही ॥

म्लेच्छों से संस्थापित पुर में,
कैसे यह बालक आता ।
अस्तु वहाँ पर प्लेग चल पड़ा,
अब जन-मानस अकुलाता ॥

एक मरा, दो चार मरे, अब,
मानव अनगिन मरते थे ।
मियागंज की शुभ नगरी में,
हा ! यम दूत बिहरते थे ॥

मनुज-शून्य बहु-गेह हो गये,
शव समुदाय, अपार लगा ।
धन वैभव को छोड़-छोड़ कर,
व्यक्ति-व्यक्ति भयभीत भगा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बुद्धसेन जी निज पत्नी को,
लेकर कान्यकुब्ज आये ।
विपद्काल में कौन पूछता,
दम्पति अहा ! कहाँ जाये ॥

धन्य लालमणि मिश्र ! आपका,
ऋण क्या विश्व चुका सकता ।
क्या परोपकारी तक अपना,
धन्यवाद पहुँचा सकता ॥

अति-उदारता से दोनों को,
निज गृह में था ठहराया ।
बोले—'घर की ममता छोड़ो,
सभी परम-प्रभु की माया ॥

तत्व-दृष्टि से गेह आदि सब,
प्रभु के, नहीं हमारे हैं ।
अग-जग के जड़-चेतन सारे,
उसके एक सहारे हैं ॥

अपनी ही सब वस्तु समझ कर,
भ्राता ! तुम उपयोग करो ।'
पत्नी बोली उदारता से—,
'घर का सफल-प्रयोग करो' ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गेंदन देवी के नेत्रों से,
तत्क्षण अश्रु छलक आये ।
मंजु-कपोलों पर आहत हो,
कुछ दृग-बिन्दु ढलक आये ॥

"बहिन ! आपकी उदारता का,
ऋण किस भाँति चुकाऊँगी ?
मैं किस योग्य बनूंगी, तेरे—
किस प्रयोग में आऊँगी ??

वंश बेलि के वर्धनार्थ हा,
देवी जी को घ्याया था ।
सब प्रपंच को छोड़, उन्हीं में,
अपना चित्त लगाया था ॥

किन्तु हाय ! दुर्दैव आज भी,
तू मुझ को है दुख देता ।
घर का स्थान सुरक्षित छीना,
जिसमें पुत्र जन्म लेता ॥"

इतना शब्द निकल पाया था,
तभी कंठ-अवरोध हुआ ।
मिश्राइन को इस देवी की,
मर्म-व्यथा का बोध हुआ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बोली—"बहिन ! समय आने दो,
मैं सब कार्य बनाऊँगी ।
गो-माता को तृण-कुटीर के,
मैं नीचे पहुँचाऊँगी ॥

धेनु-खुरों से खुदा हुआ, यह,
पावन दिव्य बरोठा है ।
इसको ही मैं लीप रही हूँ,
कितना सुन्दर कोठा है ॥"

गेंदन देवी के आनन पर,
अद्‌भुत तेज विराज रहा ।
जिसके उर भगवान आ गये,
कैसा उसका भाग्य अहा ॥

स्वयं लालमणि अति उत्सुक थे,
सब सम्भार जुटाते थे ।
वह कर्तव्य-निष्ठ थे, उर में,
फूले नहीं समाते थे ॥

सभी सिद्ध, मुनि देव पधारे,
मुनिवर का वन्दन करने ।
गर्भ-स्थित नारद जी का वे,
आये अभिनन्दन करने ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आओ, भक्ति-कष्ट के हारी,
दीन दुखी दलितों के पालक ।
आओ, इस कलियुग में बनकर,
फिर से धर्म-सूत्र संचालक ॥

———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तृतीय सर्ग

जब जब धरणी का वक्षस्थल,
पाप-भार से बोझिल होता ।
आतताइयों से अभिमर्दित,
जब जब मुनि-समाज है रोता ।।

जब वेदों, गौओं, विप्रों पर,
अत्याचार प्रबल हो जाते ।
तब प्रभु, नृप या सन्त रूप में,
निश्चित धरा-धाम पर आते ।।

इसी नियम से ऋषि नारद ने,
नैमिष को आश्वस्त किया था ।
थे अयोनि-सम्भव समर्थ पर,
मातृ-उदर से जन्म लिया था ।।

शरद् काल की शुभ समाप्ति पर,
जगती में हेमन्त पधारा ।
अगहन शुक्ल सप्तमी तिथि थी,
समय परम-पावन था प्यारा ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कान्यकुब्ज मकरन्द-नगर में,
नारद का अवतार हुआ था।
इनके सुखद-समागम से ही,
व्यपगत भू का भार हुआ था॥

गगनाङ्गण से निखिल-निर्जरों—
ने सुन्दर-प्रसून बरसाये।
गन्धर्वों ने कलित कंठ से,
सुन्दर स्वागत-गीत सुनाये॥

रम्भा तथा उर्वशी आदिक,
नाच रही थीं सुर-गणिकायें।
शंख, मृदंग तथा भेरी की,
ध्वनि से, थीं प्रतिध्वनित दिशायें॥

विप्र 'बुलाकीदास' पितामह,
प्रमुदित, प्रचुर दृव्य वटवाते।
बुद्धसेन जी वैदिक मंत्रों—
से सुजात संस्कार कराते॥

जो कुछ उनके हाथ आगया,
वही मंजु-उपहार बन गया।
सभी अयाच्य प्रजाजन बनते,
ऐसा पिता उदार बन गया॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नूतन सुभग शाटिका पहिने,
गल में मुक्ता की मालायें ।
स्वर्णाभूषण से भूषित हो,
गाती चलीं ग्राम-बालायें ॥

उनके शीसों में गुम्फित थे,
बेलादिक के सुमन मनोहर ।
मत्त-मराल चाल जब चलतीं,
गिरते थे वे टपक-टपक कर ॥

सबके कर में विविध वस्तुयें,
आईं सभी लालमणि द्वारे ।
मुदित मिश्र जी, बोल उठे तब,
"आज धन्य हैं भाग्य हमारे ॥"

कुछ ही समय वास कर सब ही,
मियाँगंज नगरी में आये ।
बहुत दिनों के बाद सभी ने,
निज-गृह के थे दर्शन पाये ॥

भक्त बुलाकीदास, पितामह—
ने शिव-मन्दिर बनवाया था ।
वैदिक विद्वानों के द्वारा,
उद्घाटन भी करवाया था ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वे वर्ष-द्वय के बालक को,
शिव-मन्दिर में ले जाते थे ।
बं-बं स्वयं बोलते थे, फिर,
बालक से भी बुलवाते थे ।।

नित्य पुजारी इन्हें प्रेम से,
देते थे प्रसाद, फिर माला ।
घण्टा-ध्वनि करके फिर कहते,
लो, अब तुम्हीं बजाओ लाला ।।

बाबा उसका हाथ पकड़कर,
घंटा की ध्वनि करवाते थे ।
जब वह घर में बं-बं कहता,
तब मंदिर में ले जाते थे ।।

मंदिर में प्रतिदिवस पितामह—
को इंगित कर ले जाता था ।
शिव पर स्वयं सुमन अर्पण कर,
सब में कौतुक प्रकटाता था ।।

पांच वर्ष का हो जाने पर,
गलियों में बं-बं करता है ।
ईंटों अथवा प्रस्तर-खंडों—
को वह खड़ा-खड़ा धरता है ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फिर बाबा की भाँति उन्हें वह,
जल के द्वारा स्नान कराता ।
उनके शिर पर फूल चढ़ाने,
तरु से स्वयम् चयन कर लाता ।।

करतल से आरती नाट्य कर,
शिशुओं से कहता प्रसाद लो ।
वितरण करके धूलि कणों का,
कहता खाओ, और स्वाद लो ।।

पाँच वर्ष का हो जाने पर,
गृह से रिक्ता दीप-शलाका ।
लाकर भग्न किया इस विधि से,
रूप बन गया लघु साँचा का ।।

इस लघु साँचे को गृहीत कर,
लघु सर के समीप जाता है ।
सुन्दर आर्द्र-मृत्तिका भर-भर,
ईंटें मंजु बना आता है ।।

इसी भाँति शतशः ईंटों का,
बन जाता है यह निर्माता ।
फिर संयम से प्रबल धूप में,
परिवर्तित कर उन्हें सुखाता ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह ईंटें जब शुष्क हो गईं,
तब गृह के सम्मुख धरता है।
कुछ लड़के गारा देते हैं,
यह उनसे रचना करता है॥

सुन्दर सा मठ इन छोटी सी,
ईंटों का जब बन जाता है।
तब उसमें लिङ्गाकृति छोटे,
शिव शंकर को पधराता है॥

अब केवल घंटी-अभाव था,
दौड़ पड़ा मन्ना हलवाई।
बकरी कंठ बद्ध घंटी को,
खोल कह रहा ले यह भाई॥

दो फुट के इस शुभ मंदिर में,
ऊपर छोटा छेद बनाया।
फिर रस्सी से इस घंटी को,
शंकर के शिर पर लटकाया॥

छोटे गड़ुवे में जल भरकर,
फिर यह बालक आ जाता है।
आम्र-पत्र टोंटी में बांधा,
शिव पर वारि चढ़ा जाता है॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपनी स्वल्प बुद्धि से संयत,
हो प्रति दिन पूजा करता है ।
घंटी भी बजती मंदिर में,
सब में यह कौतुक भरता है ॥

सायंकाल सभी लघु बालक,
शिव के निकट पहुँच जाते हैं ।
सब अपने-अपने कर द्वारा,
कुछ प्रसाद घर से लाते हैं ॥

फिर प्रसाद बटता है सबको,
ग्राम्य वासियों को सुख देता ।
लघु-वयस्क है किन्तु बन गया,
बाल मंडली का यह नेता ॥

एक दिवस कुछ माताओं ने,
कहा—"कि तूने मठ बनवाया ।
किन्तु निमन्त्रण देकर तूने,
कब प्रसाद सबको बटवाया ॥"

अबतो बालक के आग्रह से,
कथा कार्यक्रम बन जाता है ।
इस लघु मंदिर के दर्शन को,
ग्राम समस्त चला आता है ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घंटा, शंख बज उठे सहसा,
बहु प्रसाद वितरण होता है ।
इस बालक के शुभ चरितों से,
सब का चित्त हरण होता है ॥

संतों का दर्शन करते थे,
पर निज मन में सकुचाते थे ।
बारम्बार बुलाने पर फिर,
उनके निकट पहुँच जाते थे ॥

बड़े ध्यान से संतजनों की,
मंजु-उक्तियों को सुनते थे ।
थे समर्थ, सर्वज्ञ, देवऋषि,
फिर भी मानस में गुनते थे ॥

सात वर्ष की वय में, विद्या—
पढ़ने विद्यालय में जाते ।
कभी-कभी छात्रों के सम्मुख,
नये विचित्र प्रश्न हैं लाते ॥

बोलो—"भाई ! किस शिल्पी ने,
यह सुन्दर संसार बनाया ।
किसने नभ मंडल में सुन्दर,
रवि, शशि, तारों को चमकाया ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कौन बीज में अंकुर लाता,
कौन पुनः वर्धन करता है ।
कौन वारिदों की माला में,
वारि विन्दुओं को भरता है ॥

यदि ईश्वर ही सर्व-सृष्टि का,
स्रष्टा तथा प्रलयकारी है ।
तो वह छिपकर क्यों बैठा है,
भय करता क्यों भयहारी है ॥

कौन स्थान में वह रहता है ?
क्या बादल से भी सुदूर है ?"
बालक संभ्रम में पड़ जाते,
यह प्रश्नों में महा-शूर है ॥

नगरी-मध्य रामलीला जब,
हुई उसे अवलोकन करते ।
तन्मय होकर प्रति अभिनय के,
मंजु भाव उर में हैं भरते ॥

फिर निज बाल मंडली लेकर,
स्वयं रामलीला करते हैं ।
पन्द्रह वर्ष वयस्क हुये तो,
बड़ी सभा में पग धरते हैं ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यवनों का संगठन बन गया,
लीला यहाँ न हो पायेगी ।
मियाँगंज यवनों का पुर है,
यहाँ हरित ध्वज लहरायेगी ॥

श्री नारद जी ने आमंत्रित—
करके सारा ग्राम बुलाया ।
निज प्रभावशाली वाणी से,
सभी हिन्दुओं को समझाया ॥

यदि लीला का अंत हुआ तो,
समझो अब हिन्दुत्व-अंत है ।
जिसको पतझड़ समझ रहे हो,
वह तो सौरभमय बसंत है ॥

श्रद्धा न्यून करो मत, सब ही,
हृदय खोलकर सम्मुख धर दो ।
यथाशक्ति सब, दृव्य दान कर,
लीला के सुकोश को भर दो ॥

प्रचुर दृव्य का संचय होता,
प्रबल-प्रचार किया जाता है ।
सूचनार्थ तहसील जिले में,
पत्रक भेज दिया जाता है ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुंवर मुलायम सिंह आगये,
वर्तमान तहसीलदार थे।
डिप्टी सदय चक्रवर्ती जी,
जो धार्मिक थे, अति उदार थे ॥

उनका जब आगमन हुआ तो,
कुछ सहस्र जनता आई थी।
जो पहिले से डटी हुई थीं,
यवन मण्डली अकुलाई थी ॥

नारद जी ने कहा—"सज्जनो !
इधर-उधर सब मत टकराओ।
मैं मानस की कथा सुनाता,
एक स्थान संस्थित हो जाओ ॥"

उच्चासन पर श्री नारद छवि,
शुक प्रतिमा सी दिखलाती थी।
जनता मंत्र-मुग्ध हो सुनती,
शांति सुधा-सरि लहराती थी ॥

कुंवर मुलायम सिंह कब आये ?
कब डिप्टी साहब आये हैं।
कथा श्रवण में सब विभोर थे,
कोई नहीं जान पाये हैं ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वयं प्रभावित होकर दोनों—
साहब यह कहने लगते हैं ।
नारद जी का शुभ-प्रभाव लख,
श्रद्धा-प्रेम मध्य पगते हैं ॥

बोले—"ये सब सत्संगी हैं,
यवन विघ्न करने आये हैं ।
यह होली की तीव्र-ज्वाल में,
शलभ-रूप मरने आये हैं ॥

इस लीला की ललित-प्रगति को,
कोई नहीं रोक पायेगा ।
पुलिस प्रबन्ध करेगी इसका,
जो रोकेगा, पछतायेगा ॥"

धूमधाम से लीला होती,
यवन विघ्न हित जो आये थे ।
भाग गये, पर ग्राम निवासी,
मियाँ बहुत ही घबड़ाये थे ॥

नारद जी ने कहा—"आप सब,
निर्भय रहो, न संशय लाओ ।
यहीं हुये हो, बड़े हुये हो,
पय में जल समान मिल जाओ ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ग्राम-वासियों पर बालक की,
प्रतिभा का प्रभाव जमता है ।
श्रद्धा से प्रति-ग्राम निवासी,
नारद के सम्मुख नमता है ॥

सब कहते थे यह बालक है,
कोई पूर्व-सिद्ध सन्यासी ।
कुछ कहते इसके आने से,
ग्राम बन गया मेरा कासी ॥

कुछ गंगा तट तीर निवासी,
बोले संत मनोमल हारी ।
"यह संस्कारी बालक मुझको,
लगता है कोई अवतारी ॥"

मानव के स्वरूप में आकर,
तुमने हे मुनि ! लीला-धाम ।
चित्ताकर्षक लीलायें कीं,
गुरुवर तुमको कोटि प्रणाम ॥

———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चतुर्थ सर्ग

निशा-नायिका के आभूषण,
एक-एक कर हुये विलीन ।
रजनीपति यह दृश्य देखकर,
हो जाते हैं दीन मलीन ॥

दिशि-प्राची की क्षितिज पटी में,
अरुणाभा का प्रादुर्भाव ।
फिर दिनमणि दिवसेश दिव्य द्युति-
का होता है प्रकट-प्रभाव ॥

मलय-समीरण डोल रहा था,
कलरव करते, विपुल विहंग ।
रवि-द्युति दीपित लोल लहरियों—
से, हँसती थी गंग-तरंग ॥

विटपावलियाँ भी झुक-झुक कर,
करतीं लहरों का रस पान ।
कोई स्नान कर रहा साधक,
कोई करता प्रभु का ध्यान ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रावण की गंगा थी जिसका,
नहीं दिखाई पड़ता छोर ।
बड़ी-बड़ी उत्ताल तरंगों—
की थी मोहक मंजु हिलोर ।।

अन्तिम सोमवार है जिससे,
बना सघन मेला का रूप ।
जनता से सुदूर गंगा-तट,
संस्थित एक किशोर अनूप ।।

कभी देखता सुर सरिता को,
होकर के शुभ भाव विभोर ।
बनती मिटती मंजु तरंगें,
इस क्रम का है ओर न छोर ।।

इसी भाँति मानव जीवन में,
होता पतन और उत्थान ।
अथवा मन के विविध विचारों,
का उद्भव अथवा अवसान ।।

यह जल हिमगिरि पर हिम ही था,
होता था जड़ता का भास ।
कभी तरल हो चेतन बनता,
एक तत्व का विविध विलास ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इसी भाँति यह ब्रह्म-रूप भी,
रचता जड़-चेतन का रूप ।
तत्व-दृष्टि से ही लखते हैं,
कोई इसको संत अनूप ॥

फिर विचार आया सुरसरि का,
अविरल चलना ही है ध्येय ।
प्रेय मार्ग को त्याग चल पड़ा,
साधक ज्यों पाने निज श्रेय ॥

यदि मानव भी निज जीवन में,
बना रहे प्रतिक्षण गतिमान ।
सदुपयोग सुसमय का करके,
हो सकता है व्यक्ति महान ॥

जब विचार में मग्न खड़े थे,
नारद सुर-सरिता के पास ।
उसी समय कुछ संत जनों के—
साथ देखते गंगादास ॥

पूछा—"ऐ बालक ! गंगा-तट,
क्या विचारता था हो मग्न ?
तेरी बुद्धि बताओ किस में,
लय होकर इतनी संलग्न ??"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस बालक के ज्ञात हुये जब,
उनको इतने दिव्य विचार ।
इतनी छोटी सी वय में ही,
हुआ ज्ञान का शुभ संचार ।।

तब सत्संग-स्थली में लाये,
चला ज्ञानमय कथा-प्रसंग ।
बालक नारद अति प्रसन्न थे,
पुलकित होता उनका अंग ।।

वहीं संतजन की गोष्ठी में,
चर्चा चली सहित अनुराग ।
एक संत जो परम तपस्वी,
बसते ग्राम सराँय-प्रयाग ।।

नाम एकरसानंद जिस तरह,
तथा एक रस में हैं लीन ।
शब्दों से पीयूष बरसता,
अतिशय प्रिय उनको हैं दीन ।।

नारद जी के अन्तराल में,
उठी उसी क्षण मंजु तरंग ।
उनको निज गुरुदेव बनाकर,
प्राप्त करूँ उनका सत्संग ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ग्राम लौट कर व्यक्ति-व्यक्ति से,
कहा चलो होगा दर्शन ।
ऐसे संत सुना है—होता,
प्रवचन से उर-परिवर्तन ॥

कोई हुआ न गमनोत्सुक पर,
हलवाई श्री रामप्रसाद ।
'मैं जानता कुटी हूँ उनकी',
बोला भर उर में आह्लाद ॥

'मैं भी जाने को उत्सुक था,
चलो मिल गया सुन्दर संग ।'
तत्क्षण दोनों ही चल पड़ते,
उठती थी आनंद तरंग ॥

चले जा रहे थे निज कर में,
लेकर पूजा का सम्भार ।
रामप्रसाद स्वयं के निर्मित,
लाया गट्टों का उपहार ॥

गुरुसहाय-नगरी से आगे,
चले जहाँ थे कुछ ही दूर ।
तैसे ही कुटिया वह चमकी,
नाच उठा था चित्त मयूर ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कितनी स्वच्छ मनो-मोहक है,
लता, गुल्म, तरु युक्त कुटीर ।
सुमनों के सौरभ को लेकर,
चलती शीतल मंजु समीर ॥

गौतम, कपिल, कणाद आदि के,
शास्त्रों में वर्णित आश्रम ।
उनकी स्मृति साकार हो उठी,
दूर हो गया पथ का श्रम ।

ज्ञात हुआ स्वामी जी बाहर,
किसी स्थान पर हैं एकान्त ।
निश्चित पाँच बजे आयेंगे,
बैठ गये तव दोनों शान्त ॥

वहीं निम्ब तरु की छाया में,
शीतल जल-पूरित था कूप ।
जिसका केवल जल पीते ही,
मिलती उर को शांति अनूप ॥

मिलनाशा अति-तीव्र हो गई,
तभी आ गये थे कुछ भक्त ।
वह भी गुरुवर के अभाव में,
बैठ गये कुछ देर अशक्त ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक कह उठा—"धन्य-धन्य है,
इनमें कितना है अनुराग ।
धन, वैभव शाली जीवन को,
त्याग दिया, है विपुल विराग ।।

आकर्षित होते सकाम हैं,
जब उनके बन जाते काम ।
धनिक त्याग से, दीन प्रेम से,
संत श्रवण कर उक्ति ललाम ।

दक्षिण हस्त-तर्जनी द्वारा,
निर्देशन कर बारम्बार ।
एक कह उठा—'वह स्वामी जी',
भक्त जनों में आया ज्वार ।।

कहाँ ? कहाँ ? कर, चौंक उठे सब,
तब वह बोला भक्त सुजान ।
"वह पीपल के पास कूप है,
दिखते वहीं संत भगवान ।।"

नारद ने देखा—तो सोचा,
बाल अरुण रवि ही यह लाल ।
कलि-पापों की लगी चिता क्या,
उसकी निकल पड़ी यह ज्वाल ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मोह-तमा के नाश हेतु या,
यह है दीप शिखा छविमान ।
या विवेक की दिव्य ज्योति यह,
अरुण दिव्य-मणि का या भान ।।

घनीभूत अनुराग सुसंस्थित,
उसका ही स्वरूप यह लाल ।
या विभु के गल से छूटी सी,
अरुण पंकजों की यह माल ।।

वह आते सब उधर चल पड़े,
दर्शन कर सब दण्डाकार ।
श्री चरणों में लिपट गये थे,
दूर हुआ सब जीवन-भार ।।

गुरुवर ने नारद को देखा,
है सामान्य-व्यक्ति का वेश ।
किन्तु ज्ञात होता, यह आया,
जग के हरने, भौतिक क्लेश ।।

प्रश्न किये कुछ, मृदु उत्तर पा,
अधरों पर दौड़ी मुसकान ।
मानों जिसको खोज रहे थे,
मिला आज वह व्यक्ति महान ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुटिया पर शुभ मंच सुशोभित,
उस पर ही होते आसीन ।
फिर पीयूष प्रवर्षक वाणी,
श्रुति-पात्रों में पड़ी नवीन ॥

"प्यारे ! मानव के जीवन का,
ब्रह्म-प्राप्ति ही है बस ध्येय ।
भोगों में पड़ भूल गया यह,
जीव विचारा अपना श्रेय ॥

अथवा इस प्रकार जानो यह,
रोग रूप हैं सारे भोग ।
शाश्वत-शान्ति तभी मिलती जब,
आत्म-योग का हो संयोग ॥

सत्संगति करने से आता,
मानव के उर में सुविवेक ।
आत्म-ज्ञान मिलते ही होता,
भासित तत्व सभी में एक ॥

निज स्वरूप को ज्ञात करो तुम,
अजर, अमर, हो आत्मस्वरूप ।
अविनाशी हो, देह विनाशी,
भर लो उर में ज्ञान अनूप ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम सब साधक बड़-भागी हो,
सत्संगति का लेकर ध्येय ।
सन्त कुटी पर हुये उपस्थित,
प्राप्त करो तुम अपना श्रेय ॥

चिर प्रमाद निद्रा में सोया,
अपना विघटित हिन्दु-समाज ।
संस्कारों की परंपरा का,
विकृत-रूप दिखता है आज ॥

स्वार्थ-बुद्धि से नष्ट हो रहा,
सामाजिक सात्विक आचार ।
काम-क्रोध, विद्वेष, लोभ ही,
व्यापित करते विपुल विकार ॥

प्यारे ! जिसके अन्तराल में,
सभी प्राणियों का हित-भाव ।
सच्चा संत वही है, जिसका,
निज समाज रचना में चाव ॥

इससे जाकर ग्राम-ग्राम में,
निर्मित करके भक्त-समाज ।
सद्विवेक के शुभ प्रचार का,
अपना लक्ष्य बना लो आज ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब सत्संग प्राप्त कर जाता,
ग्राम-वासियों का सुसमाज ।
तब नारद की ओर देखकर,
बोल बठे थे, श्री महराज ।।

"किसने तुमको बतलाया तब,
तुम आये हो मेरे पास ?
क्या तुमको है मिला ? बताओ,
क्या लेकर आये थे आस ??"

"गुरुवर ! गंगा-तट ऋषियों से,
सुन अतिशय भवदीय प्रभाव ।
दर्शन कर सत्संग करूँगा,
उपजा मम मानस में चाव ।।

मुझको यह प्रतीत होता है,
विस्मृति से धुँधला था ध्येय ।
प्रेय-मार्ग में अटक रहा था,
आज मिल गया अपना श्रेय ।।

मैं अपने अब मियाँगंज में,
पूर्ण करूँगा धर्म-प्रचार ।
तथा निकट के भी ग्रामों में,
कर दूंगा फिर सफल प्रसार ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब भूले हैं, भोग-मार्ग में,
भटक रहे हैं पथ पर ध्वान्त ।
सब अशान्त सा हृदय लिये हैं,
सभी दिखाते भाराक्रान्त ।।"

गुरुवर बोले—"सिद्ध संत बन,
हरण करेगा भू का भार ।
धर्म प्रचार हेतु ही तेरा,
हुआ धरा पर यह अवतार ।।

यूं तो यहां रात्रि आने पर,
स्थान न पाता कोई भक्त ।
तुझे भगाने में पर मेरा,
हृदय हुआ है आज अशक्त ।।

तुम इच्छा हो तब आ जाओ,
तव हित उद्घाटित उर-द्वार ।
वत्स ! तुम्हें अर्पित करता मैं,
वस्तुतस्तु अपना सब भार ।।

स्नेह-पूर्ण तुम प्रिय-प्रदीप हो,
लगा रहा तुममें लव संत ।
तुम प्रज्वलित करोगे इससे,
प्रियवर ! जीवन-दीप अनंत ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नारद जी के नेत्र सजल थे,
पा करके गुरुदेव महान ।
इतने वह प्रसन्न होते ज्यों,
मिले भक्त को प्रिय भगवान ॥

रात्रि मध्य संकल्प उठ गया,
निश्चित होगा धर्म-प्रचार ।
निश्चित होगा त्रस्त जगत का,
मानस रोगों से उद्धार ॥

सकल सिद्धियों से समलङ्कृत,
सबके सद्गुरु नारद स्वामी !
लीला-क्षेत्र मध्य बन जाते,
निज गुरु पद पङ्कज अनुगामी ॥

———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पञ्चम सर्ग

ग्रीष्म काल की दोपहरी थी,
चण्ड-सूर्य नभ में प्रतप्त था ।
सभी धरा का जल शोषित कर,
अब भी मानो वह अतृप्त था ॥

सांय-सांय कर लू की लपटें,
मानव को झुलसाने वाली ।
भट्टी की सी आग उगलती,
सड़क पड़ी थी खाली-खाली ॥

एक साथ शतशः सहस्रशः,
नागिन सी फुफकार रहीं थीं ।
तप्त सूर्य की किरणें शर सी,
कर अति प्रबल प्रहार रहीं थीं ॥

जल-अभाव में कितने पक्षी,
चोंच खोल छटपटा रहे थे ।
प्रचुर पिपासाकुल पशुओं के—
वृन्द, मृत्यु को बुला रहे थे ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

खेत कट गये, घास जल गई,
महा-प्रलय सा दिखलाता था ।
पथिक न कोई दिखता पथ पर ।
ग्रामों-मध्य ठहर जाता था ॥

सब अपने अन्तः-प्रकोष्ठ में,
व्यजन वायु से मन बहलाते ।
स्वेद-विन्दु-कण पोंछ-पोंछ कर,
किसी भाँति दोपहर बिताते ॥

शीत-उष्ण, आगम-वियोग में,
विषयी सुख-दुख अपनाते हैं ।
योगी लक्ष्य-प्राप्ति में तन्मय—,
हो समदर्शी बन जाते हैं ॥

योगिराज-देवर्षि, दिव्यद्युति,
विगत-द्वन्द्व हो ध्यान लगाते ।
फिर प्रचार-संकल्प प्रवल कर,
ज्यों ही स्थूल-जगत में आते ॥

त्योंही सम्मुख प्रभा-पुंज सी,
रवि की प्रथम रश्मि-माला सी ।
अथवा धूम राशि से निकली,
वैश्वानर की शुभ-ज्वाला सी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घनमाला में नव विद्युत सी,
विद्युत् में प्रदीप्ति सी दीपित।
सद् विवेकिनी प्रज्ञा, सम्मुख,
लज्जा से कर नेत्र निमीलित॥

संस्थित हुई; देवऋषि बोले—
"विश्व आर्त है, तुम विलीन क्यों ?
तेरे रहते उर-प्रदेश में,
मानव इतना दीन-हीन क्यों ??"

वह बोली—"रज, तम प्रवाह में,
बोहित जग, मैं कूल खड़ी सी।
मानस में मेरी स्थिति क्या है ?
मणि, कण्टक-वन बीच पड़ी सी॥

कलि दुर्दान्त करों से कुचली,
मैंने निज निस्तार न पाया।
पक्व-मृत्तिका-घट-आरोपित—
पिप्पल सी, विस्तार न पाया॥

भव सागर में भ्रांति-भँवर से,
भ्राम्यमाण, पतवार न पाया।
जो मुझमें नव-जीवन भर दे,
ऐसा प्राणाधार न पाया॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आप मुझे यदि अपनायें तो,
मणि-कंचन-संयोग बनेगा ।
मानस रोगाक्रान्त जगत ही,
अपना सफल प्रयोग बनेगा ।।

आप करें संकल्प-मात्र, बस,
मैं मानव की बुद्धि बदल दूँ ।
आश्रय श्री चरणों का पाऊँ,
तो कलि के सब कलमष मल दूं ।।

पात्र-चयन है कार्य आपका,
मैं उसमें सन्मति भर दूंगी ।
कुटिल-क्रूर मानव मन में भी,
प्रियवर ! सफल क्रान्ति कर दूंगी ।।"

स्वीकृति मिलते सद्विचार के,
सुमनों की लेकर जय-माला ।
श्री नारद के गले डाल कर,
हर्षित हुई, रुचिर वर बाला ।।

सप्त-भूमिका पदाक्रमण से,
प्रणय-सुखद परिणय बन जाता ।
इस भावात्मक मधुर-मिलन से,
प्रेम-ग्रन्थि में रस सन जाता ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनहद-वाद्य बज उठे सहसा,
सद्विवेकिनी बुद्धि प्रहर्षित ।
प्राणनाथ नारद द्युति द्वारा,
हुई जारही थी अति कर्षित ॥

आज्ञा वश वर्तिनी प्रेयसी,
प्रज्ञा उर-प्रकोष्ठ में आती ।
श्री नारद संकल्प प्राप्त कर,
लीला उनकी ललित बनाती ॥

रामप्रसाद आदि कुछ साधक,
ऋषिवर के सन्निकट सिधाये ।
तृषित चातकों ने जलधर के,
अति-प्रमुदित हो दर्शन पाये ॥

सात्विक-प्रज्ञा से प्रेरित हो,
उनका अन्तर विमल बना था ।
नारद मुख-रवि-द्युति के द्वारा,
उनका मानस कमल खिला था ॥

श्री देवर्षि मधुर-शब्दों से,
मृदु पीयूष-विन्दु झरते हैं ।
गुरुवर का प्रवचन पावनतम,
अब सप्रेम प्रस्तुत करते हैं ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनका शुभ-संकल्प बताया,
ग्राम-ग्राम सत्संग समिति हो ।
जिससे निज समाज में प्रसरित,
विघटन, अनाचार की इति हो ॥

मेरा पुष्ट विचार बन गया,
अपनी सारी शक्ति लगा दूँ ।
जीवन को प्रचार मय कर दूँ,
कलि-कल्मष को शीघ्र भगा दूँ ॥

आप सब करें स्थानान्वेषण,
शेष-कार्य का भार मुझे दें ।
दृव्य आदि की चाह न मुझको,
केवल उर-उपहार मुझे दें ॥

पूर्ण-समय दें घर वालों को,
किन्तु घड़ी दो-चार मुझे दें ।
धर्म-प्रचार प्रसार शीघ्र हो,
अपना निश्छल प्यार मुझे दें ॥

सभी हो गये परमोत्साहित,
उर में मोद-सिन्धु लहराया ।
श्री लालताप्रसाद शुक्ल के,
सम्मुख यह साधक दल आया ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सबके मृदु-विचार जब सुनते,
शुक्ल परम प्रमुदित हो जाते।
श्रद्धा भक्ति-समन्वित होकर,
निज उर के उद्गार सुनाते ॥

"भ्राताओ ! धार्मिक-प्रचार में,
लग जाये जो स्नेह धन्य है।
इस उपयोग मध्य आजाये,
तो मेरा यह गेह धन्य है ॥"

यह कह कर श्री शुक्ल प्रेम से,
निज पावन-प्रकोष्ठ खुलवाते।
समुचित पा सत्संग-स्थान को,
साधक अति-प्रसन्न हो जाते ॥

गंगादास संत को नारद—
जी ने, था अध्यक्ष बनाया।
और भागवत का एकादश,
स्कन्ध, वेदिका पर धरवाया ॥

नारद जी जब वक्ता बनकर,
यह पावन तम कथा सुनाते।
सब श्रोता-गण मन्त्र मुग्ध हो,
देह-गेह की सुधि बिसराते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बाबा गंगादास बीच में,
अपने भाव बता देते थे ।
कभी-कभी मार्मिक शब्दों का,
वह रहस्य समझा देते थे ॥

एक दिवस सत्संग चल रहा,
मोहन ऊधव से कहते हैं ।
"निज स्वरूप को नहीं जान कर,
मानव ममता में बहते हैं ॥

जड़, नश्वर-शरीर अभिमानी,
द्वन्द्व-दुःख में पड़ जाते हैं ।
ज्ञानी ही इस महा मोह से,
संत कृपा से बच पाते हैं ॥"

इतने में किशोर-वय बालक,
एक उधर पथ से जाता था ।
गंगादास संत आकृति को,
देख रहा था, सकुचाता था ॥

मैं भी जाऊँ याकि न जाऊँ,
ये मिलकर सब क्या बतलाते ?
यह विचार कर धीरे-धीरे,
चला जा रहा, चरण बढ़ाते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नारद जी ने, मुनि से पूछा—
क्या स्वामी जी ! इसे बुलाऊँ।
इसके मन में जिज्ञासा हैं,
क्या इस को भी यहाँ बिठाऊँ।

स्वीकृति मिलते ही नारद जी,
इस बालक को शीघ्र बुलाते ।
पूछा—"तुम हो कौन?" "वैश्य हम",
नम्र-स्वरों से उत्तर पाते ॥

"बेटा ! अपना नाम बताओ",
"कहते सब प्रयागनारायण[1] ।"
"अच्छा बैठो;" बैठ गया वह,
उसका था प्रसन्न अति तन-मन ॥

नारद जी ने श्री स्वामी से,
कहा कि—"बालक अज्ञानी है ।
निज स्वरूप का ज्ञान नहीं है,
मति माया से चकरानी है ॥

नाम, जाति इस जड़ शरीर में,
देही इससे प्रथक दिखाता ।
कभी नहीं मरता-जीता वह,
वह तो, अविनश्वर कहलाता ॥

१—स्वर्गीय श्री स्वामी शुकदेवानन्द जी महामण्डलेश्वर ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस शरीर को मैं कहने से,
जरा-मृत्यु का त्रास जुड़ गया।
जीव योग का लक्ष्य भूलकर,
भोग-मार्ग की ओर मुड़ गया॥"

बालक बोला—"महाराज! क्या,
हम बालक भी आ सकते हैं।
क्या सत्संग-सुधा को पीकर,
जीवन सुफल बना सकते हैं॥

एक लड़ैतेलाल[1] नाम का,
मेरा मित्र उसे लायेंगे।
जो अपूर्व-आनन्द मिला है,
हम उसको भी बतलायेंगे॥

ये दोनों दूसरे दिवस से,
सत्संगति में आने लगते।
नारद जी के वचनामृत को,
वे सहर्ष हैं पाने लगते॥

तर्क बुद्धि थी किन्तु प्रेम से,
शीघ्र सिद्धगोपाल पधारे।
गुप्त रामनारायण[2] आये,
बोले—"सुफल सुभाग्य हमारे॥

१—वर्तमान महामण्डलेश्वर श्री स्वामी भजनानन्द जी महाराज।
२—श्री स्वामी विचारानन्द जी महाराज।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महाराज ! इससे भी सुन्दर,
एक स्थान मैं बतलाऊँगा ।
समुचित सुविधापूर्ण, सुविस्तृत,
वहाँ नित्य मैं आ पाऊँगा ॥

मेरे द्वारे, महावीर के,
मन्दिर-निकट स्थान सुन्दर है ।
सदा-सदा को दे सकता हूँ,
ग्राम-वासियों हित सुखकर है ॥

अव तो उस सत्संग-स्थान में,
चुने-चुने साधक आते थे ।
नारद जी मानस, गीता के,
भाव अनूपम बतलाते थे ॥

कभी योग वाशिष्ठ-कथा में,
बहती योग-ज्ञान की धारा ।
कभी भागवत का एकादश—
स्कन्ध चला करता था प्यारा ॥

सिद्ध, तपस्वी संत धरा पर,
जो आये कलि कल्मष हारी ।
वे देवर्षि ललित लीला के,
पात्र बने, शम, दम, धृति धारी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विविध जातियों, भिन्न स्वरूपों—
में दिखते, पर ध्येय एक है।
ज्ञानामृत पीते निमग्न हो,
उन सबका श्रद्धेय एक है॥

विष्णू, श्यामलाल जी साधक,
हनूमान गुप्ता आ जाते।
रामभरोसे शुक्ल, मुदित मन—
नापित रामप्रसाद दिखाते॥

विप्रवर्य देवीसहाय जी,
श्री भगवानदास आते थे।
अध्यापक ईश्वरदयाल जी,
सत्संगति को अपनाते थे॥

साथ लड़ैतेलाल गुप्त के,
आते थे प्रयागनारायण।
कितने विधि-विधान से होता,
था सब ग्रन्थों का पारायण॥

मानस रोग दूर करने को,
विविध प्रतिज्ञायें होती थीं।
सुन्दर नियमों पर चलने को,
नारद आज्ञायें होती थीं॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिससे नियम-भंग होता था,
प्रायश्चित्त कराया जाता ।
सात्विकता के शुभ प्रसार हित,
साधन सुगम बताया जाता ॥

बड़े प्रेम से सब साधक गण,
नारद-शिक्षा पर चलते थे ।
पर नवयुवकों के घर वाले,
अपने मानस में जलते थे ॥

सन्तों के सत्संग सुने हैं,
पर ऐसा सत्संग न देखा ।
जो श्रोता का जीवन रँग दे,
वह भाषण में रंग न देखा ॥

धार्मिक शिक्षा को जीवन में,
भर दे ऐसा ढंग न देखा ।
नियम-बद्ध सब कार्य-क्रम हैं,
कभी नियम का भंग न देखा ॥

ये बालक पथभ्रष्ट हो रहे,
हो जायेंगे सब सन्यासी ।
साधक सब प्रसन्न दिखते थे,
पर घर-घर छा रही उदासी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

 Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

युवकों को आनन्द आ गया,
वे एकान्त पहुँच जाते थे ।
घंटों तक सत्संग, मनन में,
वे निमग्न होकर आते थे ॥

———

कौन जानता था ये साधक,
निकलेंगे शुचि सन्त महान ।
हिन्दू-संस्कृति के प्रचार का,
सफल कर सकेंगे अभियान ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

षष्ठ सर्ग

काल जगत की रचना करता,
और वही फिर करता ग्रास ।
वही हेतु, सुख-दुख द्वन्द्वों का,
वह ही अवनति और विकास ।।

वही सिन्धु को मरु कर देता,
गिरि-शिखरों को धूलि समान ।
वही अवनि को अम्बर करता,
मरु-स्थली को सिन्धु महान ।।

वही रंक को नृपति बना कर,
करता उच्चासन आसीन ।
धनपति या भूपति को करता,
वह ही अतिशय दीन, मलीन ।।

उसके इंगित पर रवि, शशि भी,
निश्चित गति से हैं गतिमान ।
उसके भय से वायु डोलती,
नभ में तनते मेघ-वितान ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वही महापुरुषों को देकर,
करता जगती का उद्धार।
वही बुला लेता जब उनको,
तब मच जाता हा-हाकार ॥

वह सब में गति, ममता भर कर,
करता भूतों का उत्कर्ष।
क्षीण सत्व कर, नाशित करता,
वह है अति दुर्गम दुर्धर्ष ॥

सन् उनइस सौ अट्ठारह में,
फैलाया उसने निज गाल।
इन्फ्लू-ज्वर अभिव्याप्त हो गया,
भारत-बसुधा में विकराल ॥

मियाँगंज में भी आया यह,
काल मृत्यु को लेकर साथ।
प्रति दिन व्यक्ति सैकड़ों मरते,
कितने बालक हुये अनाथ ॥

अगणित शव विकीर्ण सदनों में,
कहीं मच रहा हाहाकार।
कहीं मर गये सभी व्यक्ति, अब,
कौन, किसे, क्यों करे पुकार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुछ मृतकों को एक साथ ही,
वृषभ-यान पर कर आरूढ़ ।
गंगा-तट पर पहुँचाते थे,
कुछ की मति थी शोक विमूढ़ ॥

कुछ ने शवावेष्टन पाया,
कुछ शव यूँ ही होते क्षिप्त ।
कुछ डिड़कार मार कर रोते,
कुछ मानस थे दुखावलिप्त ॥

कुछ ऐसे भी घर थे जिनमें,
व्यक्ति हो गये सभी समाप्त ।
शव विकीर्ण केवल, सदनों में,
काक, गृद्ध हो जाते व्याप्त ॥

सड़ने लगे मृतक सदनों में,
दुर्गन्धित हो गयी समीर ।
व्यक्ति-व्यक्ति अब मियाँगंज का,
हो जाता अत्यधिक अधीर ॥

गंगातट पर अगणित मृतकों—
का भीषण लगता समुदाय ।
दाह-आदि कर्मों से वंचित,
शव छितराते थे असहाय ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

काल कृषक ने खेत काट कर,
लगा दिया भीषण-खलिहान ।
मड़नी सी करते फिरते हैं,
वायस, गृद्ध, अनेकों श्वान ॥

शव-भक्षण संतृप्त काक कुल,
केवल नेत्र खा रहे काढ़ ।
आँतें कहीं खींच मृतकों की,
श्वान कर रहे कट-कट दाढ़ ॥

कुछ कूकुर केवल विनोद से,
दाबे मुख में शव की टाँग ।
खींच-खींच कर कढ़िलाते थे,
भक्षण से हो रहा विराग ॥

मज्जा, वसा विलिम्पित मुख को,
करके सत्वर नभ की ओर ।
शतशः श्वान एक-स्वर रोकर,
हो जाते हैं भाव विभोर ॥

कूँ-कूँ करके गृद्ध झपटते,
चोचों से कर उदर विदीर्ण ।
मज्जा, माँस, वसा को खाते,
कुछ भूपर कर रहे विकीर्ण ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निशा-मध्य जम्बुक-गण आकर,
हुआ-हुआ कह कर सोल्लास ।
खींच-खींच कर माँस खा रहे,
कच्छप-दल आ पहुँचा पास ।।

वे भी कर्षण कर मृतकों को,
ले जाते सुरसरि के बीच ।
त्वचा, माँस, मज्जा को खाते,
अस्थि-जाल अन्तर से खींच ।।

क्रूर काल से कवलित प्रतिदिन,
शतशः शव गंगा के तीर ।
लाते, पर दुर्गन्धि प्राप्ति से,
हो जाते वे व्यक्ति अधीर ।।

शीघ्र छोड़ कर दूर पुलिन के,
भग जाते निज लेकर प्रान ।
गंगा-निकट खेत पट जाते,
आते नहीं भयार्त किसान ।।

नारद जी ने एक सभा की,
संस्थित होते, सब ग्रामीण ।
सबके मानस अस्त-व्यस्त थे,
सबका साहस था अति-क्षीण ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बोले श्री नारद जी सबसे—
"काल-चक्र है अति दुर्दान्त ।
वसुधा भाराक्रान्त हो उठी,
पाप-भार बढ़ गया नितान्त ॥

धेनु, देव, द्विज पूजा तज कर,
कभी नहीं मिल सकती शाँति ।
'इनकी पूजा में क्या रक्खा',
व्याप्त हुई यह उर में भ्राँति ॥

अधिकारी यदि म्लेच्छ आ गया,
तो उसको देते पर्यंक ।
स्वयं खड़े कर-बद्ध पूछते,
'क्या आज्ञा, कहिये निश्शंक' ॥

दूध, दही, रबड़ी सेवा में,
धरते हैं सम्मुख मिष्ठान्न ।
पान, सुपाड़ी अर्पित करके,
घर को बाँध रहे पक्वान्न ॥

वेश्याओं के भवन बन रहे,
देते उनको दृव्य अपार ।
उनकी सेवा शुश्रूषा में,
समय दे रहे, हो बलिहार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संतो, विप्रों को कुछ देते,
कम्पित से होते हैं हस्त ।
पूजा को तो समय न मिलता,
क्योंकि कार्य में हैं अति व्यस्त ॥

यह अपूज्य-पूजा का फल है,
प्रभु का यह सामूहिक दंड ।
भू का भार हरण करने को,
घूम रहा है काल प्रचंड ॥

अब भी देवाराधन करके,
करो प्रार्थना विधिवत यज्ञ ।
सबका ही कल्याण करेगा,
वह दयालु ईश्वर सर्वज्ञ ॥

मैं सेवा की समिति बनाता,
उसमें कर निष्काम-प्रवेश ।
दीन दुखित सेवा में लग कर,
पावन कर लो निज उर देश ॥"

सुनकर सबने ही सहमति दी,
समीचीन भवदीय विचार ।
इस शास्त्रीय-मार्ग द्वारा ही,
हो सकता है ग्राम-सुधार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कार्यालय खुल गया, दवायें,
लेने को, कुछ फरुखाबाद ।
व्यक्ति दौड़ते, उनके उर में,
सेवा—व्रत का परमाह्लाद ॥

प्रातः सायं नियम-बद्ध हो,
हुई प्रार्थना, भाव विभोर ।
नियमित था सत्संग चल रहा,
आते बालक, वृद्ध, किशोर ॥

स्वयंसेवकों का दल सक्रिय,
घूम रहे श्री नारद संत ।
सबके उर से भीति निकलती,
चिन्ताओं का होता अंत ॥

कभी नहीं सत्संग स्थली में,
जो आते, रखते अभिमान ।
अब वे सभी नियम से आते,
शिक्षायें सुनते धर ध्यान ॥

श्री नारद ने निज-प्रवचन में,
बतलाया यह मंजु रहस्य ।
पूर्ण गोप्य पर प्रति साधक के,
हेतु पथ्य सम परम प्रशंस्य ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सभी प्रेम से श्रोता-गण भी,
हो जाते हैं, भाव विभोर ।
देख रहे नारद चन्द्रानन,
बन कर चाहक चारु चकोर ।।

बोले श्री नारद जी, "विपदा—
का कर लो सुन्दर उपयोग ।
तो विषाद यह बन जायेगा,
ईश-प्राप्ति का परम प्रयोग ।।

दुख पड़ने पर भोगी-जन भी,
बन जाते हैं प्रभु के भक्त ।
सत्संगति में वे आ जाते,
जो हैं ममता में आसक्त ।।

यदि विषाद से रुदित पार्थ के,
बहती नहीं अश्रु-जल धार ।
तो गीता-प्रवचन को सुनकर,
कैसे होता भव के पार ।।

यदि 'तक्षक से सप्तम दिन ही,
होगी मृत्यु' न मिलता शाप ।
राज्यासक्त परीक्षित कैसे,
गंगा-तट आता चुपचाप ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यदि संकट में व्यस्त पाण्डवों—
का जीवन होता न दुरूह ।
तो माधव सुस्मृति क्यों आती,
तज कर अपना स्वजन-समूह ।।

दुखित द्रौपदी की पुकार पर,
दौड़ पड़े तत्क्षण ब्रजनाथ ।
चीर रूप में प्रकटित होते,
थकता दुःशासन का हाथ ।।

दुखित हो गया जब गजेन्द्र था,
ग्राह-ग्रस्त होकर अति दीन ।
दौड़ पड़े तब स्वयं चक्र ले,
माधव भक्त प्रेम में लीन ।।

पद-पद पर संकट मिलते हैं,
यही भक्त-जन का इतिहास ।
संकट से विराग फिर दर्शन,
यह साधक का क्रमिक विकास ।।

वह मानव जो कष्ट-प्राप्ति में,
भूल न जाता जीवन-ध्येय ।
अविचल धैर्यवान ही पाता,
अपने जीवन में शुभ श्रेय ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इससे इन संकट घड़ियों में,
प्रभु चरणों की करके भक्ति ।
प्रभु-मय विश्व देखकर दुखितों—
में करलो अपनी अनुरक्ति ।।

इनकी सेवा से जगदीश्वर,
सब पर ही होगा सन्तुष्ट ।
जो सेवा से दूर भगेगा,
ईश्वर उस पर होगा रुष्ट ।।

गंगा-तट पर शव-समूह जो,
सड़कर करता विकृत-समीर ।
उन सबकी अन्त्येष्टि हेतु अब,
मानस मेरा परम-अधीर ।।''

श्री नारद जी यत्र-तत्र से,
संचित करके काष्ठ-समूह ।
गंगा-तट पर प्रेषित करते,
सब कहते थे, कार्य दुरूह ।।

काष्ठ हुआ एकत्र तभी वह,
स्वयं-सेवकों को ले साथ ।
अति विस्तृत तम चिता लगा कर,
संस्थित करके मृतक अनाथ ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मुख, नाकों में अमृतधारा,
लगवा कर, दी पट्टी बाँध ।
अध्यापक ईश्वर दयाल ने,
अग्नि लगा दी, श्वासें साध ॥

दूर वायु-विपरीत-दिशा में,
लिये स्वयं-सेवक मुनिराज ।
श्री नारद जी संस्थित होते,
सब प्रमुदित था भक्त समाज ॥

श्री नारद जी ने बतलाया,
चिता-मध्य सब एकाकार ।
लीन हो गये इसमें सबके,
भिन्न रूप, मन, बुद्धि विचार ॥

दानी कृपण, शान्त औ' क्रोधी,
धनिक, नृपति या अतिशय दीन ।
सबका अंत एक सा होता,
अग्नि-ज्वाल में होते लीन ॥

मानव तन, धन अभिमानी बन,
करता रहता पर-अपकार ।
जीवन कितना क्षण-भंगुर है,
इसका करता नहीं विचार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जितने चिता-मध्य जलते हैं,
कर्म रह गये उनके पास ।
तन, धन, परिजन छूट गये सब,
शेष रहा केवल इतिहास ॥

श्री नारद—शिक्षा को गुनते,
आये सब ही निज-निज गेह ।
इस घटना से व्यक्ति-व्यक्ति में,
जागृत हुआ अलौकिक स्नेह ॥

विपदागम होने पर भी,
जो कर्म-निष्ठ धृति-धारी ।
उस सर्वभूत-हित-रत का,
बनता जग आज्ञाकारी ॥

——::०::——

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सप्तम सर्ग

दिनमणि देदीप्त करों की,
लुटती जाती तरुणाई ।
वासर ने विस्तर बाँधा,
थी पश्चिम में अरुणाई ॥

नभ के श्वेतित मेघों में,
संध्या की शुभ अरुणाली ।
तरुओं की मंजरियों से,
झाँकी थी स्वर्णिम जाली ॥

चूंगा ले चञ्चु-पुटों में,
लौटी थीं विहगावलियाँ ।
गोपद-रज से परिपूरित,
थीं मियाँगंज की गलियाँ ॥

शतशः शव राशि जलाकर,
जो व्यक्ति ग्राम में आये ।
वाहर सुन्दर कूपों पर,
शुध्यर्थ सप्रेम नहाये ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शीतल समीर के झोंके,
उत्पन्न कर रहे कम्पन ।
कर्तव्य निष्ठ युवकों का,
फिर भी प्रसन्न ही था मन ॥

सत्संग-स्थली में शतशः,
उत्साहित युवक दिखाते ।
श्री नारद जी उन सबको,
कर्तव्य-कर्म सिखलाते ॥

"इन्फ्लू-चपेट से कुछ के,
घर केवल एक बचा है ।
या सभी मर गये, भीषण,
अब हाहाकार मचा है ॥

उन सब दीनों दुखियों की,
हम को रक्षा करना हैं ।
निज शक्ति तथा साधन से,
उनके संकट हरना है ॥

तमसावृत निविड निशा है,
भयदायक काली-काली ।
चोरों, हिंसक-पशुओं से,
आतंकित रहने वाली ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दस से ले चार बजे तक,
कुछ प्रहरी सजग दिखावें ।
चौर्यादि दुखद घटनायें,
जिससे न घटित हो पावें ॥

फिर चार बजे से युवको !
निकले प्रभात की फेरी ।
चल देना तत्क्षण सुनकर,
कार्यक्रम-सूचक भेरी ॥

ढोलक बाजे ले चलना,
करतालें, मंजु मँजीरे ।
फिर गाते और बजाते,
चलना सब धीरे-धीरे ॥

कार्यालय में फिर प्रातः,
ग्रामीण व्यक्ति सब आवें ।
मम स्वयंसेवकों से मिल,
सेवा में चित्त लगावें ॥

जो मातृहीन बालक हों,
या हों अनाथ अकुलाते ।
अथवा अभाव से पीड़ित,
मन में भी हों सकुचाते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनके हित सब मिल करके,
घर खाली एक कराओ ।
उस सेवाश्रम में सब ही,
उन दुखितों को ठहराओ ।।"

श्रद्धा से सब अवनत थे,
नारद के आज्ञाकारी ।
सब जान गये थे, ये हैं,
सबके दुख, अघ, भयहारी ।।

मिलकर सब सुन्दर करते,
दुखितों की सुखद व्यवस्था ।
सेवा के शुभ-माध्यम से,
सुगठित युवकों की संस्था ।।

वृद्धों, वृद्धाओं ने भी,
सेवा में चित्त लगाया ।
फिर सब अनाथ बच्चों को,
था यथा-स्थान पहुँचाया ।।

जो-जो अनाथ हो बच्चे,
अति रोते, चिल्लाते थे ।
नारद जी मृदु शब्दों से,
उन सब को समझाते थे ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सान्त्वना हेतु उन सबमें,
थे प्रचुर-प्रसाद बटाते।
प्रभु की प्रार्थना करा कर,
बच्चों का मन बहलाते।

दूषित-मन वाले प्रायः,
अवसर ताका करते हैं।
जन-शून्य सदन होने पर,
धन, वस्त्र आदि हरते हैं॥

समुचित प्रबन्ध था जिससे,
प्रतिदिन पकड़े जाते थे।
सेवा-दल वाले उनको,
नारद-समक्ष लाते थे॥

नारद जी ने उन सबको,
मार्मिक-स्वर से फटकारा।
अपने कर्मों से लज्जित,
बह चली अश्रु की धारा॥

वास्तव में जीवन बदला,
परिवर्तित होती प्रज्ञा।
दुष्कर्म त्याग देने की,
वे करते प्रबल प्रतिज्ञा॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अब वे प्रबन्ध-रत होकर,
रक्षार्थ लगाते पहरा ।
सत्संग-लाभ से उन पर,
व्यापित-प्रभाव अति गहरा ॥

इस घटना से ग्रामीणों—
में श्रद्धा-भाव समाया ।
सत्संग-मंडली में भी,
तारुण्य-रूप लहराया ॥

जो दुराचार में रत थे,
अथवा थे कामी क्रोधी ।
दुर्व्यसनी, भोग परायण,
जो थे सत्संग विरोधी ॥

जो धन-मद में फूले थे,
या बनते थे अति ज्ञानी ।
इस अघटित घटना द्वारा,
वे चकित हुये अभिमानी ॥

अब तो समस्त नगरी का,
प्रमुदित था कोना-कोना ।
इतनी जनता आती थी,
था कठिन सुसंस्थित होना ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुछ मोहित हो जाते थे,
लख नारद की शुभ झाँकी ।
जनता-समूह में उनकी,
छवि शुक-प्रतिमा सी बाँकी ॥

सब चाह रहे थे मेरा,
घर भी हो जाता पावन ।
मेरे घर में भी पड़ते,
इन चरणों के कुछ रज-कण ॥

कुछ तो अति आग्रह करके,
करते इनका आवाहन ।
कुछ निज गृह में कर चर्चा,
हो जाते थे प्रमुदित मन ॥

प्राचीन साधकों द्वारा,
कुछ ने इनसे कहलाया ।
गेंदन देवी से अनुनय,
कर, कुछ ने इन्हें बुलाया ॥

नारद जी ने तब सोचा,
अवनति की मूल प्रतिष्ठा ।
साधक इसमें ही पड़ कर,
खो देता प्रभु-पद-निष्ठा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपने शुभ सात्विक कर्मों—
का बन जाता अभिमानी ।
सारा विवेक बह जाता,
ज्यों फूटे घट का पानी ॥

सब कुछ विचार कर नारद—
ने अपनी युक्ति चलाई ।
सत्संग-स्थान में जाकर,
सुन्दर योजना बनाई ॥

मेरी इच्छा प्रति-गृह में,
हो शुभ अखण्ड रामायण ।
इस सिद्ध-ग्रन्थ का सुन्दर,
हो बार-बार पारायण ॥

सत्संग-मंडली वाले,
सब बन जायें सहयोगी ।
कोई भी नहीं रहेगा,
इस ग्राम-मध्य अब रोगी ॥

सात्विक भ्रति सब में आई,
होता अति प्रबल-समर्थन ।
नामावलि लिखवाने में,
तत्पर होते सब सज्जन ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस भाँति नगर में होती—
थी अब अखण्ड रामायण ।
थी रामराज्य की झाँकी,
घर-घर होता पारायण ॥

गुरुदेव यहाँ जब आते,
शोभा होती मन-हारी ।
प्रति पथ, कदली-स्तम्भों पर,
बँध जाती वन्दनवारी ॥

उत्साह यहाँ का लख कर,
वे सम्भ्रम में पड़ जाते ।
कहते थे कलियुग में भी,
हम राम-राज्य को पाते ॥

अवतरित हुआ सा लगता,
बालक सुसिद्ध सन्यासी ।
इसने तो यहाँ बना दी,
दूसरी एक है कासी ॥

यह भाग्य-पूर्ण घड़ियाँ हैं,
यह समय न फिर आयेगा ।
इस बालक का शुभ दर्शन,
अति दुर्लभ हो जायेगा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधक-मंडल को लेकर,
नारद गंगा-तट आये ।
सुन्दर टीले को देखा,
निज आसन मंजु लगाये ॥

अब तो ग्रामीण जनों का,
लगने लगता है मेला ।
जिसमें अनुराग भरा हो,
वह रहता नहीं अकेला ॥

श्री त्रिभुवन नाथ महोदय,
इस अवनी के अधिकारी ।
आये सत्संग सुना तो,
शैली देखी मनहारी ॥

बोले—"प्रदान मैं करता,
यह स्थान, बना लो आश्रम ।
जिससे जनता का नाशित,
हो, मोह तथा संशय-भ्रम ॥

हम सभी क्षेत्र के साधक,
मिलकर सहयोग करेंगे ।
सत्संग-लाभ से सबके,
दुर्गुण-दुर्व्यसन हरेंगे ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अब आश्रम बनने लगता,
बनती हैं मंजु गुफायें ।
प्रति शुक्ला चतुर्दशी को,
होती थीं वृहत् सभायें ॥

अब दूर-दूर के भक्तों—
का लग जाता है मेला ।
फल चढ़ते, बटते रहते,
अमरूद, संतरा केला ॥

जंगल में मंगल होता,
जब आती पूरणमासी ।
सब ऋद्धि-सिद्धि रहती थीं,
नारद की बनकर दासी ॥

सब भक्त यहीं आते थे,
ले लेकर निज जिज्ञासा ।
पावन प्रवचन से होती—
थी पूरित ज्ञान-पिपासा ॥

श्री लाल लड़ैते[१] जी ने,
था एक दिवस बतलाया ।
"हे महा-महिम ! द्वारे पर,
पागल कोई है आया ॥"

१—लड़ैतेलाल (स्वामी भजनानन्द जी) ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आज्ञा होती नारद की,
"इसको प्रसाद दे आओ ।"
नारदोच्छिष्ट वह देते,
बोले सप्रेम तुम खाओ ॥

खाते ही मति-गति सुधरी,
बोला—"कुछ कार्य बताओ ।"
विस्मित हो बोले नारद—
"तुम श्रमिक-समीप सिधाओ ॥"

संयत हो सब श्रमिकों से,
श्रम अधिक किया करता था ।
ग्रामीण देखने आते,
उनमें संभ्रम भरता था ॥

फिर अपना पता लिखाकर;
निज-गृह को पत्र पठाया ।
आत्मीय जनों को सत्वर,
था आश्रम पर बुलवाया ॥

वह रोता था—"हम भगवन् !
किस भाँति यहाँ से जायें ।
जाओ-जाओ अब कह कर,
हे नाथ ! न मुझे रुलायें ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मेरा यह दूर हुआ है,
पागलपन जिसके द्वारा ।
हम वहाँ करेंगे डटकर,
अपना विशाल भंडारा ॥"

नारद बोले— "भंडारे—
की वस्तु जुटा कर लाना ।
घर जाकर प्यारे ! सत्वर,
तुम लौट यहाँ पर आना ॥"

कैसे प्रवलोन्माद नशाते,
यदि कुछ आत्मिक शक्ति न होती ।
चमत्कार-वैशिष्ट्य न होता,
तो जनता की भक्ति न होती ॥

———:ः०ः:———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अष्टम सर्ग

माघ-मास था शिशिर-समीरण,
सबको ही झकझोर रहा था ।
नभ में गर्जन घनमाला का,
बोल ठिठुर कर मोर रहा था ॥

जल था या असि-धार तीव्र थी,
यदि हाथों में छू जाता था ।
अँगुली स्तब्ध-शून्य होतीं, नर,
कम्बल तन में लपटाता था ॥

गड़-गड़ की ध्वनि हुई, उसी क्षण,
गिरने लगे भयानक ओले ।
फसल नष्ट होने के भय से,
रोने लगे, कृषक कुछ भोले ॥

अब तो कम्पित कलेवरों में,
कुछ ओढ़े थे शाल दुशाले ।
अग्नि जला कुछ ताप रहे थे,
वस्त्र-हीन सह रहे कसाले ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जल की बूँदें बरस रहीं थीं,
कोई व्यक्ति न आता-जाता ।
बाहर जाने में भय लगता,
दीन-जनों का उर अकुलाता ॥

कैसे इस वर्षा में वन से,
काष्ठ-चयन कर उदर भरेंगे ।
हाय ! मुझे भगवान बचाओ,
कब तक उर में धैर्य धरेंगे ॥

रिमझिम-रिमझिम मेघ बरसते,
कई दिनों की झड़ी लग गई ।
दीन-हीन असहाय व्यक्तियों—
को संकट की घड़ी लग गई ॥

पछुआ-वायु प्रलय करती थी,
कर, पद सभी गले जाते थे ।
श्री नारद वैकुण्ठाश्रम में,
एक वृद्ध से बतलाते थे ।

वृद्ध कह रहा था—"जब कोई,
घर से नहीं निकल पाता है ।
ऐसे प्रलय-काल में कोई,
मानव कहीं नहीं जाता है ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुम गुरु-दर्शन करने जाना,
अरे वारिदों को खुलने दो ।
कुछ साधन की बात बताओ,
उर के पाप-दोष धुलने दो ।।"

नारद जी बोले—"गुरुवर की,
मूर्ति दृगों में झूल रही है ।
उनकी सुस्मृति एक पलक भी,
मुझे नहीं अब भूल रही है ।।

कितना उनमें दया भाव है,
एक दुखित रैदास भक्त था ।
हड़िया, टाट लिये फिरता था,
वृद्ध, दीन, अतिशय अशक्त था ।।

कुछ बच्चों ने मारा पीटा,
कुछ ने उसको खूब खिझाया ।
किसी व्यक्ति ने ढेले फेंके,
तथा राज-पथ पर घसिलाया ।।

वह अतीव मर्माहत होकर,
जब श्री गुरु-चरणों में जाता ।
रो-रोकर उस महा-पुरुष के,
सम्मुख अपनी व्यथा सुनाता ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुरुवर ने सप्रेम उसको तब,
कुटिया के पीछे ठहराया ।
एक घड़े को जल-प्रपूर्ण कर,
सत्वर उसके पास धराया ।।

अतीसार से वह पीड़ित था,
औषधि का प्रबन्ध हो जाता ।
गूरुवर कई बार कहते थे,
प्यारे ! तू क्यों है अकुलाता ।।

हम सब पहुँचे मियाँगंज से,
पूछा—"तुम किस हेतु खड़े हो ।
जाओ कहीं माँग खाओ तुम,
गुरु चरणों को क्यों पकड़े हो ।।"

वृद्ध रो पड़ा—"हम दीनों का,
स्वार्थी-जग में त्राण न होगा ।
भोजन देना दूर रहा हाँ,
वहाँ सुरक्षित प्राण न होगा ।।

गुरुवर ने जो प्रेम दिया है,
माता कभी न दे सकती है ।
इस असहाय अवस्था में क्या,
दुनियाँ सुधि भी ले सकती है ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वह सोया, हम सब भी सोये,
अर्ध-रात्रि में फिर चिल्लाया ।
अपने चीत्कार के द्वारा,
सब को कच्ची नींद जगाया ।।

हमने कहा—"शाँत हो जाओ",
देखा गुरु भगवान आगये ।
बोले—"प्यारे ! क्यों रोता है ?"
उसमें मानों प्राण आ गये ।।

रोकर बोला—"पदाघात से,
फैल गया सब घट का पानी ।
अतीसार अति प्रबल वेग से,
जल भर दो ए गुरुवर ज्ञानी ।।"

सुनकर जल प्रपूर्ण घट करते,
फिर ईंटें दो-चार लगाईं ।
आच्छादित कर दिया पात्र से,
हम सबकी आँखें भर आईं ।।

दीनों, दुखितों, असहायों की,
रक्षा, सच्ची मानवता है ।
इनको दूर-दूर कह करके,
दूर भगाना दानवता है ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक दिवस कुटिया पर बैठे,
थे सत्संग हेतु सतसंगी ।
शूकर वृन्द साथ ले करके,
निकला एक उधर से भंगी ॥

गुरुवर बोले—"पात्र धरा वह,
उससे मोदक चार उठाओ ।
शूकर वे सम्मुख आते हैं,
तुम इनको जलपान कराओ ॥"

मैं अति शीघ्र मोदकों को ले,
डाल रहा था, मुसकाता था ।
सम्मुख बढ़ा, शूकरों का दल,
सूंघ-सूंघ आगे जाता था ॥

बहुत यत्न करने पर भी जब,
नहीं मोदकों को खाया था ।
तब निराश गुरु निकट आगया,
और उन्होंने समझाया था ॥

"प्यारे ! मोदक कितने अच्छे,
खूब पड़ा है इनमें खोया ।
मेवा, शक्कर, घी इनमें पर,
भाग्य शूकरों का है सोया ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इसी भाँति सत्संग श्रेष्ठ है,
भोगी स्वाद न जान सकेंगे ।
विषयी सच्चे संत जनों को,
कभी नहीं पहिचान सकेंगे ॥"

ऐसी घटनाओं से निर्गत,
ज्ञान भला क्या भूल सकेगा ।
क्या उनकी शिक्षायें सुनकर,
कोई मद से फूल सकेगा ॥

एक बार सत्संग चल रहा,
तब तक उठी भयानक आँधी ।
घन-गर्जन भी साथ-साथ था,
गुरुवर ने मन की गति साधी ॥

बोले—"प्यारे ! इस झंझा का,
यहाँ न कुछ प्रभाव आयेगा ।
इस सत्संग मध्य यह बाधा,
किंचित नहीं डाल पायेगा ॥"

सबने देखा प्रबल वेग से,
आंधी साथ भयानक ओले ।
सम्मुख ही से घड़-घड़ करते,
निकल गये, सब जय-जय बोले ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुरुवर बोले—"इस जगती में,
इष्ट-अनिष्ट सभी आते हैं।
अविवेकी सुख-दुख में पड़कर,
अपना लक्ष्य भूल जाते हैं॥

प्रलय काल सम्मुख होने पर,
अविचल जो रहता ज्ञानी हैं।
जिसका धैर्य छूटता, उसको,
समझो अज्ञानी प्राणी है॥"

श्री गुरुवर कितने दयालु हैं,
कितने सरल स्वभाव-वान हैं।
अपनी प्रति दिन की घटना से,
देते रहते ज्ञान दान हैं॥

एक बार हम कुछ सत्संगी,
मियाँगंज से आश्रम जाते।
रेल यान का समय आगया,
तब श्री गुरुवर जी समझाते॥

"प्यारे! जो दोहे लिखवाये,
वे जीवन-पथ बतलायेंगे।
सब कंठस्थ करो इन सबको,
बड़े कार्य में ये आयेंगे॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अब जाओ है समय आगया",
हम सब सत्वर भाग पड़े थे ।
प्यारे ! प्यारे ! रुको, शब्द सुन,
गति रोकी हो गये खड़े थे ।

भूल गये हम जिन वस्त्रों को,
उनकी एक पोटली बाँधे ।
देखा भगे चले आते हैं,
गुरुवर एक हाथ में साधे ।।

हम सबके दृग छलक रहे थे,
गुरुवर इतना कष्ट किया क्यों ।
दो फर्लांग दौड़कर आये,
इन चरणों को दुःख दिया क्यों ।।

प्यारे ! तुम सब कष्टित होते,
सन्त-हृदय कब सह सकता है ।
सच्चे सन्तों के जीवन में,
कष्ट कभी क्या रह सकता है ।।

अब भी जब सुस्मृति आती है,
हृदय प्रेम से भर जाता है ।
जीवन का सारा श्रम सत्वर,
नयन-मार्ग से झर जाता है ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यदि इस जल-वर्षा से रुकते,
तो आगे क्या कर पायेंगे ।
विघ्नों, बाधाओं से डर कर,
मानस रोग न हर पायेंगे ॥

नारद ने अपने मित्रों को,
सत्वर अपने पास बुलाया ।
हृदय वेदना से परिपूरित,
सबको अपना भाव बताया ॥

"जब हम अजर, अमर, अविनासी,
तब यह जल क्या कर सकता है ।
सच्चा ज्ञानी कभी नहीं इन,
बाधाओं से. डर सकता है ॥

"हम सब वास्तव डरे हुये हैं,
इससे पुष्ट नियम टूटा है ।
प्रायश्चित्त करें सब मिलकर,
जो सत्संग समय छूटा है ॥

हम सब चलें पदाति यहाँ से,
तप से देह तपानी होगी ।
शव ही, धारा में बहते हैं,
प्रगति-शीलता लानी होगी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाणी में वह शक्ति भरी थी,
जिससे सुप्त भाव जग जायें ।
उद्‌बोधन में वह प्रभाव था,
भय के भाव सभी भग जायें ।।

सभी साथियों को लेकर जब,
शीघ्र चल पड़े नारद ज्ञानी ।
तब उस वृद्ध पुरुष के सहसा,
निकल पड़ा नयनों से पानी ।।

बोल उठा वह प्रबल-स्वरों से,
"गुरु-पद-रज विश्वास अमर हो ।
कंटक-पथ पर चलने वाले,
तेरा यह इतिहास अमर हो ।।"

शिशिर-समीरण डोल रहा था,
ऊपर कटती थी जल-धारा ।
जल, कीचड़ में छप-छप करते,
चला साधकों का दल न्यारा ।।

कट-कट बत्तीसी बजती थी,
थर-थर थे शरीर थर्राते ।
लथ-पथ जल से वस्त्र हुये पर,
चले जा रहे चरण बढ़ाते ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब गुरुवर के पास पहुँचते,
पूछा—"वर्षा में क्यों आये ?
बादल खुल जाने पर आते,
क्यों इतने हैं दुःख उठाये ??"

नारद जी ने कहा—"विघ्न या,
बाधा से यदि रुक जायेंगे ।
तो फिर इस परमार्थ-मार्ग में,
गुरुवर हम क्या कर पायेंगे ॥"

गुरुवर ने शुचि शुष्क काष्ठ दे,
कहा—"शीघ्र ही इन्हें जलाओ ।
निष्पीड़ित निज आर्द्र वस्त्र कर,
प्यारे ! तुम सब व्यक्ति सुखाओ ॥"

शुष्क हो गये वस्त्र सभी तो,
धारण कर, गुरु सम्मुख आये ।
उनके उर में दया-भाव था,
फिर सप्रेम यह शब्द सुनाये ॥

"कष्ट, विघ्न या बाधाओं में,
अविचल-कारी ज्ञान अमर हो ।
भौतिक दुःखों की विस्मृति हो,
जिसमें ऐसा ध्यान अमर हो ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुरु-दर्शन के हेतु कष्ट सह,
आये, यह अभियान अमर हो।
लक्ष्मीपति भगवान सहायक,
मेरा यह वरदान अमर हो ॥

साध्य तुष्ट तो सफल साधना,
साधक का समस्त श्रम धन्य ।
साधक स्वयं साध्य बनता यदि,
होवे उसकी वृत्ति, अनन्य ॥"

——::०::——

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नवम सर्ग

देश फिरंगी अंग्रेजों की,
कूटनीति से था आक्रान्त ।
सोना, चाँदी, रत्न लूट कर,
लिये जा रहे थे निर्भ्रान्त ।।

जिसने अपना शीस उठाया,
उसे मिल गया कारागार ।
सत्याग्रहियों पर होता था,
उनका प्रतिदिन प्रबल प्रहार ।।

उसी समय आँधी सा गांधी,
ले उर में भीषण विद्रोह ।
निकला भारत प्रान्त-प्रान्त में,
करता नेताओं की टोह ।।

उसने कुछ आन्दोलन ऐसे,
किये, देश में आया ज्वार ।
सत्याग्रही सहस्रों नेता,
करते क्रान्ति-भाव संचार ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वे प्रभात-फेरी करते थे,
करते राष्ट्र ध्वजा का गान ।
वस्त्र स्वदेशी धारण करके,
कर्षित करते सब का ध्यान ।।

डिंडिम घोष पूर्वक हाटों—
में व्यापित करते विद्रोह ।
शासन भय से कुंज, कन्दरा,
में बसते व्यपगत व्यामोह ।।

ऐसे भारत में सहस्रशः,
स्वतन्त्रता-प्रिय व्यक्ति ललाम ।
इनमें एक प्रबल उत्साही,
राष्ट्र-भक्त थे बाबूराम ।।

कानपूर पावन प्रदेश में,
उनका ग्राम रसूलाबाद ।
गान्धी के स्वराज्य-पोषक थे,
कभी न करते लेश प्रमाद ।।

अध्यापक थे किंतु सदा ही,
रहता था खद्दर का वेश ।
ग्राम गढ़ेवा विद्यालय में,
हो नियुक्त जब किया प्रवेश ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनके मित्र शरण जी का यह,
अति सुन्दर-सात्विक था ग्राम ।
अध्यापन का कार्य छोड़ कर,
जो अब दिखते थे निष्काम ।।

ग्राम वासियों से सुदूर वह,
सभी छोड़ कर गेहासक्ति ।
बाहर एक कुटी में रहते,
भरी हृदय में विशद विरक्ति ।।

देखा जभी मित्र को बदला,
उसने है गृहस्थ का वेश ।
हँसकर पूछा—"मित्रवर्य ! क्या,
मिला गेह में तुम को क्लेश ।।

यदि विरक्त हो तो बन जाओ,
राष्ट्र-भक्त गान्धी से संत ।
इन विरागियों से हो सकता,
पराधीनता का है अंत ।।"

वे बोले—"तुम ठीक कह रहे,
चलो मित्र ! तुम मेरे संग ।
ऐसा अद्भुत संत मिला दूँ,
प्रवचन से पुलकित हों अंग ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मानो गान्धी में श्रद्धा है,
है स्वराज्य का पावन ध्येय ।
किन्तु जान लो उसको भी तुम,
ज्ञाता बन जो है अज्ञेय ।।"

तर्क हुआ कुछ देर प्रबल पर,
हुआ न कुछ निर्णय सविशेष ।
दोनों निज-निज पक्ष लिये थे,
दोनों के निर्भय उर-देश ।।

इधर हुआ अवकाश पहुँचते—
हैं जैसे ही अपने ग्राम ।
वहाँ उमाशंकर जी मिलते,
चतुर्वेदि-कुल-कमल ललाम ।।

वे वैरी में पहुँच चुके थे,
सुना मंजु नारद उपदेश ।
चर्चा कर गद्-गद् हो जाते,
वर्णन किया मनोहर वेश ।।

बाबूराम चकित हो जाते,
मिला यहाँ भी वही प्रसंग ।
अबकी जब अवकाश मिलेगा,
तभी करूँगा मैं सत्संग ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बेनी माधव, ग्राम औनहां,
तथा उमाशंकर सामोद ।
परम विरक्त शरण जी चलते,
बाबूराम आदि सविनोद ।।

बाबूराम धर्मपत्नी भी,
चली हृदय में भरकर चाव ।
विप्र उमाशंकर की पत्नी—
में भी था सत्संगति भाव ।।

अपनी पत्नी को समझाते,
विप्र उमाशंकर सस्नेह ।
"कहाँ चलोगी सब बच्चे ले,
यहीं रहो तुम अपने गेह ।।

फिर तेरी गर्भावस्था है,
होगा तुझको कष्ट अपार ।"
पर उसके सत्याग्रह से वे,
साथ ले चले विप्र उदार ।।

कान्यकुब्ज के स्टेशन पर अब,
उतर पड़ा यह साधक वृन्द ।
इक्कों, तांगों के द्वारा यह,
मियाँगंज पहुँचा सानन्द ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुछ आगे, वैकुंठाश्रम की,
शोभा लखकर ललित ललाम ।
सारा पथ-श्रम दूर हो गया,
प्राप्त हुआ ज्यों प्रभु का धाम ।।

कदली, कुंद, कनैर, करौंदा,
कल कदम्ब, कमरख, कटहर ।
वट, बदरी, बकुची, बबूल थे,
विल्व, वंश, बंजुल, बड़हर ।।

पीपल, प्लक्ष, पलाश प्रचुर थे,
शीशम, शमी, शाल्मली, शाल ।
आम्र, अनार, आँवला अतिशय,
तरुवर तिन्तिडि, ताल, तमाल ।।

पुष्पों में गेंदा, गुलमेंहदी,
गुल बकावली, सदा बहार ।
बेला, जुही, चमेली, पाटल,
कलित, केतकी पुष्प अपार ।।

झूम रहीं थीं ललित लतायें,
भ्रमरावलि करती रस पान ।
सारस, हंस, चकोर, पपीहा,
कुहू-कुहू कोकिल का गान ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहीं मयूर नृत्य करते थे,
भाग रहे हरिणों के झुंड ।
गंगा-तट पर ध्यान-मग्न कुछ,
साधक जिनके लगा त्रिपुंड ॥

वैकुंठाश्रम—छटा देखकर,
पथ का श्रम हो जाता दूर ।
श्री नारद जी का दर्शन कर,
मिली शांति सबको भरपूर ॥

इनका प्रवचन मनहारी था,
लग जाती थी भीड़ अपार ।
आत्म-ज्ञान से सिक्त सूक्तियाँ,
उपनिषदों का संचित सार ॥

सायंकाल दृश्य होता था,
आश्रम का गिरि विन्ध्य समान ।
प्रातः यहाँ प्रयाग त्रिवेणी—
की शोभा का होता भान ॥

भक्ति, कर्म की ललित कथायें,
बनती गंग-जमुन जलधार ।
ब्रह्मज्ञान की सरस्वती थी,
अक्षय वट विश्वास अपार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस सत्संग-मध्य मज्जन कर,
निकल गये कितने दिन रात।
सब साधक-गण अति प्रसन्न थे,
था जीवन का पुण्य-प्रभात ॥

सद्विवेकिनी मति मानस में,
करती श्रद्धा का संचार।
रज, तम की वृत्तियाँ व्यपोहित,
गुरु-चरणों में प्रेम अपार ॥

बाबूराम वाजयेयी के,
तर्क हुये थे अब निश्शेष।
अब तो गान्धी या नारद में,
साम्य दिखाई पड़ा विशेष ॥

एक कर रहे बाह्य-शत्रुओं—
से सुगठित होकर हैं युद्ध।
तो यह आभ्यंतर रिपुओं को,
मार-मार कर करते शुद्ध ॥

जैसे वह अंग्रेज भगाने—
का करते हैं प्रबल प्रयास।
वैसे ही यह कलि-पापों से,
द्वन्द्व कर रहे हैं सोल्लास ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दोनों ही योजना लिये हैं,
दोनों का स्वराज्य है ध्येय ।
दोनों त्यागी और तपस्वी,
दोनों की गति तीव्र, अजेय ।।

दोनों निज आश्रम निर्मित कर,
डाल रहे, अपने संस्कार ।
दोनों ही विभिन्न गतियों से,
करते भारत का उद्धार ।।

दोनों श्रेय-प्रेय देते हैं,
दोनों का अति सरल स्वभाव ।
दोनों में अदम्य साहस है,
दोनों का प्रचार में चाव ।।

इस अभेद-दर्शन को करके,
जीवन हो जाता कृत-कार्य ।
जीवन-सूत्र समर्पित करके,
कहते अब जाना अनिवार्य ।।

गुरुवर नारद जी तब बोले—
"सुने तुम्हारे विमल-विचार ।
जाने क्यों मेरे मानस में,
हुआ स्नेह का शुभ संचार ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अच्छा तुम यह वचन मुझे दो,
अबकी जब होगा अवकाश ।
तब भी पूर्ण समय को देकर,
संग रहोगे मम सोल्लास ।।"

स्नेह-सिक्त वचनों को सुनकर,
लगा छलकने लोचन नीर ।
गद्-गद् मानस हो जाता है,
पुलकित था हो गया शरीर ।।

जो आज्ञा—कह लगे पोंछने,
प्रेम-अश्रुओं को तत्काल ।
तभी उमाशंकर जी आये,
लेकर शुभ-सुमनों की माल ।।

गुरुवर बोले—"बड़ भागी है,
विप्र ! तुम्हारा यह परिवार ।
कितने सौम्य, सरल, बालक हैं,
कितने सुन्दर हैं संस्कार ।।

प्रवचन में प्रशान्त रहते थे,
सभी बैठते थे चुपचाप ।
पत्नी भी तव पतिव्रता है,
इसके सुन्दर कार्यकलाप ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह गर्भावस्था में आई,
बालक होगा प्रभु-पद-भक्त ।
धर्म, धेनु, द्विजवर प्रतिपालक,
होगा संत सभा संसक्त ॥

जाओ किन्तु मुझे दे जाओ,
अपना हृदय मुझे इस बार ।
यही दक्षिणा, इससे बढ़कर,
क्या होगा सुन्दर उपहार ॥"

शुभ आशीर्वाद को पाकर,
दम्पति के निकली सिसकार ।
"गुरुवर ! इस असार जगती में,
संत-संग ही है बस सार ॥"

एक-एक कर विदा माँगते,
बहता सभी दृगों से नीर ।
यह वियोग का समय बनाता,
साधक-गण को महा अधीर ॥

मियाँगंज के निकट-निवासी,
सत्संगी हो भाव-विभोर ।
रो-रोकर सब गले मिल रहे,
करुणा-रस प्रकटा चहुँ ओर ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बारम्बार रोकने पर भी,
मान्य-अतिथियों के ही साथ ।
साधक चले आरहे कहते,
दर्शन से हम हुये सनाथ ।।

अब बोलो— "कब दर्शन दोगे,
कब होगा अग्रिम अवकाश ?
कब वियोग की विभावरी को,
दूर करोगे परम-प्रकाश ??"

मानीमऊ हाल्ट पर आये,
रेल-यान पर कर आरूढ़ ।
गाड़ी के चलते-चलते भी,
वही प्रश्न था परम-निगूढ़ ।।

द्रुत-गति से शीटी दे-देकर,
चला तीव्र गति से था यान ।
सब साधक चर्चा करते थे,
वास्तव में हैं संत महान ।।

कितना करुणा-भाव भरा है,
है इनमें कितना अनुराग ।
बाल्यावस्था में ही इनको,
हुआ विश्व से विपुल विराग ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कितना अनुभव-पूर्ण ज्ञान है,
कितना है प्रचार में चाव ।
बरबस अपनी ओर खींचता,
इनका सात्विक सरल स्वभाव ॥

सद्गुरु सत्संगति के द्वारा,
सदसत् का विमल विचार मिला ।
प्रभु-प्राप्ति हेतु पथ-पुण्य मिला,
उर को, सुशान्ति संचार मिला ॥

———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दशम सर्ग

वर्षा बीती है शरत्काल,
पुष्पित अब सुन्दर कास हुये ।
जल शुष्क हो गया है पंथ का,
अब मशक-दंश, विगताश हुये ।।

शुभ स्वच्छ सरोवर में विकसीं,
बहु रंग लिये कमलावलियाँ ।
गुन-गुन-गुन सी गाती मचलीं,
अब घूम रहीं मधुपावलियाँ ।।

जल-हीन मेघ अब धवल वर्ण,
नभ में आये फिर लीन हुये ।
है शरत्पूर्णिमा की सन्ध्या,
दीपित दिन-मणि द्युति हीन हुये ।।

बेला, जूही थी फूल उठीं,
सुरभित निशि मध्य रातरानी ।
कामिनी सुमन श्रृंगार किये,
प्राची दिशि कुछ-कुछ मुसकानी ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अरुणाभा को लेकर निकला,
शशि सुन्दर स्वर्णिम-थाल बना।
अथवा यह गगन-सरोवर का,
विक्रीडित मंजु-मराल बना ॥

वसुधा पर सुधा बरसता सा,
शशि-रश्मि रूप पिचकारी से ।
या निशा नायिका को भूषित,
कर रहा चन्द्रिका-सारी से ॥

प्रमुदित अपनी चंचुवें खोल,
इठलाती चारु-चकोरी है ।
प्रियतम का दर्शन सुलभ हुआ,
लग रही रश्मि की डोरी है ॥

संयोगी को शशि सुख देता,
रोता लख इसे वियोगी है ।
कोई झुंझला कर कह देता,
शशि पाण्डु रोग का रोगी है ॥

कमलावलि दुखित म्लान सी है,
हँसतीं, सहर्ष कुमुदावलियाँ ।
शुभ शरत् महोत्सव आज अस्तु,
हैं मियाँगंज में रँग-रँलियाँ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब सभी हर्ष में थे विभोर,
तब क्षमा, हृदय में अकुलाती ।
हैं प्राणनाथ मम कहाँ गये,
किससे पूंछे ? वह सकुचाती ॥

सुन्दर पकवान बनाये थे,
पर जभी प्राणपति आयेंगे ।
प्रभु को अर्पित कर स्वयं आप,
जब इनका भोग लगायेंगे ॥

तब मेरा सफलित श्रम होगा,
वे शशि, मैं क्षुद्र चकोरी हूँ ।
वे मेरे प्राणाधार—राम,
मैं उनकी जनक-किशोरी हूँ ॥

गृह की नीरवता मुखर हुई,
गेंदन देवी ही बोल उठीं ।
अपने मानस के गुप्त-भाव,
वह आज बहू से खोल उठीं ॥

"तुम वधू ! जानती ही हो यह,
तुम तो विरक्त की नारी हो ।
तेरा पति भोला शंकर है,
तुम गिरिजा की अवतारी हो ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तेरे पूजन, व्रत, नियम देख,
पति चरणों में अनुरक्ति देख ।
मैं गद्-गद् होती हूँ तेरी,
माधव-चर्चा में भक्ति देख ॥

जो नियम पुत्र मम करता है,
तुम भी वह नियम निभाती हो ।
श्रावण भर पति की भाँति बहू !
तुम नित्य, बेल ही खाती हो ॥

यदि उसने शकर छोड़ दी तो,
तुम भी मुख नहीं लगाओगी ।
यदि कंद, मूल, फल खाये तो,
तुम भी सहर्ष वह खाओगी ॥"

लज्जा से घूँघट पट डाले,
अपने विचार कहने लगती ।
गेंदन देवी के चरण पकड़,
पति-प्रेम-सुधा में बह पगती ॥

बोली—"मम जीवन धन्य हुआ,
जिसका पति परम पुजारी है ।
कामादिक दोषों के तम को,
जिसका पति बना तमारी है ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिनके चरणों की रज लेने,
कितने ही व्यक्ति तरसते हैं ।
जो अपनी मधुरिम-वाणी से,
जीवन-प्रद, सुधा बरसते हैं ॥

जिनका सुस्मृत कर सरस प्रेम,
कितने वियोग में रोते हैं ।
जिनका दर्शन पा जाते ही,
निज आधि-व्याधियाँ खोते हैं ॥

जिनका केवल प्रवचन सुनने,
लग जाता गंगा-तट मेला ।
दर्शन करके कुछ कह देते,
जीवन की है प्रभात बेला ॥

जो रोग समझते भोगों को,
जो ब्रह्म-प्राप्ति का लक्ष्य लिये ।
उनको भोजन की क्या चिंता ?
जो ज्ञान सुधा का पान किये ॥"

इतने में परिचित पग-ध्वनि सुन,
कहते-कहते वह ठहर गई ।
कर्तव्य भावना से ऊँचा,
विद्युत् सी तन में लहर गई ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जल द्वारा पद प्रक्षालित कर,
शुभ आसन पर बिठलाती है ।
बहु-व्यंजन थाल मध्य परसे,
फिर बड़े प्रेम से लाती है ॥

भोजन करके कुछ देर रुके,
बोले—"अब आश्रम जाना है ।
प्रातः फिर चार बजे उठकर,
हमको सत्संग चलाना है ॥"

वह बोली—"मैं ही बाधक हूँ,
हे नाथ ! आप अवतारी हैं ।
हैं योग पुजारी आप किंतु,
हम महा भोग-मय नारी हैं ॥

कामना यही तव सन्निधि में,
निज-लोक शीघ्र मैं अपनाती ।
अन्त्येष्टि आपके कर द्वारा,
पाकर मम सद्गति बन जाती ॥"

सुनकर श्री नारद बोल उठे—
"भौतिक शरीर से जाओगी ।
पर क्षमा ! हमारे जीवन से,
तुम दूर न होने पाओगी ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह कह कर नारद चले गये,
वह सूक्ति-सुधा में सनी रही ।
मानस-पट पर साकार मूर्ति,
नयनाभिराम की बनी रही ।।

कुछ काल बाद शिशु जन्म हुआ,
आकर जो जाने आया था ।
अथवा अपनी प्रिय जननी को,
अति-शीघ्र बुलाने आया था ।।

दोनों नारद कर-कमलों का,
संस्पर्श प्राप्त कर जाते हैं ।
अन्त्येष्टि-क्रिया करके समाप्त,
नारद फिर ध्यान लगाते हैं ।।

कुछ काल बाद प्रिय जननी भी,
गो-लोक वास कर जाती है ।
लोकोपकार-रत नारद में,
बस क्रान्ति उसी क्षण आती है ।।

नारद जी के जीवन सहचर,
साधक भी, पत्नी हीन हुये ।
जीवन-पथ-दर्शक संग-संग,
वह भी विरक्ति-रस लीन हुये ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ये सब गृहस्थ में रहकर भी,
शुभ वानप्रस्थ निभाते थे।
भोगों को रोग-रूप समझे,
यह योग तीव्र अपनाते थे॥

ऐसी कुछ झंझा-वायु चली,
व्यपगत विघ्नों की घन-माला।
जीवन निरभ्र नभ सा चमका,
निखरा, विवेक रवि द्युति वाला॥

सत्प्रज्ञा-प्रेरित सब साधक,
चिर-शांति-सुधा की प्यास लिये।
देवर्षि संग में रहते थे,
शुभ तत्व ज्ञान अभिलाष लिये॥

गुरुवर श्री एक रसानँद का,
अब आश्रम पर आह्वान हुआ।
जिनके द्वारा निज शिष्यों को,
काषाय-वस्त्र का दान हुआ॥

नारद का बाबूराम नाम,
बदला व 'नारदानंद' हुये।
गुप्ता प्रयागनारायण ही,
ऋषिवर 'शुकदेवानंद' हुये॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री ललित-लड़ैतेलाल आज,
भावुक मुनि 'भजनानन्द' बने ।
श्री गुप्त रामनारायण जी,
अब विज्ञ 'विचारानन्द' बने ॥

विष्णू जी 'समतानंद' हुये,
इनमें अब विपुल विकास हुआ ।
शुचि श्यामलाल का नाम बदल,
अब मुनिवर श्यामप्रकाश हुआ ॥

हिन्दू-संस्कृति की ललित लता—
में लाल सुमन सी छवि वाले ।
क्या निकले अरुण अनेकों रवि,
तम-नाश-कारिणी प्रतिभा ले ॥

अथवा कलियुग-तम नाश हेतु,
यह दीपित दीप शिखायें हों ।
गुरुवर की लव से छूते ही,
मानों धधकी समिधायें हों ॥

श्री एकरसानंद बोल उठे—
"अब से सब आप विरक्त बने ।
व्यष्टित्व भावना है समाप्त,
अब तो समष्टि-संसक्त बने ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब बोले—"गुरुवर ! कृपा हुई,
हम सब को पथ दिखलाया है ।
हम मोह-निशा में सोते थे,
तुमने ही हमें जगाया है ॥

अब भी अपने उपदेशों से,
हम को कृतार्थ करते रहिये ।
प्रभु ! बार बार दर्शन देकर,
मानस-तम को हरते रहिये ॥"

फिर साश्रु-लोचनों से सबने,
उनको निज आश्रम पहुँचाया ।
वैकुंठाश्रम पर आ करके,
नारद ने सबको बतलाया ॥

"हम रात्रि समय आजाने पर,
उस पार गंग के जायेंगे ।
झाऊ के झुरमुट में रहकर,
प्रतिदिन ही रात्रि बितायेंगे ॥"

वह प्रतिदिन रीते हाथों से,
झाऊ के वन में जाते थे ।
हिंस्रक पशुओं के वृन्द वहाँ,
प्रतिदिन बहु शब्द सुनाते थे ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री ललित-लड़ैतेलाल आज,
भावुक मुनि 'भजनानन्द' बने ।
श्री गुप्त रामनारायण जी,
अब विज्ञ 'विचारानन्द' बने ॥

विष्णू जी 'समतानंद' हुये,
इनमें अब विपुल विकास हुआ ।
शुचि श्यामलाल का नाम बदल,
अब मुनिवर श्यामप्रकाश हुआ ॥

हिन्दू-संस्कृति की ललित लता—
में लाल सुमन सी छवि वाले ।
क्या निकले अरुण अनेकों रवि,
तम-नाश-कारिणी प्रतिभा ले ॥

अथवा कलियुग-तम नाश हेतु,
यह दीपित दीप शिखायें हों ।
गुरुवर की लव से छूते ही,
मानों धधकी समिधायें हों ॥

श्री एकरसानंद बोल उठे—
"अब से सब आप विरक्त बने ।
व्यष्टित्व भावना है समाप्त,
अब तो समष्टि-संसक्त बने ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब बोले—"गुरुवर ! कृपा हुई,
हम सब को पथ दिखलाया है ।
हम मोह-निशा में सोते थे,
तुमने ही हमें जगाया है ॥

अब भी अपने उपदेशों से,
हम को कृतार्थ करते रहिये ।
प्रभु ! बार बार दर्शन देकर,
मानस-तम को हरते रहिये ॥"

फिर साश्रु-लोचनों से सबने,
उनको निज आश्रम पहुँचाया ।
वैकुंठाश्रम पर आ करके,
नारद ने सबको बतलाया ॥

"हम रात्रि समय आजाने पर,
उस पार गंग के जायेंगे ।
झाऊ के झुरमुट में रहकर,
प्रतिदिन ही रात्रि बितायेंगे ॥"

वह प्रतिदिन रीते हाथों से,
झाऊ के वन में जाते थे ।
हिंस्रक पशुओं के वृन्द वहाँ,
प्रतिदिन बहु शब्द सुनाते थे ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पर उनके मन में भ्रांति कहाँ ?
वह आत्म तत्व अभ्यासी थे ।
वह अडिग-साधना वाले थे,
वे अजर, अमर, अविनासी थे ।।

हिंस्रक पशु आते किन्तु इन्हें,
कुछ देख-देख कतराते थे ।
कुछ सूंघ-सूंघ इनका शरीर,
निज पूँछ दबा भग जाते थे ।।

यह एक मास तक नियम चला,
फिर साथ लिये निज गुरु भाई ।
उस पार गंग की रेती में,
थे घूम रहे कुछ ध्वनि आई ।।

ध्वनि-दिशा पकड़ कर चल देते,
पहुँचे, तो सबके नेत्र खिले ।
अवधूत तपस्वी, योग-निष्ठ,
यतिवर श्री प्रेमानन्द मिले ।।

नारद बोले— "यदि आज्ञा हो,
तो शुचि भोजन पहुँचायें हम ।
प्रतिदिन जो समय आप कह दें,
बस उसी समय पर आयें हम ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मुनिवर बोले—"तुम आ सकते,
भोजन लाओ हम खायेंगे ।
पर आप अकेले आठ बजे,
यदि निर्भय होकर आयेंगे ।।

जिसको प्रभु पर विश्वास अडिग,
जिसको मरने की त्रास न हो ।
वह भोजन हमको ला सकता,
जिसको मुझसे कुछ आस न हो ।।"

गुरुवर बोले— "मैं लाऊँगा",
फिर ठीक समय लाने लगते ।
प्रतिदिन गंगा के पार पहुँच,
वह थाली पहुँचाने लगते ।।

पर एक दिवस सुर सरिता का,
पावन प्रवाह बढ़ जाता है ।
फिर भी वह निर्भय हो करके,
साधक निज चरण बढ़ाता है ।।

था चरण पड़ गया जब शव पर,
कुछ झिझके, फिर साहस आया ।
गुरुवर का मन में ध्यान किया,
तो निज को अविनासी पाया ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साहस अदम्य उर में भर कर,
श्री नारद जी उस कूल गये ।
तमसावृत निविड निशा में वे,
गन्तव्य-मार्ग को भूल गये ।।

तम में भी समता आती है,
तम सबको एक बनाता है ।
झाऊ, रेती सब एक रूप,
साधक उसमें फँस जाता है ।।

पग में कितने काँटे चुभते,
गिरते-गिरते रुक जाते हैं ।
मीलों तक चले, किन्तु फिर भी,
ऋषिवर का पता न पाते हैं ।।

अब अर्ध-रात्रि का समय हुआ,
तब तक ऋषि बोले—"क्या आये ?
है आज परीक्षा पूर्ण हुई,
तुमने कितने चक्कर खाये ।।

कवि क्या कर सकता नारद के,
तप-बल की सफल समीक्षा है ।
लेखनी काँपने लगती है,
कितनी यह कठिन परीक्षा है ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रबल तप-तरणी द्वारा भक्त,
धैर्य की धारण कर पतवार ।
गुरु कृपा की अनुकूल समीर,
प्राप्त कर हो भव-सागर पार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एकादश सर्ग

जभी श्री गुरुवर जी से मिला,
देवऋषि को मुनियों का वेश ।
स्वनिर्मित वैकुंठाश्रम मध्य,
गुफाओं में तब किया प्रवेश ॥

जहाँ पर दो सहस्र थे ग्रन्थ,
पाठ कर करते मनन विचार ।
ढूंढ़ कर उनसे सुन्दर सूत्र,
समझते थे फिर उनका सार ॥

भागवत का एकादश स्कन्ध,
मिला उसमें सुन्दर सुश्लोक ।
कि जिसका पालन यदि हो जाय,
व्यक्ति हो सकता विमल विशोक ॥

शास्त्र, जल, प्रजा, देश औ काल,
कर्म, उत्पत्ति तथा शुभ ध्यान ।
मंत्र, संस्कार, दसों यदि मिलें,
सात्विकी, हो सकता उत्थान ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यही दस रजो गुणी यदि मिले,
रजोगुण जीवन में आ जाय ।
तामसी मिलने से अति शीघ्र,
तमोगुण मानव में छा जाय ॥'

कहाँ पर दसों सात्विकी मिलें,
करूँगा मैं इसका परिशोध ।
यही जीवन का पावन ध्येय,
मुझे अब करना इसका बोध ॥

विचारा यह निज मन के मध्य,
हुये आश्रम से वे गतिमान ।
तीर्थ है शृंगीपुर अभिराम,
वहीं को कर देते प्रस्थान ॥

वहाँ कूकू बाबा की कुटी,
देखकर सुन्दर शुभ एकान्त ।
तपस्या नारद करने लगे,
हृदय उनका था अति निर्भ्रान्त ॥

वहीं था रामकृष्ण सुनिकेत,
जहाँ रहते थे रामानन्द ।
मिलन उनसे जब इनका हुआ,
भर गया मानस में आनन्द ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वहाँ श्री शिवानन्द मिल गये,
अनुज उनके जो महा उदार ।
संत चरणों में जिनकी प्रीति,
किया करते थे आत्म-सुधार ।।

हुआ अब मणि-काञ्चन का योग,
मिल गये दोनों के उर भाव ।
देवऋषि का पाकर सत्संग,
हुआ उनको प्रचार में चाव ।।

वहाँ कानन कुंजों में बैठ,
किया करते नारद जी ध्यान ।
ढूंढ़ने पर मिलते थे नहीं,
न पाता कोई उनका स्थान ।।

निकुंजों में सुरभित थे सुमन,
सुगंधित चलती मंजु-समीर ।
एक दिन शाहजहाँपुर-भक्त,
दयाशंकर हो परम अधीर ।।

ढूंढ़कर बोला— "ओ गुरुदेव !
कहाँ हो मेरे प्राणाधार ।
निमज्जित होती जीवन-तरी,
व्यथित, व्याकुल की सुनो पुकार ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक क्या, करते थे आह्वान,
वहाँ बहु संख्यक भावुक भक्त ।
न पाते जब उनका आवास,
भ्रमण कर होते महा अशक्त ॥

तभी रोने लगते थे हाय !
कहाँ हो ऐ मेरे भगवान ।
आपके दर्शन करने हेतु,
विकल अतिशय हैं मेरे प्राण ॥

उधर कुछ पा जाते जो भक्त,
बुलाते थे उनको सोल्लास ।
वियोगाकुल भक्तों को शीघ्र,
भेजते थे गुरुवर के पास ॥

एक दिन आये एक महन्त,
संत-मंडल लेकर निर्भ्रान्त ।
हाथियों का था संग में वृन्द,
भ्रमण कर आये थे बहु प्रान्त ॥

सुना जब नारद जी का यहाँ,
सुविस्तृत है अति तीव्र प्रभाव ।
तभी दर्शन करने के हेतु,
हुआ उनके मानस में चाव ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहा कुछ भक्तों से सोत्साह,
"संत को ले आओ मम पास ।
सुना है वे सुविवेकी संत,
अस्तु दर्शन का अति उल्लास ।।"

किसी ने कहा— "उच्च वे संत,
न उनको कुछ जगती से आस ।
बुलाने से आयेंगे नहीं,
आप ही जायें, उनके पास ।।"

तभी नारद के दर्शन हेतु,
बैठ कर हाथी पर सोत्साह ।
चल पड़े कुछ भक्तों के साथ,
हृदय में थी दर्शन की चाह ।।

किन्तु नारद-कुटीर के निकट,
रुद्ध गति गज करता चीत्कार ।
न ताड़ित करने से भी चला,
हृदय में करते संत विचार ।।

वस्तुतः ये हैं संत पुनीत,
साधना इनकी दिव्य महान ।
अहा मैं गजारूढ़ हो चला,
हृदय में ले करके अभिमान ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भक्त भी हैं प्रभु के ही तुल्य,
मोद-मद का होता अवसान ।
भूल भारी मुझ से हा हुई,
संत कब होते एक समान ।।

उतर कर हाथी से अब संत,
चल पड़े मद अब था निश्शेष ।
गिर पड़े सम्मुख दंडाकार,
देखकर सुभग मनोहर वेश ।।

"प्रभो ! अब जीवन मेरा धन्य,
धन्य यह भौतिक हुआ शरीर ।"
प्रवाहित हुआ दृगों से नीर,
संत प्रेमातुर-परम-अधीर ।।

बैठ कर प्रवचन सुनने लगे,
देखकर उनका सुन्दर भाव ।
तीर्थ-वासी सब होते धन्य,
पड़ा था उन पर परम प्रभाव ।।

तीर्थ शृंगीपुर से कुछ मील,
निकल जब गई गंग की धार ।
तभी पंडों भक्तों को हुआ,
हृदय में था संताप अपार ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

युगों से गंगा बहती रही,
हमारे पुर के परम समीप ।
किन्तु अब निर्वाणोन्मुख हुआ,
तीर्थ महिमा का पावन दीप ।।

उधर गंगा जी के उस पार,
एक मंदिर था दिव्य महान ।
किन्तु गंगा का वर्धित वेग,
कर रहा था उसका अवसान ।।

उधर भी कोलाहल था मचा,
कृषक-गण की भी हुई पुकार ।
सभी नारद से आकर मिले,
आप ही कर सकते उद्धार ।।

तभी नारद जी होकर मौन,
लगाते प्रभु-चरणों में ध्यान ।
खोल कर फिर नयनों को कहा—
"कष्ट का हो सकता अवसान ।।

आप सब धन का संचय करें,
बताऊँगा फिर विधि सविवेक ।
मातृ-गंगा का अमित प्रभाव,
हरण कर सकतीं कष्ट अनेक ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भगीरथ की सुनकर के विनय,
दिया दर्शन, आई थीं पास ।
प्रार्थना उसकी सुनी विनीत,
पूर्ण कर दी थी जीवन आस ।।

आज भी करके विधिवत यज्ञ,
अनुष्ठानिक विधि से कर दान ।
अर्चना गंगा जी की करें,
यहाँ के यदि सात्विक विद्वान ।।

मनोरथ हो जायेंगे पूर्ण,
लौट आयेगी गंगा-धार ।
हुये सब तीर्थ-पुरोहित मुदित,
श्रवण कर उनके विमल विचार ।।

वित्त संचय कर फिर तो शीघ्र,
हुआ वैदिक विधान से याग ।
प्रार्थना सब करने थे लगे,
भरा था मानस में अनुराग ।।

हुआ उत्सव जैसे ही पूर्ण,
लौट आई गंगा की धार ।
व्याप्त नारद की जय-जय कार,
भरा था सब में हर्ष अपार ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भक्त भगवानदीन' के संग,
आगया पंडों का समुदाय ।
बना लो हमको अपना शिष्य,
जानकर विप्र और असहाय ।।

अत्यधिक समझाया था इन्हें,
बनाना शिष्य न मेरा ध्येय ।
सुनोगे शिक्षायें सुपुनीत,
स्वयं ही मिल जायेगा श्रेय ।।

किन्तु सत्याग्रह उनका बढ़ा,
देखते शिवानंद सविनोद ।
कह रहे चरण छुटेंगे नहीं,
बनालें शिष्य तभी हो मोद ।।

संत श्री शिवानंद के संग,
मित्रता का था सुन्दर-भाव ।
शरण में इससे सबको लिया,
बढ़ा अब सत्संगति का चाव ।।

एक दिन गुरुवर नारद गये,
कहीं थे करने धर्म-प्रचार ।
एक फक्कड़ साधू आ गया,
कह रहा था वह बारम्बार ।।

१—वर्तमान श्री ऋषिवर 'प्रेमानंद' जी सरस्वती ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"सुनो ऐ तीर्थ-पुरोहित वृन्द !
बताते सिद्ध नारदानन्द ।
न हमने पाई उनमें सिद्धि,
प्रशंसायें सब कर दो बंद ।।

न कोई चमत्कार सविशेष,"
सुने ऐसे ही कुछ आरोप ।
एक पंडे को आया तभी,
शीघ्र ही उस फक्कड़ पर कोप ।।

ग्रहण कर, कर में गंगानीर,
कहा— "यदि मैं श्रृंगी संतान ।
श्राप देता हूँ, सप्तम दिवस,
निकल जायेंगे तेरे प्राण ।।

मूर्ख ! गुरुवर के पहिले देख,
कि उनके शिष्यों में क्या शक्ति ।
शब्द यह निश्चित होंगे सत्य,
अगर मेरी सच्ची गुरु-भक्ति" ।।

क्षुधा तत्क्षण ही होती बंद,
श्यामतावृत हो गया शरीर ।
प्रकम्पित हो करता था रुदन,
हुआ वह फक्कड़ परम अधीर ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नगर में चर्चा चलने लगी,
कुतूहल भरने लगा अपार ।
संत की गिरती जाती दशा,
देखकर होता हाहाकार ॥

कह रहा था वह रोकर अरे !
कहाँ हो ? ऐ नारद भगवान ।
हमारी त्रुटियों को कर क्षमा,
बचा लो सत्वर मेरे प्राण ॥

सभ्य नागरिकों के कुछ वृन्द,
जान कर गाड़ी से महराज ।
कहीं कार्यक्रम करने हेतु,
यहीं से निकल रहे हैं आज ॥

दौड़कर स्टेशन पर आगये,
मचाई अतिशय वहाँ पुकार ।
एक डब्बे में बैठा देख,
बुलाते उनको बारम्बार ॥

"अरे लोकोपकार में लीन,
शीघ्र उतारो ऐ गुरु भगवान ।
मर रहा संत एक असहाय,
बचा लो गुरुवर ! उसके प्राण ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कह रहा स्टेशन का अध्यक्ष,
आप क्यों बैठे गुरु भगवान ।
यान तब तक चल सकता नहीं,
न उतरेंगे जब तक श्रीमान ॥

उतरना उनको तब पड़ गया,
छोड़ कर कार्यक्रम अनिवार्य ।
तीव्र-गति से चल पड़ते शीघ्र,
सफल हो भक्तों का सब कार्य ॥

शुभागम नारद का ज्यों हुआ,
हो गये सब निर्भय निश्शंक ।
परम प्रमुदित थे भक्त चकोर,
मिल गया उनका मंजु मयंक ॥

खड़ा था अपराधी की भाँति,
सामने ही वह फक्कड़ संत ।
कह रहा—"मुझे बचा लो नाथ !
हमारे जीवन का अब अंत ॥"

कहा गुरुवर ने—"प्रियवर शीघ्र,
क्षमा कर दूंगा सारे पाप ।
संत की निन्दा मुझ से नहीं,
कभी भी होगी कह दें आप ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रतिज्ञा के स्वर निर्गत हुये,
शीश पर त्योंही आया हाथ ।
"क्षमा तुमको मैंने कर दिया",
श्रवण कर होता भक्त सनाथ ।।

लगी तत्क्षण ही उसको क्षुधा,
कालिमा का होता अवसान ।
देखकर यह लीलायें उन्हें,
सभी कहने लगते भगवान ।।

सभी नास्तिकों ने अब जाना,
आत्मोन्नति में शक्ति प्रबल है ।
अब भी बल है तपस्वियों में,
जिनका अन्तःकरण विमल है ।।

———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

द्वादश सर्ग

श्रृंगी रामपुरी नगरी से,
वैकुंठाश्रम में आ जाते ।
तृषित भक्त चातक से मानों,
स्वाति विन्दुओं को पा जाते ॥

सत्संगति के शुष्क धान्य में,
पड़ता शुभ दर्शन का पानी ।
भक्त चकोरों को शशि मिलते,
रवि पा कमलावलि मुसकानी ॥

मन मयूर से नृत्य कर उठे,
पाकर नारद नव जलधर को ।
विद्युत् गति से व्याप्त हो गई,
सुखद-सूचना यह घर-घर को ॥

चिर वियुक्त गोपों को जैसे,
फिर आकर घनश्याम मिल गये ।
अथवा अवधवासियों को फिर,
मानों सुख-प्रद राम मिल गये ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नवोत्साह था प्रति साधक में,
आश्रम क्या वैकुंठ बना था ।
नारद जी के उपदेशों में,
प्रेम-पूर्ण पीयूष सना था ।।

ये आनन्दमयी घड़ियां अब,
कौन जानता दुख लायेंगी ।
ऋतु-बसंत में निकलीं कलियाँ,
क्या पतझड़ में झड़ जायेंगी ।।

नारद जी ने कहा—"एक दिन,
साधु वही जो ठहर न पाये ।
जल वह दूषित हो जाता जो,
एक ठौर संस्थित हो जाये ।।

अस्तु प्रचार-लक्ष्य को लेकर,
हम को अति सत्वर जाना है ।
गुरुवर का उपदेश मिला जो,
उसको घर-घर पहुँचाना है ।।"

इतना कह कर उठ पड़ते हैं,
सबके नेत्र छलकने लगते ।
शतशः साधक श्री नारद के,
अनुगामी हो चलने लगते ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गंगा-पार किया नारद ने,
सब ही गंगा-पार आ गये।
सब कहते क्यों पाकर छोड़ें,
जब घर में भगवान पा गये॥

श्री नारद आगे बढ़ते पर,
सबको समझाते भी जाते।
प्रेम बँधा है, नेम डोर में,
फिर भी शांति न साधक पाते॥

सबके नेत्र सजल थे, कुछ तो,
आर्त बने, क्रन्दन करते थे।
दशों दिशाओं में निज स्वर से,
वह करुणा-रस को भरते थे॥

कुछ ग्रामीण व्यक्ति दौड़े क्या,
वन को फिर से राम चले हैं।
अथवा फिर द्वापर आ पहुँचा,
मथुरा को घनश्याम चले हैं॥

कुछ रो-रोकर कहने लगते—
"हम सबके अपराध बताओ।
भगवन् ! यदि कुछ दोष हुये हों,
तो फिर प्रायश्चित्त कराओ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जल से हीन, मीन कब रहती,
वैसे तुम बिन प्राण व्यर्थ हैं।
जीवन सब का भार बनेगा,
तुम बिन सब पकवान व्यर्थ हैं ॥

यदि नारद उपदेश न मिलता,
तो जप, तप, व्रत, दान व्यर्थ है।
मेरे राम, कृष्ण, शिव तुम हो,
आप बिना भगवान व्यर्थ है ॥"

गुरुवर नारद ने संस्थित हो,
एक खचित की लम्बी रेखा।
फिर बोले—"देखा तुम सबने,
यह विरंचि की समझो लेखा ॥

मेरी कोटि-शपथ है उसको,
जो रेखा को पार करेगा।
वह मेरे सब उपदेशों का,
सारा श्रम निस्सार करेगा ॥

महा मोह रत वह भारत की,
धर्मोन्नति का बाधक होगा।
वह समष्टि का शत्रु बनेगा,
स्वयं स्वार्थ का साधक होगा ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपनी मार्मिक-शब्दावलि से,
कील दिया, सब खड़े रह गये।
नारद द्रुत गति से चलते, वे,
असमंजस में पड़े रह गये ॥

जैसे रवि निज अरुण-रश्मियाँ,
लेकर अस्ताचल जाता है।
कमलावलियों के जीवन पर,
चिर विषाद ज्यों घिर आता है ॥

वैसे प्रगतिशील नारद जी,
दूर क्षितिज के पार हो गये।
साधक रो-रोकर कहते, हा !
सभी यत्न निस्सार हो गये ॥

कुछ मूर्छित होकर गिर पड़ते,
कुछ फिर उनको समझाते हैं।
महापुरुष सब राग छोड़ कर,
कर्म-योग को अपनाते हैं ॥

गिरते-पड़ते से चलते हैं,
थोड़ा सा पथ, भार हो गया।
सब साधक, चर्चा करते हैं,
हा ! असार संसार हो गया ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वैकुंठाश्रम पर अब अपनी,
कौन सूक्तियाँ समझायेगा ।
कौन मृदुलतम निज वचनों से,
मंजु सुधा-रस बरसायेगा ॥

विविध विचारों के साधक गण,
कौन एकता ला सकता है ।
इस दुरूह परमार्थ-मार्ग के,
साधन सुगम बता सकता है ॥

मातायें क्रन्दन कर कहतीं,
क्या भक्तों के प्राण न आये ।
बच्चे सब रोने लगते हैं,
हा ! मेरे भगवान न आये ॥

उधर देवऋषि चले जारहे,
आगे अपने चरण बढ़ाते ।
मल्लावाँ होकर वह पहले,
सीतापुर नगरी में आते ॥

श्री कालिकाप्रसाद विपिन में,
ठहरे, कुछ उपदेश सुनाये ।
फिर ज्ञानेन्द्र वैद्य से प्रेरित,
धन्धारी के वन में आये ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह मिश्रित का महा विपिन था,
कई मील की परिधि लिये था।
विविध विटप हिंस्रक पशुओं से,
व्याप्त, हृदय को हरण किये था॥

फिर नैमिष की ओर चल पड़े,
चक्र-तीर्थ में स्नान किया था।
ललिता देवी का दर्शन कर,
फिर अरण्य आनंद लिया था॥

व्यास, सूत गद्दी को देखा,
मनु-शतरूपा तप बन आये।
तीर्थ अयोध्या, मणि पर्वत औ,
हंसा-हंसी, विपिन सुहाये॥

पाँडव किला, देवदेवेश्वर,
आदि स्थलों में करते लीला।
घूम-घूम कर दर्शन देते,
फिर देखा था नैमिष टीला॥

यह सब स्थान देखकर नारद—
मुनि लखीमपुर नगर आ गये।
उल्ल नदी के रम्य-पुलिन पर,
शुभ-दर्शन, कुछ भक्त पा गये॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्रैमासिक-अखण्ड कीर्तन का,
अनुष्ठान वर विशद चल रहा ।
विरज-बिहारी के मंदिर में,
यह अखण्ड था दीप जल रहा ।।

जन समाज को वहाँ भक्ति का,
पावन-तम पीयूष पिलाते ।
पुनः सनातन-धर्म सभा में,
मंजु मधुर उपदेश सुनाते ।।

श्री ओयल नरेश ने इनको,
साग्रह अपने भवन बुलाया ।
नगर वासियों को आमंत्रित,
कर इनका उपदेश कराया ।।

फिर वकील श्री रामचन्द्र जी,
श्री नारद से विनय सुनाते ।
"भगवन् ! एक विपिन सुन्दर है,
विविध-भाँति के वृक्ष सुहाते ।।

किसी संत के कर कमलों से,
निर्मित एक गुफा भी सुन्दर ।
तप करने के योग्य स्थान है,
कन्द, मूल, फल हैं अति सुखकर ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मेरा भी मन यहाँ न लगता,
मैं भी भगवन् ! साथ रहूँगा।
भोग-मार्ग कण्टकाकीर्ण है,
योग-पंथ सानंद गहूँगा ॥

कहने हैं श्री जनमेजय ने,
सर्प-यज्ञ था वहीं कराया।
देवकली उसकी कन्या थी,
उसने ही वह विपिन लगाया ॥"

गुरुवर बोले—"वहाँ न रहना,
केवल मुझ को स्थान बताओ।
फिर कर्तव्य-मार्ग के राही !
तुम लखीमपुर में आ जाओ ॥"

पहुँचे तो, तप हेतु बुलाती,
सी पुष्पों की कली-कली थी।
शान्तिदायिनी, मन मोहक सी,
कुंज स्थल की गली-गली थी ॥

मनहर तरु थे, मंजु लतायें,
तप साँचे के मध्य ढली थी।
फूली-फली लिये तरु अवली,
देवकली की वन-स्थली थी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अति-प्राचीन गुफा का फिर से,
नारद जीर्णोद्धार कराते ।
कन्द, मूल, फल संचय करके,
खाते, तप में चित्त लगाते ।

तप सौरभ से कर्षित होकर,
कितने साधक मधुप आ गये ।
कुछ कहते जीवन में दुर्लभ,
हम सच्चा सत्संग पा गये ॥

रामचन्द्र घर जाकर लौटे,
तप में जिसको रस आ जाता ।
उसको भोग-रोग सम लगते,
कब प्रपंच में वह सुख पाता ॥

एक दिवस शिवदत्त मिश्र जी,
नामक एक छात्र आता है ।
वह मैट्रिक-कक्षा में पढ़ता,
गुरुवर का दर्शन पाता है ॥

गुरुवर बोले—"लक्ष्य बताओ",
"मैं क्या जानूँ ?" वह अजान था ।
"आप बता दें", "क्या मानोगे ?"
"हाँ अवश्य", अवदत्त ध्यान था ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुनो—"जीव निज लक्ष्य भूलकर,
भोगों मध्य अटक जाता है ।
अविनाशी है किन्तु विनाशी,
इस प्रपंच को अपनाता है ।।

आत्म-ज्ञान या ब्रह्म-प्राप्ति से,
शाश्वत-शांति सुधा मिलती है ।
शुभ विवेक अरुणोदय होता,
तब मानस कलिका खिलती है ।।

आज यहाँ सत्संग सुनो फिर,
यदा-कदा तुम आते रहना ।
व्यर्थ समय खोना जड़ता है,
सत्संगति को पाते रहना ।।"

यह उपदेश श्रवण कर प्रायः,
वह गुरुवर-समीप आता था ।
जिज्ञासा थी, आत्म-ज्ञान की,
शिक्षाओं को अपनाता था ।।

देवकली के इस उपवन में,
सियाराम पाँडे बसते थे ।
रामचन्द्र जी भी तप द्वारा,
अपने जीवन को कसते थे ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रामचन्द्र के पिता एक दिन,
श्री बनवारी लाल पधारे ।
दीक्षा लेकर, कहा—"चलेंगे ?
क्या भगवन ! अब गेह हमारे ।।"

श्रद्धा से अनुनय करके वह,
इनको फिर लखीमपुर लाये ।
रोकर कहा—"आज तक मैंने,
नहीं पौत्र के दर्शन पाये ।।

पाँच पुत्र हैं किंतु किसी के,
पुत्र नहीं हम अकुलाते हैं ।
आप वशिष्ठ तुल्य ज्ञानी हैं,
फिर भी हम हा दुख पाते हैं ।"

नारद आज्ञा से सुशीघ्र ही,
नैमिष में शुभ यज्ञ कराया ।
वैदिक विद्वानों के द्वारा,
सुत-प्रद सुन्दर मंत्र जपाया ।।

अनुष्ठान यह एक वर्ष का,
पूर्ण नहीं होने पाया था ।
पौत्र-पौत्रिका के उद्भव का,
समाचार सुख-प्रद आया था ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देवकली की वनस्थली में,
कितनी लीलायें दिखलाते ।
आस-पास के भी ग्रामों में,
राम-राज्य का दृश्य दिखाते ।।

कितने ही सकाम भक्तों की,
सभी कामना पूर्ण कराते ।
नारद जी, रहते उस वन में,
तप-मय अपना समय बनाते ।।

तप करते देवकली में,
बहती विवेक की धारा ।
जिसमें निमग्न हो कहते,
साधक, सौभाग्य हमारा ।।

---::०::---

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्रयोदश सर्ग

नारद को सुस्मृति आती,
नैमिष सुन्दर सुषुमा की ।
गह्वर कानन कुंजों की,
अति दिव्य मनोहर झाँकी ॥

सबसे एकान्त, मनोरम,
आकर्षक नैमिष टीला ।
अब वही करें, तत्पर हो,
धार्मिक प्रचार की लीला ॥

शुचि, श्रेष्ठ तीर्थ नैमिष का,
फिर से सुधार करना है ।
रज, तम को दूर भगा कर,
सात्विक विचार भरना है ॥

मुनिवर सहस्र अट्ठासी,
तप जहाँ किया करते थे ।
जग को चरित्र की शिक्षा,
अति दिव्य दिया करते थे ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतना विचारते नारद,
आ पहुँचे नैमिष वन में ।
उत्कट-तप की अभिलाषा,
वे लिये हुये थे मन में ॥

स्वागत में कल-कल स्वर से,
गाती थी गोमा-धारा ।
खग कुल कलरव से बोला—
"नैमिष, सौभाग्य हमारा ॥"

वन के विशाल विटपी भी,
स्वागत में झुक-झुक जाते ।
नारद जी के ऊपर वह,
सुन्दर-तम सुमन गिराते ॥

मनहर मयूर स्वागत में,
नर्तन करने लगते हैं ।
कलि-कल्मष भी निज मन में,
अब तो डरने लगते हैं ॥

कुंजों-कुंजों में विहँसी,
थीं मंजु मनोरम कलियाँ ।
गुन-गुन-गुन सी गाती थीं,
स्वागत में मधुपावलियाँ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

योगेन्द्र तथा नारायण,
श्री शिवानंद आ जाते ।
नैमिष में तप करने को,
श्री प्रेमानंद सिधाते ॥

नैमिष-टीला में कोई,
रहते थे संत मनस्वी ।
उनकी ही भग्न-कुटी का,
करते निर्माण तपस्वी ॥

सेमल-फूलों को कच्चा,
अथवा उबाल कर खाते ।
गूलर, झड़बेरी, पीपर,
पाकर के थे फल लाते ॥

या बला, अतिबला बूटी,
ही छान लिया करते थे ।
बेलों या आम्र-फलों का,
आहार किया करते थे ॥

आँवला भून कर कुछ दिन,
सब साधक मिलकर खाते ।
थे काष्ठ पात्र अति सात्विक,
संचय से चित्त हटाते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निशि का आगम होने पर,
कुटिया न बन्द करते थे ।
साधन में संचय बाधक,
धन से अतीव डरते थे ॥

था नियम कि नैमिष-टीला,
पर दृव्य न चढ़ने पावे ।
निशि-आगम हो तब कोई,
श्री रमणी यहाँ न आवे ॥

सुन्दर निर्मित हो जातीं,
साधन के हेतु गुफायें ।
नारद जी जाकर उनमें,
प्रतिदिन ही ध्यान लगायें ॥

छः मास यहाँ पर चलती,
सुन्दर अखण्ड रामायण ।
था सुप्त तपोवन जागृत,
होते कितने पारायण ॥

प्रति मास अमावस्या को,
नैमिष में लगता मेला ।
आश्चर्य सभी करते थे,
है यहाँ न चढ़ता धेला ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुछ साधु माँगते धन को,
पर यहाँ न धन चढ़ता है ।
अति शीघ्र कुतूहल सबके,
ही मानस में बढ़ता है ।।

कुछ बोले—"भैया ! कोई,
तो धन पहुँचाता होगा ।
कोई प्रयोग के साधन—
सब, सेठ जुटाता होगा ।।

इतने यह संत सुसंस्थित,
क्या खाकर रहते होंगे ?
आवश्यकता पड़ जाने पर,
यह किससे कहते होंगे ??"

कुछ इस सम्भ्रम से आये,
पर गूलर खाते देखा ।
दृग-विन्दु टपकते, उर में,
खिंचती श्रद्धा की रेखा ।।

कहते चरणों में गिरकर,
"मुनिवर ! सुधान्य पहुँचायें ।
आज्ञा अति शीघ्र मुझे दें,
यह गूलर आप न खायें ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मुनिवर नारद ने इन को,
था एक स्थान बिठलाया ।
तप की महिमा का तत्क्षण,
पावन रहस्य समझाया ॥

जीवन का ध्येय बता कर,
उनको कर्तव्य सुझाते ।
वे सबके सब श्री चरणों—
के अनुरागी बन जाते ॥

मिष्ठान्न जहाँ पर होता,
चीटियाँ स्वयं आ जातीं ।
दीपक में लव लगते ही,
शलभावलियाँ मड़रातीं ॥

कब सुमन बुलाने जाते,
मधुपावलि स्वयं सिधाती ।
वीणा-ध्वनि यदि रसमय है,
तो मृगी स्वयं ठग जाती ॥

बस इसी भाँति गुरुवर का,
उपदेश सुधा रस पाने ।
अब शतशः सत्संगी हैं,
लग जाते आने-जाने ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब विनय यही करते थे,
"गुरुवर ! मम ग्राम पधारें ।
ग्रामीण व्यक्ति भी अपने,
जीवन के लक्ष्य विचारें ॥

हम ढूंढ़ रहे थे, जीवन—
पथ दर्शक कहाँ मिलेगा ?
कब अरुणोदय को पाकर,
आशा का कमल खिलेगा ?

जैसे कस्तूरी मृग के—
है नाभि मध्य कस्तूरी ।
पर उस सुगन्धि को पाने—
में रहा नापते दूरी ॥

उस भांति भटक कर आये,
हम व्रज, प्रयाग या कासी ।
हा नहीं जानते थे तुम,
नैमिष में घट-घट वासी ॥"

अब तो कार्यक्रम बनते,
साधक सत्संग चलाते ।
गुरुवर केवल कुछ क्षण को,
हैं पहुँच वहाँ पर जाते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वागत में कितने ग्रामों,
के आ जाते नर-नारी ॥
उपदेश-सुधा को पीकर,
होते कृतकृत्य सुखारी ॥

ओयल-नरेश इस नैमिष,
में एक बार हैं आते ।
"पूर्णिमा-महोत्सव होगा",
गुरुवर से विनय सुनाते ॥

"प्रार्थना हमारी चरणों,
में आप वहाँ पर आवें ।
अपने प्रवचन का सब को,
पावन पीयूष पिलावें ॥"

गुरुवर बोले—"उस दिन तो,
उदईपुर हम को जाना ।
है दीन-भक्त, पर अपना
है हम को वचन निभाना ॥"

ओयल-नरेश तब समझे,
यह सच्चे संत तपस्वी ।
यह नृप या दीन जनों में,
सम-दर्शी, महा मनस्वी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"गुरुदेव ! आप में समता,
मैं तव-पद-रज अनुरागी ।
शुचि-संत आप सा पाकर,
यह तीर्थ बना बड़-भागी ॥

आज्ञा लेकर गृह जाते,
निज रानी को बतलाया ।
उसके भी उर पर पड़ती,
नृप-श्रद्धा की कुछ छाया ॥

दर्शन करने को आतीं,
निज पौत्र संग में लाईं ।
सत्संग-सुधा को पीकर,
मानस में अति हरसाईं ॥

निशि का आगम होते ही,
था साधक एक सिधाया ।
रानी के सम्मुख गुरुवर—
का नियम शीघ्र बतलाया ॥

"निशि-मध्य यहाँ पर कोई,
नारी न ठहरने पाती ।"
"इस समय कहाँ को जावें ?"
वह निज-मन में अकुलाती ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुरुवर बोले—"दूरी पर,
कुछ तरुवर वहां दिखाते ।
हम प्रचुर काष्ठ को सत्वर,
ही उसी स्थान पहुँचाते ।।

नैमिष वन में आईं थीं,
तप को शतरूपा-रानी ।
मानस में पढ़ती होंगी,
उनकी अति दिव्य कहानी ।।

सौभाग्य आप को तप की,
यह मिलतीं स्वर्णिम-घड़ियाँ ।
इससे निश्चित कट जातीं,
भव-बंधन की सब कड़ियाँ ।।"

रानी भी आज्ञा पाकर,
तरुओं के तले सिधाई ।
प्रज्वलित काष्ठ को तापा,
वह निशि इस भाँति बिताई ।।

वह सोच रही, श्री नारद—
हैं नहीं नियम के कच्चे ।
इस युग में ऐसे दुर्लभ,
हैं संत नियम के सच्चे ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सोचा—अब इनकी सन्निधि,
में ही, व्रत नियम चलेंगे ।
इनकी आज्ञा से साधन,
सब फूलें और फलेंगे ॥

रानी घर जाकर बोली—
"जैसा तुमने बतलाया ।
नियमों में उनको सच्चा,
वैसा ही हमने पाया ॥"

ओयल नरेश कुछ घर में,
थे उत्सव करने वाले ।
हो सुष्ठु मनोरंजन, यह,
सब सचिव जोर थे डाले ॥

गुरुवर से नृप ने पूछा—
तब नारद तत्क्षण बोले ।
"राजन् ! तुम अति धार्मिक हो,
पर साथ-साथ ही भोले ॥

इस समय राज्य में दुख है,
भीषण अकाल की छाया ।
कितने भूखों मरते हैं,
यह है अदृष्ट की माया ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जितना अनुमानिक व्यय हो,
उससे अन्नादि जुटाओ।
अपने सम्मुख दुखितों को,
तुम अन्न, वस्त्र बटवाओ॥"

गुरुवर की आज्ञा पाते,
हो जाती वही व्यवस्था।
शतशः ही दीन पहुँचते,
सक्रिय थी सेवा संस्था॥

कुछ अन्न, वस्त्र को पाकर,
थे दीन नाचने लगते।
कुछ जयजयकार मचाते,
कुछ प्रेम-सुधा में पगते॥

अब कई मास नृप द्वारे,
थे दीन सहस्रों आते।
राजा भी अपने मन में,
सात्विक विचार यह लाते॥

धन का उपयोग यही है,
हो पूर्ण दीन की आसा।
आशीर्वाद देती है,
उनकी पूरित अभिलाषा॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नारद-शिक्षा मानेंगे,
जब तक जीवन में श्वासा ।
जीवन में अद्भुत देखा,
यह शिक्षा-पूर्ण-तमासा ॥

निर्लोभी, निस्पृह, सद्गुरु ही,
दे सकते हैं, तात्विक ज्ञान ।
उनके ही शब्दों का होता,
मानस मध्य प्रभाव महान ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चतुर्दश सर्ग

नव किसलय परिधान पहनती,
प्रचुर-पादपों की प्रिय पाँत ।
स्वच्छ-सरोवर में, सौरभ-मय,
परम-प्रफुल्लित थे जलजात ।।

वौरे आम्र-काननों में था,
कूहू-कूहू कोकिल का गीत ।
कहीं मयूरों का नर्तन था,
कहीं भागते मृग भयभीत ।।

पुष्पित, अरुण पलाश पुष्प थे,
मानों लिये हुये सन्यास ।
कलि-कलमष की चिता धधकती,
उसी लालिमा का आभास ।।

अथवा नैमिष के विषाद की,
विभावरी का अब है अन्त ।
यह प्रभात का अरुणोदय ले,
आया है ऋतुराज बसन्त ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बेला, जुही, चमेली फूलों,
तथा चाँदनी सदा बहार ।
पाटल, गुड़हर फूल रहे थे,
सेमल औ कनैर कचनार ॥

प्रचुर पुष्प-सौरभ-रस पीने,
तरुओं पर भौरों की भीर ।
शीतल, मंद, सुगन्ध चल रही,
कितनी मादक मंजु समीर ॥

जैसे पुष्पित-सुमन विपिन में,
वैसे श्री नारद मुनिराज ।
विविध साधना के सुमनों से,
सज्जित लेकर संत समाज ॥

सौरभ था प्रचार, कर्षित हो,
लगती भक्त भृङ्ग की भीर ।
भक्ति-ज्ञान, वैराग्य विमिश्रित,
साधन की थी त्रिविध-समीर ॥

प्रातः तीन बजे ही उठकर,
सब साधक करते प्रभु-ध्यान ।
आसन, प्राणायाम, धारणा,
शुभ-समाधि, ईश्वर-प्रणिधान ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नारद स्वयं तपस्या करते,
साधक, भक्ति-सुधा सर मीन ।
जप संयम सत्संग, श्रवण या,
मनन, निदिध्यासन में लीन ॥

तृण निर्मित थीं मंजु कुटीरें,
जिनमें वेष्टित लता वितान ।
साधन के अन्तर्गत होता—
था वृक्षारोपण, श्रमदान ॥

नारद जी के मन में आया,
नयी स्फूर्ति का हो संचार ।
तभी सफलता से हो सकता,
साधन, तप, सत्संग, प्रचार ॥

चरक-संहिता में वर्णित है,
ऋषि करते थे, काया-कल्प ।
किन्तु आजकल इस विधान के,
वेत्ता वैद्य विश्व में अल्प ॥

ज्योंही यह संकल्प उठाते,
मन में श्री नारद-भगवान ।
नेत्र निमीलित कर संयत हो,
केन्द्रित करते अपना ध्यान ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्यों ही शाहजहाँपुर-वासी,
वैद्य-प्रवर श्री काशी नाथ ।
देखा सम्मुख खड़े हुये हैं,
श्रद्धा से जोड़े निज हाथ ॥

गुरुवर को प्रणाम कर बोले—
"कुछ सेवा दे दें मुनिराज ।"
"कैसे आये ?" "मिली प्रेरणा—
देखूं चल कर संत-समाज ॥"

"अच्छा सुनो वैद्य जी आये,
उचित समय पर मेरे पास ।
काया-कल्प कराओ मुझ को",
तभी वैद्य ने ली निश्वास ॥

वह विचारते—यहाँ असम्भव,
सकल वस्तुओं का है मेल ।
एक-एक मन शहद, धेनु घृत,
स्वरस आँवला सर्षप तेल ॥

गुरुवर ने पूछा—"क्या चिन्ता ?"
बतलाया तब सब सम्भार ।
"समय-स्वल्प है, कैसे होगा,
यह मन में कर रहा विचार ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पाँच दिवस के बाद बन रहा,
शुभ मुहूर्त, दिन कितने अल्प ।
समय यही फिर वर्ष बाद ही,
हो सकता है काया-कल्प ॥

चैत्र-मास है, कहीं-कहीं ही,
आमलकों में फल-दर्शन ।
खेद यही पहली आज्ञा का,
हो जायेगा उल्लङ्घन ॥

सुनते ही विद्युत सी दौड़ी,
दौड़ा वटु नारायण नाम ।
गायत्री जप साथ तोड़ता,
प्रचुर आँवला वह निष्काम ॥

चारों ओर साधकों का दल,
दौड़ पड़ा लेकर उल्लास ।
किन्तु शुद्ध गोघृत या मधु का,
था अभाव, सब हुये निरास ॥

गुरुवर में अदम्य-साहस था,
निकल गये थे अब दिन चार ।
तब तक ओयल से आ पहुँची,
भक्त-प्रवर भूपति की कार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुशल-प्रश्न पश्चात् बताया,
"रानी अनुष्ठान में मग्न ।
किन्तु आपके शुभ दर्शन को,
उनकी वृत्ति आप में लग्न ॥

काया-कल्प सूचना पहुँची,
आप रहेंगे अब एकान्त ।
इसी हेतु दर्शन करने को,
रानी तत्पर और अशान्त ॥

एतदर्थ अति शीघ्र वहाँ पर,
दर्शन दें गुरुवर महराज !
समयाभाव अगर हो तो फिर,
लौटायेंगे तत्क्षण आज ॥"

श्री नारद अति शीघ्र पहुँचते,
रानी मिली जोड़ कर हाथ ।
"क्या-क्या वस्तु जुटानी मुझ को,
आज्ञा देकर करें सनाथ ॥"

यतिवर बोले—"एक-एक मन,
गोघृत, मधु औ सर्षप तेल ।
शुद्ध स्वच्छ मिलना क्या सम्भव ?
जिसमें तनिक न होवे मेल ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रभु की कृपा वहाँ संचित था,
उपयोगी सब ही सम्भार ।
छनवा कर विशुद्ध-पात्रों में,
अर्पित किया सहित आभार ।।

नारद बोले—"कल मुहूर्त है,
जाना अभी अस्तु है आज ।"
फिर राजा ने कहा विनय कर—
"मुझ को आज्ञा दें महराज ।।"

तभी देवऋषि बोले—"तुम को,
एक दिये जाता हूँ कार्य ।
गायत्री जप करने वाले,
कुछ द्विज हैं मिलना अनिवार्य ।।

गायत्री जप कर वे तोड़ें,
शुद्ध आँवले, गिरे न एक ।
शीघ्र एक मन, नैमिष वन में,
पहुँचायें नृप ! सहित विवेक ।।"

"जो आज्ञा"—कह कर नृप बोले—
"सेवा देकर आज यथार्थ ।
मुझ जैसे अल्पज्ञ जीव को,
किया आपने नाथ ! कृतार्थ ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यतिवर लौटे सामग्री ले,
सब में छाया हर्ष अपार ।
शुद्ध वस्तुयें देख वैद्य जी,
करने लगते जय-जयकार ॥

राजा ने आँवले तुड़ा कर,
भर दी अपनी सुन्दर जीप ।
अर्ध-रात्रि उपरान्त शीघ्र वह,
आ जाती देवर्षि समीप ॥

पंच-कर्म में वमन चला फिर,
हुआ विरेचन तीव्र नितान्त ।
विगुणित वायु, नाटिका छूटी,
साधक रोने लगे, अशान्त ॥

चन्द्रोदय रस से आ जाती,
प्रवल नाटिका में जब शक्ति ।
काशीनाथ वैद्य पर होती,
सभी साधकों को तब भक्ति ॥

स्वदेन की विधि अति विचित्र थी,
खुदवा कर भट्टी अभिराम ।
बिछवा दीं फिर उसके ऊपर,
वन औषधियाँ ललित ललाम ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उस पर नारद को लिटवाया,
ऊपर से कर आवृत टीन ।
नीचे बहु प्रज्वलित काष्ठ थे,
साधक गण, निज मन में दीन ।।

इतने यतिवर तप्त हो गये,
देखा जभी लगा कर यन्त्र ।
पारा चढ़ा एक सौ बाइस,
अंकों तक, सब जपते मन्त्र ।।

लम्बे टप में तैल भरा था,
डुबा दिया उसमें सब गात ।
शिर पर तैल-धार जब छोड़ी,
मिली चेतना तब अवदात ।।

इतनी कोमल देह हो गई,
लचने लगीं अस्थियाँ सर्व ।
शोणित, मांस शुद्ध हो जाते,
हर्षित थे सब, मानों पर्व ।।

शिरो विरेचन आदि कर्म कर,
करते बन्द गुफा में वास ।
जहाँ सूर्य की एक किरण भी,
पहुँच न पाती इनके पास ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जल का पीना बन्द हो गया,
भृङ्गराज के रस का पान ।
थोड़ा सा आँवला रसायन,
पाते थे यह संत सुजान ।।

एक पाव गो दुग्ध मिल रहा,
गोघृत भी मिलता अभिराम ।
स्वेद तथा मल-मूत्र मध्य भी,
आने लगी सुगन्धि ललाम ।।

नूतन बालक के शरीर सम,
हुआ सुकोमल मंजु शरीर ।
सुस्मृति, स्फूर्ति, बुद्धि बढ़ जाती,
मानस हो जाता अति धीर ।।

मन एकाग्र हुआ जैसे ही,
छुटा एक दम देहाध्यास ।
दिव्य-अलौकिक सुख में डूबे,
दो दिन तक थी भूख न प्यास ।।

चिंतित होकर तभी वैद्य ने,
ओम-ओम कह बारम्बार ।
जागृत किया समाधि भाव से,
ध्यान जनित आनंद अपार ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तीन मास की अवधि बीतते,
चर्चा फैली, चारों ओर ।
पूरणमासी को निकलेंगे,
दौड़े बालक, वृद्ध, किशोर ॥

उमड़ पड़ी जनता प्रान्तों से,
चलती नौ दिन स्पेशल रेल ।
आये कुछ लहड़ू, एक्कों से,
कुछ तो बसें बन गईं मेल ॥

अनुमानिक नौ दिन तक रहती,
जनता भी पच्चीस हजार ।
किन्तु पूर्णिमा को दर्शन हित,
आई थी अति भीड़ अपार ॥

पहिले से ही बना हुआ था,
दर्शन-हित सुन्दर पण्डाल ।
दर्शन करने को, सब जनता,
उसमें ही दी गई बिठाल ॥

श्री नारद गैरिक वस्त्रों पर,
एक श्वेत अंचल को तान ।
छिप कर पहुँचे मंजु मंच पर,
प्रकट हुये देवर्षि महान् ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दर्शन कर सब खड़े हो गये,
यतिवर फिर आ गये कुटीर ।
अब दर्शन करने को होते,
सब दर्शक-गण महा अधीर ॥

व्यवस्थापकों के द्वारा तब,
मिलता यह सब को निर्देश ।
एक ओर से सब निकलेंगे,
एक ओर से उचित प्रवेश ॥

गुरुवर छत पर खड़े हुये थे,
आते थे दर्शक बस आठ ।
विविध वेदपाठी करते थे,
वैदिक मन्त्रों का शुभ पाठ ॥

रुपये में पुष्पों की माला,
घास माल के आने चार ।
विक्रय करके परम मुदित थे,
नैमिष के सब मालाकार ॥

नव दिन तक दर्शन करने को,
लगी रही थी भीड़ अपार ।
प्रहरी सभी सजग रहते थे,
जिन पर था रक्षा का भार ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतने दिन सब रहे सुरक्षित,
हुई न क्षति, सब थे अम्लान।
बिच्छू, साँप शांत थे मानों,
वे भी करते प्रभु का ध्यान ॥

विस्तर उठा-उठा जब देखा,
नीचे लेटे हुये भुजंग।
कहीं मिलीं बीछियाँ अनेकों,
छुआ न था भक्तों का अंग ॥

भंडारा भी भाव-पूर्ण था,
परस रहे थे सब सोल्लास।
किसी वस्तु की कमी नहीं थी,
सक्रिय सभी बन गये दास ॥

आयुर्वेदिक शुद्ध रीति से,
रही न जिसमें त्रुटि थी अल्प।
ऐसा सफल हुआ नैमिष में,
श्री नारद का काया-कल्प ॥

काया-कल्प प्रयुक्त महौषधि,
कुष्ठी एक चयन करता।
श्रद्धा से उपयोग किया तो,
उसका सकल रोग हरता ॥

---:o:---

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पंचदश सर्ग

ऋतुवर वसन्त में नूतनता,
विटपों में नव किसलय आये ।
नव-जात विहंगों के शिशुओं,
ने नूतन मंजु पंख पाये ।।

मद-मत्त मयूर-वृन्द नाचे,
नव-पंखों में नव-रंग लिये ।
निज देह-कल्प से नारद भी,
नव जीवन नूतन ढंग लिये ।।

भाषण में भी नूतनता थी,
नूतन उद्‌गार निकलते थे ।
नव दर्शन, नूतन वाणी से,
नूतन सुविचार निकलते थे ।।

नारद बोले—"सुख मिल सकता,
क्या भूपति अथवा वासव को ।
एकान्त निवासी मुनि पीते,
जिस परम शांति के आसव को ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैंने इतने दिन गुफा-मध्य,
जो ध्यान जनित सुख पाया है।
वह सुख समाज में कभी नहीं,
मेरे जीवन में आया है॥

अब तो एकान्त गुफा वासी—
बन कर मुझ को तप करना है।
बाहर का सब कुछ देख लिया,
अब अन्तर-मध्य उतरना है॥

परमेश्वर परम-प्रकाशी का,
उस अच्युत, अज, अविनासी का।
अब दर्शन करना है मुझ को,
घर में ही घट-घट वासी का॥

अन्वय-व्यतिरेक-भावना से,
अभिव्यापित जिसकी सत्ता है।
तरुओं के पत्ता-पत्ता में,
जिस विभु की व्यक्त महत्ता है॥

जिसकी आभा से आभासित,
नभ में रवि, चन्द्र, सितारे हैं।
जिसने सुमनों को सौरभ दी,
या सुन्दर रंग सँवारे हैं॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जग की हलचल से दूर कहीं,
उस विभु का पता लगाऊँगा।
या तो यह देह नष्ट होगी,
अथवा फिर उसको पाऊँगा ।।

मन-मीन जहाँ तल्लीन हुआ,
इसको फिर वहीं लगाना है ।
इस जीवन में ही परम लक्ष्य,
निज जीवन धन को पाना है ।।

सम्मान, प्रतिष्ठा, परिचय ही,
उद्देश्य-प्राप्ति के बाधक हैं ।
जनता में कभी नहीं रमते,
सच्चे प्रभु के आराधक हैं ।।"

नारद-शब्दों को सुनते ही,
जनता में हाहाकार हुआ ।
दर्शनानन्द में डूबे थे,
अब करुणा-रस संचार हुआ ।।

नारद जी गुफा-मध्य जाते,
सब साधक-गण अकुलाते हैं ।
शतशः सहस्रशः व्यक्ति वहाँ,
निज को अनाथ सा पाते हैं ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सबके नयनों से वह निकली,
अब अश्रु-बिन्दुओं की धारा ।
क्या सचमुच ही ओझल होगा ?
इन कोटि-दृगों का दृग-तारा ॥

कितने जीवन खोजते रहे,
तब सच्चा पथ-दर्शक पाया ।
रीते हाथों युग बीत गये,
अब पाने का अवसर आया ॥

जिनसे आशा थी चातक को,
यह स्वाती-नीर पिलायेंगे ।
पीयूष-प्रवर्षण के द्वारा,
जीवन की तृषा बुझायेंगे ॥

पर कौन जानता था, जलधर,
दर्शन देकर छिप जायेंगे ।
अपने इस दृढ़-निश्चय द्वारा,
अब हम पर उपल गिरायेंगे ॥

कुछ उच्च स्वरों से बोल उठे—
"यदि आप यहाँ से जायेंगे ।
तो हम भी भोजन त्याग यहीं,
नैमिष में प्राण नशायेंगे ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नैमिष के तीर्थ-पुरोहित भी,
तार-स्वर से रोने लगते ।
ब्रह्मा[१], बाँके[२], मन्ना[३], शोभा[४],
अत्यन्त विकल होने लगते ॥

मातायें क्रन्दन करती थीं,
बच्चे दृग-धार बहाते थे ।
कुछ विकल भाव से भू लुंठित,
कुछ सदय उन्हें समझाते थे ॥

कुछ कहते—"प्रेम लगा करके,
गुरुवर ! अब हमें भगाते क्यों ?
आनन्द-प्राप्ति हित आये थे,
अब गुरुवर ! हमें रुलाते क्यों ??"

कुछ साधक नारद-निकट गये,
जनता की दशा बताते हैं ।
कुछ प्रबलाग्रह करके उनके,
श्री चरणों में पड़ जाते हैं ॥

यतिवर ने मन संयत करके,
ज्योंही निज-ध्यान लगाया है ।
त्योंही प्रकाश मय रूप लिये,
उर में नैमिष-वन आया है ॥

१—पं० ब्रह्मानन्द जी, २—पं० बाँकेलाल जी, ३—पं० मन्नालाल जी, ४—पं० शोभालाल जी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वह बोला—"हे मुनि जन नायक !
भक्तों के प्राणाधार तुम्हीं ।
मेरा कलियुग के पापों से,
अब कर सकते उद्धार तुम्हीं ॥

विघटित है भक्तों का समाज,
तुम एक-सूत्रता ला सकते ।
असहाय-साधकों को सुन्दर,
शुचि-साधन सुगम बता सकते ॥

मैं चिर-अतीत के संतों की,
संसिद्धि तुम्हीं में भर दूँगा ।
तुममें अपने को ऐ नारद !
मैं अन्तर्भावित कर दूँगा ॥

श्री व्यास, सूत, शौनक आदिक,
के स्वर वाणी में आयेंगे ।
हम निराकर बन साथ-साथ,
पावन प्रचार में जायेंगे ॥

जन जन-मन विमल बना दे जो,
ऐसा पावन प्रवचन होगा ।
पद युगुल जहाँ संस्थित होंगे,
वह सुस्थल नैमिष वन होगा ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तब तो नारद की मुख-मुद्रा,
फुल्लाम्बुज सी खिल जाती है।
दृग-खोल हुये सस्मित ज्यों ही,
सब को निधि सी मिल जाती है ।।

"मेरा सबसे सन्देश कहो,
यदि जनता मम सहयोग करे।
तो यह शरीर भी गुफा त्याग,
निज तप का सफल प्रयोग करे ।।"

सबकी तत्क्षण स्वीकृति आई,
फिर नारद सभा-मध्य आये।
चिर-तृषित चातकों ने मानों,
नूतन जलधर-दर्शन पाये ।।

रवि रश्मिजाल अरविन्दों को,
चन्द्रानन चारु चकोरों को।
जिस भाँति प्रफुल्लित कर देता,
घन-मंडल वन में मोरों को ।।

शलभों ने दीप शिखा पाई,
मधुपों को सौरभ-पान मिला।
कुमुदावलि को चन्द्रिका मिली,
चकई को स्वर्ण-विहान मिला ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जनता को नारद का दर्शन,
जैसे दरिद्र को भूति मिले ।
या ब्रह्म-ज्ञान की मोद मयी,
योगी को शुभ अनुभूति मिले ॥

जय-जय कारों के बीच तभी,
वह सभा-मंच पर आते हैं ।
फिर अपने विमल विचारों को,
सत्संग-मध्य बतलाते हैं ॥

"मेरी इच्छा, इस नैमिष में,
सुन्दर चरित्र की शिक्षा हो ।
वर्णाश्रम-विधि पर चलने की,
साधन-मय सफल समीक्षा हो ॥

काशी में गंगा के तट पर,
मैं घूम रहा, सद्भाव लिये ।
श्री महामना मालवी वहाँ,
मिलते प्रचार का चाव लिये ॥

मैं बोल उठा उनसे—"विद्वन !
तुम जीवन में कृत-कार्य बने ।
शुभ विश्व महाविद्यालय की,
रचना करके, उर-धार्य बने ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उस महा मनस्वी को देखा,
नयनों से आँसू बहते थे ।
वाणी में करुणा मिश्रित थी,
रो-रोकर मुझसे कहते थे ।।

"इस विद्यालय की रचना कर,
मम उर में पश्चात्ताप हुआ ।
उद्देश्य हमारा पूर्ण नहीं,
इससे अतिशय-संताप हुआ ।।

मेरी इच्छा थी, छात्र सभी,
विद्यालय में तप-निष्ठ बनें ।
गौतम, कणादि, अंगिरा, अत्रि,
भृगु, वेदव्यास, वशिष्ठ बनें ।।

मेरा यह मानस रोता है,
कुछ भी न हमारा इष्ट हुआ ।
अधिकांश छात्रगण धर्म भूल,
कापुरुष व कम्यूनिष्ट हुआ ।।"

मैंने पूछा—"क्या कमी रही ?"
वे बोले—"पद्धति-भेद हुआ ।
पाश्चात्य-प्रणाली शिक्षा की,
अपना कर, उर में खेद हुआ ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यदि वैदिक-पद्धति पर चलते,
तो क्यों हम को रोना पड़ता ।
जीवन के सारे श्रम, साधन,
क्यों व्यर्थ हाय खोना पड़ता ।।"

उनका वेदना-व्यथित होते,
जब मैंने उर-अन्तर देखा ।
तो उस विद्वान् मनस्वी के,
प्रति उपजी करुणा की रेखा ।।

मैंने तब कहा—"मालवी जी !
यह भूल आप की शूल बनी ।
कर्तृत्व-शक्ति थी प्रबल किंतु,
निज-संस्कृति के प्रतिकूल बनी ।।

शशि-रचना करते राहु बना,
यह सब अदृष्ट की माया है ।
जीवन भर चलते रहे किंतु,
निज-लक्ष्य न अब तक पाया है ।।

मैं नैमिष-तीर्थ तपोवन में,
यह त्रुटि समूल ही हर दूंगा ।
शिक्षा में प्राच्य-प्रणाली का,
अनिवार्य-रूप मैं कर दूंगा ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आदर्श हमारे भारत में,
शिक्षा की पूर्व-प्रणाली थी ।
तप मय, सात्विक, निःशुल्क, विमल,
ऋषियों ने यहाँ निकाली थी ।।

सब छात्र ब्रह्मचारी बन कर,
करते थे विद्या का अर्जन ।
भिक्षाटन द्वारा काम, क्रोध,
आदिक होते थे दोष-शमन ।।

जगती की सभी नारियों में,
मातृत्व-भावना आती थी ।
अध्यात्म-चेतना भी उनके,
शुभ-अन्तर में प्रकटाती थी ।।

ऋषियों के शुभ-संस्कारों में,
उनका जीवन ढल जाता था ।
शिक्षा के साथ-साथ उनका,
मानसिक-रोग गल जाता था ।।"

श्री महामना होकर प्रसन्न,
बोले—"अति सत्वर आऊँगा ।
प्राचीन तपोवन नैमिष को,
मैं अपना शीश झुकाऊँगा ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"साधको ! समय है ये विचार,
अब यहाँ शीघ्र सफलित होंगे ।
मम ब्रह्मचर्य-आश्रम में वह,
प्राचीन-नियम प्रचलित होंगे ॥

जो स्वयं अशान्त हृदय वाला,
वह विश्व-शांति क्या कर सकता !
जो कामी, क्रोधी, लोभी है,
वह काम, क्रोध कब हर सकता ??

मैं इस कानन में तपे हुये,
शुचि गृहस्थाश्रमी लाऊँगा ।
उनको भी सादर, स्नेह-पूर्ण,
निज आश्रम-मध्य बसाऊँगा ॥

इस आश्रम में होंगे वनस्थ,
गृह त्याग-त्याग जो आयेंगे ।
व्यष्टित्व-भावना त्याग वही,
जग को सन्मार्ग दिखायेंगे ॥

नैमिष के कुंजों-कुंजों में,
भर दूंगा ऐसे सन्यासी ।
जिनकी अति प्रखर तपस्या से,
दर्शन देंगे अज, अविनासी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

योजना रूप गोवर्धन है,
यद्यपि हम उसे उठायेंगे ।
सहयोग रूप में आप सभी,
फिर भी निज हाथ लगायेंगे ।।"

सभी साधक तब कहने लगे—
"करेंगे हम सम्यक् सहयोग ।
हमारा तन, मन, धन सर्वस्व,
आप कर लें इन का उपयोग ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

षोडश सर्ग

पूज्य नारद के श्री गुरुदेव,
लिये नैमिष-दर्शन की आश ।
पदार्पण करते जब सस्नेह,
साधकों में था परमोल्लास ।।

कलित कदली-स्तम्भों पर मंजु,
बँध गई सुन्दर बन्दनवार ।
'स्वागतम्' से अंकित पट खंड,
लिये स्वागत में सज्जित द्वार ।।

खड़े स्टेशन के बाहर अश्व,
हस्ति, रथ, शिविका आदिक यान ।
तुमुल जय-जयकारों के बीच,
रेल से उतरे गुरु भगवान ।।

शीघ्र उनको कर शिविकारूढ़,
वहन करते नारद सानन्द ।
नृपति ओयल पत्नी के तीन,
मच गये भ्राता, परमानन्द ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूज्य गुरुवर के स्वागत हेतु,
पधारे थे सहस्रशः व्यक्ति ।
नगर नैमिष-वासी चल पड़े,
लिये मानस में अनुपम भक्ति ।।

चली शोभा-यात्रा जब दिव्य,
जल पड़े अगणित दीप ललाम ।
चक्र पर दीपावलि की छटा,
दिखाती थी अतिशय अभिराम ।।

देवऋषि-काय कल्प के पूर्व,
घटित-घटना का यह शुभ चित्र ।
हृदय में चित्रित होता जभी,
भाव बनते तब परम पवित्र ।।

जहाँ गुरुवर का प्रवचन हुआ,
जहाँ पर पड़े चरण जलजात ।
वहीं नारद विद्यालय खुला,
हिन्दु-संस्कृति का हुआ प्रभात ।।

शीघ्र कर त्याग-पत्र का दान,
पधारे थे श्री 'बाबूराम' ।
ब्रह्मचारी-गण कहने लगे,
उन्हें 'चाचा जी' आठो याम ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आप संरक्षक पद पर हुये,
बने कुलपति, शिवदत्त समोद ।
ब्रह्मचर्याश्रम बनता दिव्य,
सकल साधक सात्विक सविनोद ॥

पूज्य नारद की आज्ञा हुई,
आ गये, भाई लक्ष्मीचन्द ।
बन गये, शिव-पूजन जी यहां,
प्रथम वानप्रस्थी सानन्द ॥

खुला आध्यात्मिक विद्यापीठ,
आ गये ऋषिवर आत्मानंद ।
देखकर आश्रम, अति ही दिव्य,
हुआ उनके उर में आनन्द ॥

'रामसेवक' नामक अति प्रखर,
फतेगढ़ विद्यालय का छात्र ।
एक भाषण नारद का सुना,
प्रफुल्लित होता उसका गात्र ॥

ग्रीष्म-अवकाश मध्य सोत्साह,
आ गया श्री नारद के पास ।
अलौकिक शांति तथा आनन्द—
प्राप्ति की थी उर में अभिलाष ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसे गृह में सब करते प्रेम,
किन्तु वह बालक परम-विरक्त।
साधना अतिशय करने लगा,
बन गया नारद-पद-अनुरक्त ॥

देव-वाणी पढ़ने के हेतु,
प्राप्त कर गुरुवर का निर्देश।
रहा नरवल, लक्ष्मणपुर-मध्य,
मिला तब तक उसको आदेश ॥

छोड़ कर पढ़ना, लिखना शीघ्र,
यहाँ आ जाओ मेरे पास।
प्राप्त कर आज्ञा, आया कहा—
"उपस्थित श्री चरणों में दास ॥"

"ब्रह्मचर्याश्रम में अब रहो,
यहीं पर करना शुभ आवास।
आत्म-ज्ञानी हो इससे नाम,
तुम्हारा रखता वेदव्यास ॥

आज से तुम ही कुलपति हुये,
मिला तुम को पावन अधिकार।
साथ में रक्षक 'लल्लू सिंह',
सुरक्षा का है इन पर भार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूज्य नारद जी करते भ्रमण,
किया करते थे, धर्म-प्रचार ।
मोह दल-दल में डूबी हुई,
सकल जनता का परमोद्धार ॥

कानपुर प्रान्त मध्य अभिराम,
एक 'मंगलपुर' नामक ग्राम ।
पधारे नारद जी जब वहाँ,
आगई, जनता सुन कर नाम ॥

पूज्य नारद के प्रेमी शिष्य,
उमाशंकर जी सहित सनेह ।
कराने भिक्षा जब ले गये,
कहा—"अब धन्य हमारा गेह ॥"

प्राप्त करके भोजन जल-पान,
कहा नारद ने—"विप्र उदार !
दक्षिणा माँग रहा, पर प्रथम,
याचना का दे दें अधिकार ॥"

विप्र के आँसू गिरने लगे,
कहा—"मैं श्री चरणों का दास ।
आपकी आज्ञा जो हो करें,
बतादें, अपनी उर-अभिलाष ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विहँस कर नारद कहने लगे—
"विप्रवर ! पुत्र तुम्हारे चार।
आप बड़ भागी दशरथ तुल्य,
गाधि-सुत आये तेरे द्वार ॥

एक बालक इनमें से मुझे,
आप क्या कर सकते हैं दान ?"
विप्र ने देखा पत्नी ओर,
परीक्षा की थी घड़ी महान ॥

प्राणपति असमंजस में पड़े,
देख कर वह रमणी सोल्लास।
बुला कर अपने चारों पुत्र,
उपस्थित करती गुरु के पास ॥

सात्विकी मति-प्रेरित वह युगुल,
कह रहे—"इच्छित सुत लें साथ।
आप को अर्पित कर निज-पुत्र,
बनेंगे बड़ भागी हम नाथ ॥"

कहा नारद ने—"इनमें प्रथम,
स्वयं जो आयेगा सोल्लास।
उसी पर होगा मम अधिकार,
रहेगा वह ही, मेरे पास ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तीन पुत्रों में था संकोच,
एक आया, होकर निर्भ्रान्त ।
नाम था रमाकान्त पर हुआ,
आज से नारद मानस कान्त ॥

चला जब भर उर में उत्साह,
त्याग कर सारी गेहासक्ति ।
हुई श्री नारद चरणों मध्य,
मंजु बालक की अति अनुरक्ति ॥

ब्रह्माचर्याश्रम में अध्ययन,
किया उसकी कुशाग्र थी बुद्धि ।
गर्भ में सुन नारद उपदेश,
हुई थी, इसकी मानस-शुद्धि ॥

उमाशंकर परिवार समेत,
गये जब करने को सत्संग ।
दिव्य वैकुण्ठाश्रम के मध्य,
अनेकों थे तब साधक संग ॥

उस समय यह बालक अव्यक्त,
गर्भ में था इसका आवास ।
वहीं उपदेशों को था सुना,
इसे कब हो सकती थी त्रास ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्मचर्याश्रम के सब नियम,
किया करता था यह निर्वाह ।
रहा करता प्रसन्न था चित्त,
न होती इसको उर में दाह ।।

वेद, व्याकरण तथा साहित्य,
अध्ययन ही जीवन का कार्य ।
हुआ हिन्दी में भी यह रत्न,
बन गया फिर वेदान्ताचार्य ।।

अनेकों ग्रामीणों ने कहा—
योग्यतम, इसका करो विवाह ।
किन्तु वह बोला होकर सुदृढ़,
"न किंचित गृह-आश्रम की चाह ।।

समर्पित की गुरु-चरणों मध्य,
प्रफुल्लित होकर जीवन-डोर ।
उन्हें अधिकार, मुझे ले चलें,
किसी भी साधन-पथ की ओर ।।"

इधर गह्वर गिरि कानन बीच,
तपस्या की लेकर अभिलास ।
छोड़ कर नैमिष हिमगिरि ओर,
बढ़ गये जब श्री वेदव्यास ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उस समय नारद जी ने लिया,
योग्य-तम रमाकान्त को संग ।
संत-चरणों में रह कर, पूर्ण,
हुआ परिवर्तित जीवन-रंग ।।

वानप्रस्थाश्रम में सविवेक,
पितृ-चरणों में किया प्रवेश ।
एक दिन पुत्र माँगने चला,
पिता-माता से मंजु निदेश ।।

"हमारे मन में यह सुविचार,
बदल कर वस्त्र बनूं मैं संत ।
मोह, ममतादिक का पतझाड़,
हो चुका, आवे विमल बसंत ।।"

उमाशंकर बोले—"हे पुत्र !
रहा क्या तुम पर मम अधिकार ?
ज्ञात करलो गुरुवर से शीघ्र,
करें इस पर अब वही विचार ।।"

प्राप्त कर नारद का निर्देश,
लिये काषाय-वस्त्र सानंद ।
नाम अब रमाकान्त से बदल,
बन गया, संत 'विवेकानन्द' ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साथ श्री शिवनारायण शुक्ल,
छात्र जो अति ही था निर्द्वन्द ।
ग्राम था रुचिर रसूलाबाद,
बना वह संत 'सर्वदानन्द' ।।

ब्रह्मचर्याश्रम के दो रत्न,
याकि पावन प्रचार के पाँव ।
याकि नर-नारायण ही चले,
अलौकिक लेकर दिव्य प्रभाव ।।

याकि गुरु गाधि-तनय के साथ,
हरण करने को भू का भार ।
तीर्थ-नैमिष में ही हो गया,
राम, लक्ष्मण का शुभ अवतार ।।

याकि नारद को तप में मिले,
देह-धारी यह मोक्ष व ज्ञान ।
इन्हीं का करके सफल प्रयोग,
हरेंगे कलि के दोष महान ।।

उमाशंकर जी कुलपति बने,
जिस समय जाते वेदव्यास ।
अभी तक अध्यापन था किया,
अस्तु इनको था अति अभ्यास ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्मचर्याश्रम-पादप-मध्य,
प्रफुल्लित होते पुष्प अपार ।
क्षमा[1], वीरेन्द्र[2], सूर्य[3], शिव[4], राम[5],
भक्ति[6], हरि मित्र आदि अविकार ॥

ब्रह्मचर्याश्रम के ये रत्न,
धर्म-शिक्षा का ले उद्देश ।
कथावाचक, अध्यापक आदि,
बन गये पा गुरुवर निर्देश ॥

जरौआ, हरदोई के मध्य,
एक है अति सुन्दर-तम ग्राम ।
वहाँ महराज तथा मकरन्द—
सिंह, रहते साधक अभिराम ॥

सदा श्री गुरु चरणों में रहे,
विप्र, गुरु, पद-पंकज में प्रीति ।
उच्च करते रहते सत्संग,
सीखते राम राज्य की नीति ॥

ग्राम में कथा, कीर्तन, यज्ञ,
तथा करवाया गुरु-सत्संग ।
प्रभाती प्रतिदिन कढ़ने लगी,
बदलने लगा ग्राम का रंग ॥

१—क्षमा मित्र (विबुधेश), २—वीरेन्द्र मित्र, ३—सूर्य मित्र (ओमप्रकाश शास्त्री), ४—शिव मित्र, ५—राम मित्र, ३—भक्ति मित्र ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वहाँ मानस या योग वशिष्ठ,
कथा का पाकर पुण्य प्रसाद ।
बन गया राम राज्य अभिराम,
हुआ अब व्यपगत कलह विषाद ।।

बक्सर खेड़ा के भूमिप भव्य,
दिव्यता युत दिनेश सिंह नाम ।
समर्पण करते निज परिवार,
देवऋषि नारद को अभिराम ।।

पुत्र है उनका 'अजय प्रताप',
आज भी पाकर गुरु-संकेत ।
शीघ्र सेवा में होता निरत,
छोड़ कर अपना सुखद निकेत ।।

यहाँ रघुराज सिंह, सस्त्रीक,
बना कर, मंदिर कुटी ललाम ।
बास करने लगते हैं मुदित,
शस्त्र-धारी बन कर प्रतियाम ।।

धनुर्धारी-अर्जुन सिंह नाम,
छोड़ कर नगवा नामक-ग्राम ।
आ गये आश्रम-रक्षा हेतु,
बनाया नैमिष को निज-धाम ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पधारे मैनपुरी से यहाँ,
ललित लोचन[1] सिंह भी सस्त्रीक।
राज-पद पर की गई नियुक्ति,
संग क्षत्रिय कुल अमित अनीक ॥

ब्रह्मचर्याश्रम के अब छात्र,
पठन करते होकर निर्द्वन्द।
चोर, डाकू, अथवा, वटमार,
क्रियायें सब कर देते बन्द ॥

दिव्य कुटियायें बनने लगीं,
लग गये, शतशः वृक्ष नवीन ।
कन्द, फल, फूल प्रचुरता हुई,
देख कर मन होता तल्लीन ॥

बनाया सरस्वती का कुंड,
चतुर्दिक जिसके सुन्दर-घाट ।
साधकों ने श्रम ऐसा किया,
बन गया आश्रम दिव्य विराट ॥

"वर्णाश्रम की परम्परा को पुष्ट बनाये,
यह आश्रम फिर रामराज्य भूतल पर लाये ।"
करके दृढ़ संकल्प जुट पड़े जो तन्मय हो।
सत् प्रचार में निरत उन्हीं नारद की जय हो ॥

---::o::---

१—श्री तीर्थपूजन जी (राजा साहब) ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सप्तदश सर्ग

जिसका जीवन लक्ष्य बन गया सेवा करना ।
जगती के संतप्त जनों के कल्मष हरना ।।
प्रतिक्षण निज संकल्प सिद्धि की जिसमें लव है ।
जिसके उर में धधक रही, जन-मन की दव है ।।

जिसको लगते भोग-रोग के सम दुखदाई ।
जिसने इष्ट-अनिष्ट मध्य सम बुद्धि बनाई ।।
भोजन या जलपान ध्यान भी जिसे न आता ।
जो सदैव निज कर्म-योग तत्पर दिखलाता ।।

उसका होगा शुष्क-काष्ठ सम क्षीण कलेवर ।
मानस होगा पुष्ट, शक्ति भी होगी दृढ़तर ।।
श्री नारद की क्षीण देखकर कंचन-काया ।
कई प्रेमियों के नयनों में जल भर आया ।।

जिसके कई सहस्र शिष्य हों आज्ञाकारी ।
जिसकी सकल विभूति विश्व की हो सहचारी ।।
जिसके सम्मुख कई थाल भोजन के आते ।
सेवक श्रद्धा-पूर्ण, स्वादु सद्वस्तु जुटाते ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उनके कृश-तन मध्य विपुल क्यों मास नहीं है।
समुचित सेवा निरत, सजग क्या दास नहीं हैं॥
उनमें देहाध्यास नहीं, यदि उनमें विस्मृति।
तो सेवक भी सिद्ध ? न उनमें सन्मति॥

निश्चित नियमित समय इन्हें जलपान करावें।
दर्शनेच्छु जन प्रथक करें, भोजन पर लावें॥
फिर प्रकोष्ठ कर बन्द, खिलावें दूध मलाई।
क्योंकि स्वास्थ्य की शुभ महिमा ऋषियों ने गाई॥

सेवक रहते संग, स्थूल क्यों उनकी काया ?
क्या गुरुवर का भोज्य नहीं इन सबने खाया ??
वे बेचारे शान्त, किन्तु यह महा मुचण्डे।
दूध, मलाई चाट बने मथुरा के पण्डे॥

यह निज मन में कर विचार नारद से बोले।
अपने मानस-भाव शीघ्र गुरु-सम्मुख खोले॥
नारद हँसने लगे—"भक्तवर ! तुम अति भोले।
क्षीण-कलेवर देख, आपके आसन डोले॥

अंकुश होता सूक्ष्म, किंतु गज का संचालक।
लघु मरीचि-माली मंडल, पर तम दल घालक॥
ऋषि अगस्त्य थे क्षीण, सिन्धु जल को पी डाला।
तृण-दल करती ज्वलित एक चिनकी बन ज्वाला॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भक्त, भाव में मग्न हो गया सुन कर वाणी।
सन्मति प्रेरक धन्य-धन्य नारद विज्ञानी ॥
शाहजहाँपुर नगर मध्य था उत्सव भारी।
श्री नारद के संग, शिष्य बहु आज्ञाकारी ॥

सुन्दर सुस्थल मिला, सभी संस्थित हो जाते।
निज प्रकोष्ठ को सभी, सुसंयत-चित्त सजाते ॥
तब तक आई एक वहाँ वृद्धा सुस्थूला।
शक्ति-हीन थी किन्तु कलेवर उसका फूला ॥

श्वासोच्छ्वास प्रवेग, शब्द थे रुक-रुक जाते।
चरण, देह के विपुल भार से झुक-झुक जाते ॥
प्रति प्रकोष्ठ के संत झाँकतीं, बढ़ती जाती।
पथिकालय के सब प्रकोष्ठ वह लखकर आती ॥

एक कोष्ठ के अब सम्मुख संस्थित सकुचाती।
अंगुलि का निर्देश किया लघु वटुक बुलाती ॥
कहती—"मैंने सुना एक नैमिष के नामी।
आये महा-महंत नाम नारद सुखधामी ॥

बेटा ! मुझको लगें यही वह महा तपस्वी।
इस कोठे के संत, मुदित मन मंजु मनस्वी ॥
सब संतों से श्रेष्ठ स्थूल तम इनकी काया।
तुंदिल इनका उदर, शुभ्र डाढ़ा लहराया ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह लाई हूँ थाल-मध्य मैं दूध मलाई ।
रबड़ी, मेवा तथा शष्कुली, शाक, खटाई ॥
पेड़ा, बर्फी, दही, पकौड़ी, हलुवा, चमचम ।
पापड़, पायस, आम दशहरी भी सुन्दर-तम ॥

बेटा ! यही महंत, इन्हें सब वस्तु खिलाऊँ ।
या वे कोई और ? कहाँ को अब फिर जाऊँ ??"
तब वह बोला वटुक, अधर में हास्य छिपाये ।
"ये ऋषि प्रेमानन्द, शिष्य उनके कहलाये ॥

सबसे बड़ा प्रकोष्ठ वहाँ वे परम तपस्वी ।
नाम नारदानन्द श्रेष्ठ यति महा यशस्वी ॥
चलिये हम अति शीघ्र वहाँ तुमको पहुँचाते ।
माँ ! तुमको अति कष्ट हुआ, हम हैं सकुचाते ॥"

यूँ कह साधक गया, साथ वृद्धा को लेकर ।
दिखलाया जब इन्हें, हाथ का इंगित देकर ॥
तब वह तमकी तथा वटुक से अति झल्लाई ।
"क्यों बच्चे ! तू दुखित कर रहा, कहता माई ॥

यह महंत हैं नहीं, शुष्क लकड़ी सी काया ।
होता यही प्रतीत न भोजन इनने पाया ॥
हमने विविध महन्त, सन्त बहु बार खिलाये ।
क्या मैं कोई नई ? जिसे समझाने आये ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तेरे जैसे पुत्र कर रहे गृह में क्रीड़ा।
तू छोटा सा वटुक दे रहा मुझ को पीड़ा॥
कह कर हाय ! असत्य न आती तुझको व्रीड़ा।
मूर्ख जान ले सत्य, पड़ेंगे मुख में कीड़ा॥

वह महंत जो चार सेर रबड़ी पी जावे।
फिर भी भोजन करे पूड़ियाँ डट कर खावे॥
भोजन के उपरान्त प्रचुर जो फल खा जावे।
रजत संपुटी खोल, चार छः पान चबावे॥

वह महंत है, उच्च-तोंद हो जिसका भारी।
रजत-यष्टि कर मध्य, रेशमी अंचल धारी॥
गल में मौक्तिक माल डाल कर ध्यान लगावे।
भोजन के अतिरिक्त किसी से कुछ न बतावे॥

यह महन्त हैं नहीं, न इनको मैं कुछ दूँगी।"
यूँ कह कर चुप हुई, बन गई मानों गूँगी॥
गुरुवर बोले—"इसे शीघ्र ऋषि निकट पठाओ।
स्थूल-दृष्टि है, स्थूल-संत का दर्श कराओ॥"

एक दूसरा साथ लिया साधक मन भाया।
जो वृद्धा को संग लिये, ऋषि सम्मुख आया॥
ऋषिवर बोले—"वही बड़े हैं सबसे स्वामी।
वे नारद अवतार, वही यतिवर हैं नामी॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वृद्धा बोली—"महाराज ! मैं जान गई हूँ ।
सच्चा कौन महन्त, खूब पहिचान गई हूँ ।।"
यूँ कह कर गिर पड़ी, पदों में फूल रही थी ।
अति श्रद्धा से चाट चरण की धूल रही थी ।।

नारद बोले—"इस वृद्धा की स्थूल दृष्टि है ।
उसी भाँति मन में विचार की हुई सृष्टि है ।।
सूक्ष्म तत्व का ज्ञान, स्थूल-मति कब कर पाते ।
ब्रह्म तत्व के ज्ञाताओं की हँसी उड़ाते ।।"

एक बार देवर्षि संग दो साधक लेकर ।
लक्ष्मणपुर के मध्य गये धार्मिक उत्सव पर ।।
एक परम जिज्ञासु शिष्य के भवन पधारे ।
वह विह्वल हो उठा, कह रहा—"भाग्य हमारे ।।"

एक मंच पर शुभ्र, शुद्ध, नव वस्त्र बिछाये ।
आसन उस पर बिछा दिया, दृग द्वय भर आये ।।
"मुझ जैसे अति दीन, अकिंचन को अपनाया ।
गुरुवर ! जीवन का प्रभात यह स्वर्णिम आया ।।

मुझको किंचित समय मिले, कुछ फल ले आऊँ ।
अभिलाषा है यही, प्रेम से स्वयं खिलाऊँ ।।"
स्वीकृति मिलते चला, स्वपत्नी को समझाता ।
"मैं फल लेकर शीघ्र, अभी ही लौटा आता ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तब तक तुम आराध्य देव की पूजा करना।
रोली अक्षत लगा शीश में, पातक हरना।।
पुष्प माल, नैवेद्य, दीप तुम अर्पण करना।
शर्वत भी लो बना, सप्रेम समर्पण करना।।"

वह बोली—"मैं ग्राम्य भला क्या पूजा जानूँ।
पूजा विविध विधान, भला कैसे पहचानूँ।।"
तब वह बोला भक्त, "अरे तुम महा गवैंली।
सुन्दर पहिनो वस्त्र, उतारो धोती मैली।।

जैसे मंदिर मध्य, शम्भु-पूजा-हित जातीं।
विविध वस्तु उपहार प्रेम से आप चढ़ातीं।।
उसी भाँति गुरुदेव समझ लो शिवशंकर हैं।
श्रद्धा उर की देख, शीघ्र दे देते वर हैं।।"

यूँ कह कर वह चला गया फल आदि जुटाने।
पत्नी परम प्रसन्न, भाग्य मय यह क्षण जाने।।
फिर थाली में पुष्प, हरिद्रा, चावल, माला।
अगर वर्तिका, दीप, बतासा आदि सँभाला।।

वर पाने के हेतु जगी मन में अभिलाषा।
सभी वस्तु हो पूर्ण, तभी हो पूरी आशा।।
शर्वत ही रह गया, शेष सामग्री संस्थित।
वटुआ भर लूँ घोल, प्रेम से करूँ समर्पित।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह विचार कर शीघ्र, सकल सद्वस्तु जुटाई।
मुख पर घूँघट डाल, पूज्य-पूजा हित आई ॥
लोटा लेकर प्रथम शीश जल लगी चढ़ाने।
निज शिष्यों को रोक, लगे नारद मुसकाने ॥

जल अर्पण कर प्रचुर हरिद्रा, चावल चंदन।
पुष्प माल थी वृहत् भाल में थोपा चंदन ॥
शर्वत पूरित पात्र युगुल कर से ले आती।
हर-हर के स्वर बोल, शीश पर से ढुरकाती ॥

केशों, वस्त्रों मध्य चिपचिपा शर्वत चिपटा।
मिष्ठ वस्तु रस पान हेतु मक्खी दल लिपटा ॥
तब तक लाया भक्त, प्रचुर फल, फूल मिठाई।
युगुल पादुका, अरुण रंग अंचल सुखदाई ॥

संस्थित कर ज्यों दृष्टि, उठी गुरुवर के ऊपर।
देखा अम्बर, केश, आर्द्र त्यों गिरता भू पर ॥
हाय-हाय कर कहा—"अरे! मुन्नू की माता!
यह क्या तूने किया?" तभी यह उत्तर पाता ॥

"तुमने ही तो कहा पूज्य गुरु पूजन करना।
शंकर की ही भाँति, वस्तुयें अर्पण करना ॥
जैसे मंदिर-मध्य नित्य पूजा हित जातीं।
शिव के शिर पर वारि, धूप, फल फूल चढ़ातीं ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसी भाँति सब वस्तु चढ़ा कर शर्बत थोड़ा ।
गुरुवर शिर पर धार बाँध कर मैंने छोड़ा ।।
स्वामी हुये प्रसन्न, रहे वे अति मुसकाते ।
फिर क्यों रोते आप, मुझे क्यों डाँट बताते ।।"

भक्त लगा डिड़कार छोड़ कर अतिशय रोने ।
"रे दुष्टे ! सब कार्य तुम्हारे महा घिनौने ।।
देहातिन ! तू बुद्धि हीन, मैं महा अभागी ।
तेरी जैसी नारि मिली, हत्या सी जागी ।।

रही चराती गाय, पाथती थी बस कंडे ।
अभी शुद्ध मति करूँ, पीठ पर धमकूं डंडे ।।
खाने को दो सेर, बुद्धि का कढ़ा दिवाला ।
मेरा अति दुर्भाग्य, पड़ा दुष्टा से पाला ।।

हाय-हाय गुरुदेव ! आपकी ऐसी दुर्गति ।
यह दैत्या अति नीच, देहातिन, दुष्टा दुर्मति ।।"
तब गुरुवर ने कहा—"भक्त ! तुम सत्वर आओ ।
निज पत्नी से कलह करो मत सुख पहुँचाओ ।।

वास्तव में शिव तुल्य भावना मुझ पर सुन्दर ।
इसका यह छलहीन हृदय, मुझको अति सुखकर,
श्यामागम को देख दौड़ पड़ती विदुरानी ।
कदली के फल पक्व, अर्घ्य हित सुन्दर पानी ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अर्घ्य, पाद्य कर छील-छील छिलके पकड़ाये ।
माधव ने अति-प्रेम-भाव से वे सब खाये ।।
गूदा देती फेंक खिलाती कदली छिलके ।
तब तक आये विदुर, दृगों से जल कण ढलके ।।

पत्नी की भर्त्सना लगे वह अतिशय करने ।
निज अपराध विचार, लगी पत्नी जब डरने ।।
तब माधव ने कहा—'प्रेम का मैं हूँ भूखा ।
श्रद्धार्पित है ग्राह्य, भोज्य चाहे हो रूखा ।।

तुम जो फल का सार भाग अब मुझे खिलाते ।
इसमें वह मृदु-स्वाद नहीं हम प्रियवर पाते ।।'
उसी भाँति तुम जिसे बताते महा गवैंली ।
इसका मन अति शुद्ध, भले हो ऊपर मैली ।।

देव भाव से की पूजा, पूर्णास बनेगी ।
उर अन्तर की सफल सकल अभिलाष बनेगी ।।
जगती इसके शुद्ध भाव की दास बनेगी ।
पत्नी तेरी भक्त, अमर इतिहास बनेगी ।।"

अब दोनों निज नयन नीर निर्झरी बहाते ।
आये गुरुवर पास, पात्र में जल भर लाते ।।
आर्द्राञ्चल कर विलग, सुखद सुस्नान कराते ।
फिर अरुणाञ्चल अति नवीन, गुरु को पहिनाते ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्थित कर फिर शुभ आसन पर पूजा करते ।
विविध फूल फल तथा मिठाई सम्मुख धरते ॥
भाव-वश्य गुरुदेव ! पा रहे उनकी भिक्षा ।
मध्य-मध्य में भक्त प्रवर को देते शिक्षा ॥

"प्रियवर ! जग की किसी वस्तु में स्वाद नहीं है ।
प्रेमहीन जो वस्तु, वहाँ आह्लाद नहीं है ॥
सफल साधना वही, जहाँ अनुराग प्रबल हो ।
सच्चा मानस वही न जिसमें किंचित छल हो ॥"

श्री नारद की क्रियाशीलता अथक परिश्रम ।
दृष्टिगत कर बुद्धि मध्य हो जाता विभ्रम ॥
परिश्रान्त हो अस्त-व्यस्त होते अनुगामी ।
पर अखण्ड पुरुषार्थ-निरत नारद निष्कामी ॥

तीन बजे ही शयन त्याग आसन पर आते ।
शान्त चित्त हो, सिद्धासन पर ध्यान लगाते ॥
साधक-गण को ज्ञान सूक्ति रस पान कराते ।
परामर्श कर फिर प्रचार गति विधि समझाते ॥

जो आ जाता व्यक्ति चरित की देते शिक्षा ।
विगत द्वन्द्व, निरपेक्ष तथा तप पूर्ण तितिक्षा ॥
अर्ध-रात्रि तक विमल गंग सी प्रवचन धारा ।
कितनों का ही दूर कर चुकी भव-भ्रम सारा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब पर इतना प्रेम, सभी यह मन में जाने ।
मुझ को ही गुरुदेव निजी सर्वोपरि माने ।।
फुल्लाम्बुज सा सदा मोदमय रहता आनन ।
विपत्काल में कभी नहीं विचलित होता मन ।।

होता जहाँ प्रचार वहीं आश्रम बन जाता ।
वानप्रस्थी एक प्रबन्धक पद अपनाता ।।
शतशः आश्रम रचित किये, की पूर्ण व्यवस्था ।
नैमिष की अति सुदृढ़ बना दी धार्मिक संस्था ।।

महिला मंडल बना, हुई सक्रिय ब्रजरानी ।
प्रेरक इनके पूज्य, देवऋषि नारद ज्ञानी ।।
महिला मंडल विटप, पुष्प सी विद्या काली ।
बनी सुशीला सरस्वती, रामा द्युति शाली ।।

सब भाषण पटु, गृहों-गृहों में देती शिक्षा ।
कलह भगातीं दूर सिखाती पूर्ण तितिक्षा ।।
इनमें प्रज्ञा चक्षु शारदा सी कवयित्री ।
सत् प्रचार रत शान्ति, पार्वती शुचि सावित्री ।।

नैमिष-आश्रम-मध्य धेनुओं की शुचि शाला ।
प्रचुर पुष्प फल युक्त विविध विटपों की माला ।।
कुंजस्थल अति सुखद विराजित भव्य गुफायें ।
इनमें प्रति दिन विविध वनस्थी ध्यान लगावें ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नैमिष चिरकालीन चित्र से शोध लगाकर।
युगुल सरों से धार एक अति दिव्य बहाकर।।
सरस्वती थी लुप्त, किन्तु साकार बनाया।
भागीरथ का स्मरण, देखकर कृति, हो आया।।

वर्णाश्रम की परम्परा के पूर्ण प्रचारक।
नारद गो, द्विज, संत, वेद मत के उद्धारक।।
सिद्ध सकल संकल्प, साधनारत जीवन है।
इनको पाकर धन्य हुआ नैमिष कानन है।।

प्रातः सायं ब्रह्मचारि-गण,
करते वैदिक मन्त्रालाप।
नैमिष से कर गये पलायन,
कलि सम्भव सब पाप कलाप।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अष्टादश सर्ग

'अंग्रेजो भारत छोड़ो' यह,
होता गान्धी का उद्घोष ।
पुलिस तथा सेना के युवकों,
में भी व्याप्त हो गया रोष ॥

धनपति भी सुगठित हो करके,
करते प्रचुर दृव्य का दान ।
त्याग सुषुप्ति-भाव जागृत थे,
श्रमिक, कृषक, नेता विद्वान ॥

अंग्रेजों ने सोच लिया अब,
शिथिल हो रहे मेरे पैर ।
चलते-चलते बद्ध-मूल हम,
कर दें, हिन्दू-मुस्लिम वैर ॥

जिन्ना को समझा कर तत्क्षण,
भर देते हैं, उर में क्षोभ ।
आर्थिक तथा सामरिक शस्त्रों,
का दे देते उसको लोभ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अंग्रेजों ने कहा—"छोड़ कर,
हम जाते हैं भारत देश ।
आप सँभालें चार्ज यहाँ का,
हमको नहीं प्रयोजन लेश ॥"

उसी समय मिस्टर-जिन्ना ने,
छेड़ी अपनी सुगठित तान ।
"अंग्रेजो ! हम मुस्लिम दल को,
अलग बना दो पाकिस्तान ॥

हम विभिन्न-संस्कृति वाले हैं,
भिन्न-जाति हैं, भिन्न विचार ।
एक साथ में कभी न होगा,
हिन्दू-मुस्लिम का निस्तार ॥"

गान्धी तथा जवाहर बोले—
"नहीं विभाजित होगा देश ।
हम घुल-मिल कर रहें एक में,
एक बनालें, अपना वेश ॥"

अंग्रेजों की दुरभिसन्धि से,
तज कर अपना विमल विवेक ।
जिन्ना बोला—"अलग रहेंगे,
कभी न हम हो सकते एक ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किसी भाँति अंग्रेज भगाना,
था गान्धी का पावन ध्येय ।
अस्तु किये हस्ताक्षर अपने,
श्रेय प्राप्त कर खोया प्रेय ।।

घातक-शस्त्रों से सज्जित हो,
लेकर भीषण, शस्त्र अपार ।
जिन्ना का नेतृत्व प्राप्त कर,
यवनों का दल हुआ तयार ।।

काट-काट कर शीश हिन्दुओं—
के, वह नीच बहाते खून ।
जो भगने लगते थे उनको,
देते थे गोली से भून ।।

मन्दिर, गुरुद्वारे जलते थे,
लुटता नारी का श्रृंगार ।
सुगठित होकर म्लेच्छ कर रहे,
अबलाओं पर अत्याचार ।।

लघु शिशुओं को पटक-पटक कर,
हर लेते थे उनके प्रान ।
कुछ ही भग कर निकल सके थे,
बच्चे, बूढ़े और जवान ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अंग्रेजों ने मन में सोचा,
हिन्दू लें मुस्लिम के प्रान ।
सारा देश अशाँति मग्न हो,
करे हमारा फिर आह्वान ।।

किन्तु यहाँ भारत संयत था,
बनी रही थी फिर भी शांति ।
तब अंग्रेज भगा तत्क्षण ही,
दूर हो गयी उसकी भ्रान्ति ।।

महामना श्री मालवीय जी,
सुनते जब भीषण संहार ।
हिन्दू-संस्कृति पर होते हैं,
यवनों के अति प्रवल-प्रहार ।।

शोक-सिन्धु में वे निमग्न थे,
भर कर उर में भीषण-क्लेश ।
मरने के पहिले देते, वे,
हिन्दू-जनता को सन्देश ।।

"हाय ! हिन्दुओं ! कितना हमने,
दिया संगठन पर था जोर ।
पर प्रमाद-निद्रा को तज कर,
कब तुमने देखा इस ओर ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अब भी एक प्रार्थना द्वारा,
एक समय पर हो एकत्र ।
एक ओर सबका ही मुख हो,
नियम एक ही हो सर्वत्र ।।

इस विधि से सब सुगठित होकर,
एक बनाओ दुर्ग अभेद्य ।
आतताइयों, अनाचारियों,
के द्वारा जो हो अच्छेद्य ।।"

इतना कह कर चला गया वह,
हिन्दू जन जा प्राण अधार ।
रोया था समस्त भारत पर,
शब्दों पर कब किया विचार ।।

इधर देवऋषि के भी उर में,
उठा यही वर विमल विचार ।
सामूहिक-प्रार्थना, एकता—
का कर सकनी है संचार ।।

युगों-युगों से त्रस्त देवगण,
लेकर इसका ही आधार ।
सामूहिक सुशक्ति अर्जन कर,
दूर कर सका कष्ट अपार ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक समय पर एक प्रार्थना,
का लेकर निज लक्ष्य महान ।
सकल विश्व जातियां संगठित,
विघटित केवल हिन्दुस्तान ।।

नैमिष के पावन वन में अब,
सात्विक मति प्रेरित सब संत ।
करते प्रवल प्रतिज्ञा—"हम सब,
कर देंगे विघटन का अंत ।।"

समाचार पत्रों में पढ़ कर,
मालवीय जी के उद्गार ।
श्री नारद जी प्रवल शक्ति से,
करते शुभ-प्रार्थना प्रचार ।।

उनमें अति अदम्य साहस था,
तथा योजना थी निर्दोष ।
मन्दिर मठ, बाजार, मिलों से,
निकला सामूहिक उद्घोष ।।

श्री हिन्दू-प्रार्थना-समिति का,
संस्थात्मक बन गया स्वरूप ।
नगर ग्राम को चले प्रचारक,
हिन्दु-संगठन ध्येय अनूप ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घंटा, शंखध्वनि होते ही,
जनता हो जाती सन्नद्ध ।
सायं पश्चिम को अभिमुख हो,
एक पंक्ति में होकर बद्ध ॥

शतशः कंठ एक स्वर से जब,
करते एक प्रार्थना-गान ।
मानों सामूहिक-स्वर द्वारा,
खिंचकर आ जाते भगवान ॥

इसी प्रार्थना के प्रचारकों—
द्वारा होता कार्य-महान ।
सुगठित जनता से गो-रक्षा,
का प्रचलित करते अभियान ॥

लाखों पत्र छपा कर संसद,
भेज दिये जाते निर्द्वन्द ।
'श्री राजेन्द्रप्रसाद राष्ट्रपति,
करवायें अब गोवध बंद ॥

भवन राष्ट्रपति का भर जाता,
आश्वासन का आया तार ।
सामूहिक-प्रार्थना, प्रचारक—
मंडल में आ ज़ाता ज्वार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कानपूर कैलाश नाम के,
विस्तृत-मन्दिर में छविमान ।
युक्त-प्रान्त प्रार्थना समिति का,
उत्सव होता मंजु महान ।।

जिसमें स्वयंसेवकों का दल,
सुगठित, सक्रिय था निष्काम ।
भारत के विभिन्न अंचल ने,
आये संत, महंत, ललाम ।।

इस प्रार्थना-मंच के माध्यम,
से आ जाता आर्य-समाज ।
वैष्णव, शैव, शाक्त संतों में,
ऐक्य-भावना रही विराज ।

फिर प्रयाग के अर्ध-कुंभ पर,
लगा प्रार्थना का पंडाल ।
सब के प्रथक विचार, कार्य थे,
विघटन की उठती थी ज्वाल ।।

किन्तु प्रार्थना-प्रचारकों ने,
ऐसा वितत कर दिया जाल ।
एक समय पर एक प्रार्थना,
ही करते थे सब पंडाल ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मेला के प्रबन्धकों से मिल,
हुआ केन्द्र से भी सुप्रचार ।
प्रति ध्वनि-वर्धक से सन्ध्या में,
निकली एक साथ जयकार ॥

श्री हिन्दू-प्रार्थना-समिति में,
सुगठित होवे संत-समाज ।
इसी भावना से सब संतों—
से मिलते नारद मुनिराज ॥

इनकी मृदु-वाणी, वीणा सी,
कर्षित हो जाते थे सन्त ।
कुछ अनुभवी महात्मा बोले,
'विघटन का अब होगा अंत ॥'

युगों-युगों से श्री नारद जी,
करते रहे धर्म-उद्धार ।
इस कलि में भी रूप बदल कर,
श्री नारद जी हुये तयार ॥

सभी संत, मण्डलेश्वरों ने,
एक मंच पर हो आसीन ।
कहा—"प्रार्थना ही सुगठन का,
मूल मंत्र है अति प्राचीन ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब-जब असुरों से अभिमर्दित,
हुआ देवताओं का वृन्द ।
तब-तब इसी प्रार्थना द्वारा,
दूर हुये उनके दुख द्वन्द ॥'

सम्मति, लिखित सभी की मिलती,
दे-देकर संतों के चित्र ।
प्रति-प्रार्थना-अंक में निकलीं,
यह सम्मतियाँ परम पवित्र ॥

हरिद्वार के महा कुंभ पर,
हुआ प्रार्थना समिति प्रचार ।
सुगठित स्वयंसेवकों ने भी,
किया वहाँ पर, पर-उपकार ॥

रात्रि-मध्य तूफान आ गया,
गिरने लगी तड़ा-तड़ टीन ।
जिसके नीचे क्रन्दन करते,
बाल-वृद्ध होकर अतिदीन ॥

ये प्रार्थना-स्वयंसेवक गण,
सेवा में होते तल्लीन ।
सुगठित होकर एक स्थान पर,
धर देते हैं, सब ही टीन ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हिन्दू महासभा अधिवेशन,
गोरखपुर करते प्रस्थान ।
श्री श्यामाप्रसाद जी ने जब,
देखा—आये संत महान ॥

शतशः थे प्रार्थना-प्रचारक,
सुगठित, संयत, भक्त समाज ।
नारद जी विराजते उनमें,
देव-वृन्द में ज्यों सुरराज ॥

नैमिष में मिल चुके मुकर्जी,
जान चुके थे विमल-विचार ।
कुंज, गुफा पूरित आश्रम को,
देख चुके थे, महा-उदार ॥

देखा जभी उन्होंने, दौड़े,
संयत होकर किया प्रणाम ।
लाये सादर सभा-मध्य वह,
बतलाया फिर इनका नाम ॥

गद्-गद् होकर परिचय देते,
"ये नारद हैं, युगावतार ।
नैमिष-आश्रम पर रहते हैं,
होगा इनसे धर्मोद्धार ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुन अध्यक्ष-मंच को छोड़ा,
श्री भोपटकर हुये विनीत ।
इनको मंचोपरि बिठलाया,
नीचे कब रहता नवनीत ॥

हिन्दू-महासभा ने देखा,
जब श्री नारद जी का भाव ।
सामूहिक-प्रार्थना यही हो,
यह सत्वर रखते प्रस्ताव ॥

फिर सहस्रशः पूर्व-प्रकाशित,
वितरित हुये, प्रार्थना-पत्र ।
सभी नियम में बद्ध हो गये,
हर्ष छा गया था सर्वत्र ॥

अखिल देशव्यापक स्वरूप अब,
इसका बन जाता अभिराम ।
कुछ बोले—मत्स्यावतार सम,
व्याप्त हो गई, यह प्रति-धाम ॥

नारद जी पदाति चल पड़ते,
ऋषीकेश से बद्रीनाथ ।
प्रबल प्रार्थना के प्रचार से,
हिमगिरि को भी किया सनाथ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गगन-चुम्बिनी शैल माल से,
झर-झर झरते थे निर्झर ।
विविध विटप सुन्दर सुमनों को,
इनके ऊपर रहे बिखर ॥

गंगा तथा अलकनन्दा ने,
मिल कर गाया स्वागत-गान ।
देव प्रयाग, तीर्थ-वासी भी,
करते नारद का सम्मान ॥

प्रति चट्टी प्रार्थना हो रही,
पहुँचे फिर थे रुद्र-प्रयाग ।
यहाँ अलकनंदा से मिलती,
मन्दाकिनी सहित अनुराग ॥

विस्तृत-सभा मध्य नारद ने,
बतलाया संगम का भाव ।
"एक प्रार्थना संगम करती,
व्यक्ति-व्यक्ति में बढ़ता चाव ॥"

फिर नारद आगे चल देते,
मन्दाकिनी नदी के साथ ।
देवदारु विटपों से झाँका,
रजत वर्ण हिम-शृंग सनाथ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कितने सुन्दर गिरि-उपवन थे,
पत्र, पुष्प, खग कुल बहु-रंग ।
नारद जी के शुभ स्वागत का,
यहाँ अनूपम ही था ढंग ॥

मन्दाकिनी धार थी अथवा,
दिखता था नीचे पाताल ।
ऊपर नभ भी गिरि-शिखरों की,
डाले हुये, अनूपम-माल ॥

दोनों स्वागत में प्रमुदित थे,
ऊपर नभ, नीचे पाताल ।
हो जाते कृत-कृत्य भक्त गण,
अर्पित कर सुमनों की माल ॥

ऋद्धि-सिद्ध इन गिरि-शिखरों पर—
भी रहती थी, इनके संग ।
सब यात्री, प्रार्थना-प्रचारक,
मानस में आनंद तरंग ॥

श्री जोशी-मठ में नारद ने,
किया प्रार्थना प्रबल प्रचार ।
ज्ञात हुआ शंकराचार्य ही,
करने आये, जन-उद्धार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री केदारनाथ बद्री में,
स्वागत के थे अनुपम-साज ।
प्रवचन सुनने को संस्थित था,
सम्मुख, विशद, विशाल, समाज ॥

श्री हिन्दू-प्रार्थना-समिति है,
युग को, नारद का वरदान ।
इससे विश्व-शांति भी होगी,
विघटन का होगा अवसान ॥

यह प्रार्थना बना देती है,
लोक तथा पर-लोक ललाम ।
भाववश्य होकर मिल जाते,
भक्तों को दयार्द्र घनश्याम ॥

सायंकाल सभी घर-घर में,
एक स्थान पर हो एकत्र ।
मंजु प्रार्थना का व्रत लें तो,
रामराज्य होगा सर्वत्र ॥

कलि में ज्ञान विराग सो रहे,
भक्ति हो गई अतिशय दीन ।
सब प्रबुद्ध हो नाच उठे जब,
बजी प्रार्थना की वर वीन ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उर उद्गत सत् संकल्पों को,
निज-कृति से साकार बना दे ।
वही युग पुरुष शुभादर्श से,
जो स्वर्गिक संसार बना दे ।।

——::o::——

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एकोनविंश सर्ग

नगर लखनऊ के स्टेशन पर,
साधक, लक्ष्मीचन्द्र, मनस्वी ।
नैमिष-आश्रम का गृहस्थ भी,
लगता था छलहीन तपस्वी ॥

टिकट लिये था, रेल यान के,
आ जाने की मृदु-आशा थी ।
कानपूर में श्री नारद के,
दर्शन की बस अभिलाषा थी ॥

उसी समय मकरन्द सिंह जी,
जो हैं ग्राम जरौआ-वासी ।
वह भी पूज्य चरण नारद के,
मंजु-दर्शनों के अभिलाषी ॥

मिले, मंच संस्थित आश्रम के,
साधक का पद-वन्दन करते ।
लक्ष्मी भी आशीर्वाद दे,
उनका शुभ अभिनन्दन करते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दोनों एक मार्ग के राही,
दोनों नारद पद-अनुगामी ।
दोनों ही गृहस्थ-आश्रम में,
पर दोनों ही थे निष्कामी ॥

गाड़ी आई बैठ गये फिर,
निज-निज अनुभव बतलाते थे ।
कुछ यात्री थे भौंह सिकोड़े,
कुछ श्रद्धा से झुक जाते थे ॥

श्री मकरन्द सिंह जी बोले—
'भैया लक्ष्मी ! कहा न जाता ।
किन्तु सत्य-घटना है, इससे,
बिना कहे भी रहा न जाता ॥

मित्र हमारा गयावत्स सिंह,
नैमिष मेरे साथ सिधाया ।
गुरुवर-प्रवचन में निमग्न हो,
उसने अपना ध्यान लगाया ॥

गुरुवर यही कह रहे—"हम तुम,
सब हैं, अजर-अमर अविनासी ।
हम सबके शरीर क्षण-भंगुर,
दुख-स्वरूप हैं, तथा विनासी ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब सत्संग समाप्त हो गया,
मैंने कहा—"मित्र ! क्या पाया।"
वह बोले—"मैं अजर, अमर हूँ,
क्या अब कर सकती है माया ??"

मैंने उसकी अँगुली तोड़ी,
पर मन में दुख लेश नहीं था।
देहासक्ति भूलकर उसका,
मानस तो अब और कहीं था ॥

हम सब उसको अजर, अमर कह,
मृदु-परिहास किया करते थे।
हार्दिक था अनुराग, अस्तु वह,
कभी न ध्यान दिया करते थे ॥

एक बार मिश्रित-मेला में,
उनको भीषण ज्वर हो आया।
गुरुवर ने साग्रह मेरे ही,
घर पर लहड़ू से भिजवाया ॥

मैंने कहा—"वेग से ज्वर है,
इनको, इनके गेह पठाऊँ।
या आज्ञा हो श्री गुरुवर की,
तो अपने ही घर ले जाऊँ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुरुवर बोले—"देह, गेह के,
सारे ही असत्य हैं नाते ।
सच्चे परमार्थी प्रेमी-जन,
इस प्रपंच में कब रम पाते ॥"

इंगित गुरुवर का पाया तो,
हम उनको निज-गृह ले आते ।
श्रद्धा से पर्यङ्क बिछा कर,
उस पर उन्हें सप्रेम लिटाते ॥

दो वैद्यों के परामर्श से,
औषधि चली, न ज्वर कम होता ।
फिर त्रिदोष आया, मम मानस,
मित्र-दशा लखकर था रोता ॥

उनके गृह पर समाचार यह,
सर्व-प्रथम ही था पठवाया ।
सन्निपात की प्रबलावस्था,
वैद्यों ने निर्गमन रुकाया ॥

वीस दिवस तक वे त्रिदोष में,
रहे, किन्तु कीर्तन ही करते ।
विनय-पत्रिका के पद कह-कह,
रहे अश्रु, नयनों से झरते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इक्कीसवाँ दिवस जब आया,
तब प्रातः ही हमें बुलाया ।
कहा—"कहीं भी आज न जाना",
प्रश्न किया—"क्यों?" तब बतलाया ।।

"सद्विवेकिनी प्रज्ञा देकर,
श्री गुरुवर ने अभय किया है ।
मुझे लेश भी क्लेश नहीं है,
क्योंकि ज्ञान-पीयूष पिया है ।।

सद्गुरु चरण न विस्मृत करना,
यही बताना चाह रहे हैं ।
जीवन-नाट्य पूर्ण कर प्यारे !
अब हम जाना चाह रहे हैं ।।"

रात्रि हुई, मुझ को बुलवाया,
कहा—"कि कुछ गोमय ले आओ ।
नीचे लीप, कुशासन डालो,
फिर उस पर हमको बिठलाओ ।।"

मैंने सोचा—अभी स्वस्थ हैं,
पर गंगा सिंह सम्मुख आया ।
भूमि लीप कर, बिछा कुशासन,
गया वत्ससिंह को बिठलाया ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वह संस्थित था, पृष्ठ लग्न हो,
रोगी ने पद्मासन बाँधा ।
सीधा मेरु-दंड दृग संयत,
चित्त-वृत्तियों को फिर साधा ॥

हो करबद्ध, विनय करता वह,
"दीनबन्धु ! विपदायें हर दो ।
गणिका, अजामील, गज तारे,
मुझको भी निज भक्ति अमर दो ॥"

उसके युगुल नयन, निर्झर से,
टप-टप, अश्रु-विन्दु झरते थे ।
करुणा को करुणा आती थी,
करुण-प्रार्थना जब करते थे ॥

बोले—"ओह ! आ गये भगवन् !
वर दे दो, पर कहाँ खो गये ।
हाय अभागी हित समस्त क्या,
कोश तुम्हारे रिक्त हो गये ॥"

फिर करुणा-पुकार करता है,
मुख पर मृदु-मुसकान आगई ।
चपला सी चमकी शरीर में,
अंग-अंग में स्फूर्ति छा गई ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बोला—"अच्छा यदि प्रसन्न हो,
तो अब निज पद-भक्ति मुझे दो।
जाऊँ जहां वहीं गुरुवर की,
मंजु-चरण-अनुरक्ति मुझे दो॥"

फिर वह संस्थित रहा मौन हो,
पद्मासन पर ध्यान लगाये।
वैद्यों ने नाटिका-स्पर्श कर,
कहा कि—"गंगावत्स सिधाये॥"

यह कहते, मकरन्द सिंह के,
नयनों में आँसू भर आये।
लक्ष्मी जी ने कहा—"धन्य हो,
परम-भक्त के दर्शन पाये॥"

श्री मकरन्द सिंह जी बोले—
"गुरुवर दुख-बाधा हारी हैं।
हम तो मान गये निज उर में,
यह नारद के अवतारी हैं॥"

मम भ्राता महराज सिंह जी,
थे विसूचिका-ग्रस्त हो गये।
बोले—"शीघ्र लिटाओ भू पर",
उर में करुणा-बीज बो गये॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अर्धरात्रि थी, दो युवकों को,
नैमिष में प्रेषित कर देता ।
"गुरुवर ! शुभ आशीष तुम्हारा,
दीन-जनों के दुख हर देता ।।

महाराज ! महराज सिंह को,
काल-गाल से शीघ्र छुड़ाओ ।
शरणागत हम भक्त वृन्द हैं,
अपना चमत्कार दिखलाओ ।।"

यह सन्देश किया सम्प्रेषित,
साधक प्रबल-वेग से आये ।
अर्ध-रात्रि उपरान्त देवऋषि—
नारद के समीप आ पाये ।।

अति आश्चर्य-चकित होते वह,
देखा, गुरुवर भ्रमण कर रहे ।
मानों यह सर्वज्ञ प्रथम ही,
निज जन के दुख हरण कर रहे ।।

मम सन्देश श्रवण कर कहते,
"लो यह तुलसीदल ले जाओ ।
वह अब तक हैं, स्वस्थ हो गये,
निज उर को न विषण्ण बनाओ ।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधक हुये समागत जब तक,
तब तक रोगी स्वस्थ हो गया।
गुरुवर का सम्वाद श्रवण कर,
सब में श्रद्धा-बीज बो गया ॥

महाराज सिंह ने बतलाया—
"थे यमदूत लिवाने आये।
प्राण खींचते थे पर सहसा,
श्री नारद गुरुदेव सिधाये ॥

बोले—अभी नहीं जा सकता,
इससे आश्रम कार्य कराना।
तब प्रणाम कर लौट गये वह,
नारद का प्रभाव अब जाना ॥"

उसी दिवस से गेह-त्याग कर,
नैमिष में रहने लग जाते।
गुरुवर पदाम्बुजों की श्रद्धा,
सेवा में सादर पग जाते ॥

यथा कच्छपी, ध्यान मात्र से,
निज शिशु सम्बर्धन करती है।
तथा देवऋषि कृपा दृष्टि भी,
भक्त वृन्द के दुख हरती है ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लक्ष्मी जी ! मैं क्या बतलाऊँ,
जब उनकी सुस्मृति आती है ।
देह, गेह, आसक्ति छूट कर,
वृत्ति पदों में पग जाती है ॥

कानपूर के फूलबाग में,
सुना विशाल यज्ञ अनुपम है ।
सभी मतों के शुभ संतों का,
कहते सब, विचित्र संगम है ॥"

लक्ष्मी जी बोले—"वास्तव में,
गुरु नारद अन्तर्यामी हैं ॥
धन्य भक्त वह जो इन चरणों—
के बन जाते अनुगामी हैं ॥

श्री केदारनाथ कनवज से,
प्रतिदिन वैकुंठाश्रम जाता ।
गुप्त रूप से तीन बजे वह,
निज द्विचाक्रिका से था आता ॥

छः बजने तक प्रवचन सुनता,
सात बजे दूकान खोलता ।
शब्दों से पीयूष बरसता,
किन्तु स्वल्प संयमित बोलता ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक दिवस पूछा, गुरुवर से—
"मृत्यु-समय क्या ध्यान लगायें।
क्या करणीय कार्य हैं ? गुरुवर !
आप दया करके समझायें ॥"

वह शिव का परमोपासक था,
शान्त-शम्भु का ध्यान सिखाया।
मृत्यु-समय पर प्रणव मंत्र का,
उसको जप करना बतलाया ॥

उसी वर्ष उसके विवाह-हित,
कुछ दुराग्रही-व्यक्ति सिधाये।
उसकी मिली न स्वीकृति उनको,
तब वे सब आश्रम पर आये ॥

बोले—"शिष्य आपका ही है,
उपदेशों से मुड़ सकता है।
अनुकम्पा यदि आप करें तो,
यह बन्धन में जुड़ सकता है ॥"

गुरुवर ने उससे जब पूछा—
वह बोला—"मैं आज्ञाकारी।
इसी वर्ष पर होने वाली,
मेरी उस घर की तैयारी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब निश्चय है—तोड़ बन्धनों—
को प्रभु-सन्निधि में जाना है ।
स्वल्प-समय के लिये व्यर्थ ही,
फिर बन्धन को अपनाना है ।।"

सब ने सोचा सत्संगी है,
इसने हमको टाल दिया है ।
चले गये सब व्यक्ति एक दिन,
उसने करुण-विलाप किया है ।।

उसने सब परिवार बुला कर,
कहा—"क्षमा सब मुझ को कर दो ।
गुरुवर का चरणोदक लाकर,
शुचिता से, मम मुख में धर दो ।।

पिता ! आपसे कहे बिना ही,
मैं वैकुण्ठाश्रम जाता था ।
गुरुवर का उपदेश श्रवण कर,
प्रातः नित्य लौट आता था ।।

बारह बजे आज यह नश्वर,
देह-त्याग कर मैं जाऊँगा ।
गंगा-जल तुलसी अब ला दो,
धेनु सवत्सा पुजवाऊँगा ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुनकर शतशः व्यक्ति आ गये,
धरणी पर लिपवाया जाता ।
कुशा बिछा कर दक्षिण दिश को,
अभिमुख, भक्त लिटाया जाता ॥

बारह बजे कह रहा—"सुन लो,
देवदूत ! रोको विमान को ।
प्रणव-मंत्र का जप करना है,
अवसर दे दो, तनिक ध्यान को ॥"

सबने देखा, ओष्ठ चल रहे,
मुख पर परम तेज छा जाता ।
निश्चित समय, त्याग निज तनु को,
महा-भक्त यह स्वर्ग सिधाता ॥

गुरुवर ने मानस रोगों से,
कितनों को सन्मुक्ति दिलाई ।
कितनों ने इनकी सन्निधि में,
आकर सन्मति, सद्गति पाई ॥

दोनों साधक गुरु चरणों में,
अपनी पावन-प्रीति लगाये ।
रेल-यान पर चर्चा करते,
कानपूर-नगरी में आये ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शतशः स्वयंसेवकों का दल,
स्वागत में कटि-बद्ध खड़ा था ।
पर्चों तथा पोस्टरों द्वारा,
दर्शन हित यात्री उमड़ा था ॥

मध्य नगर के सब पथिकालय,
संत-जनों हित खुले हुये थे ।
काशी, अवध तथा मथुरा के,
संत ऐक्य पर तुले हुये थे ॥

एक प्रार्थना-मंच सभी ही,
शुचि-संतों को जोड़ रहा था ।
कानपूर का यह अधिवेशन,
भिन्न-भावना तोड़ रहा था ॥

धन से धनिक, श्रमिक श्रम द्वारा,
इस उत्सव में जुटे हुये थे ।
सारे कार्य बन्द थे, मानस,
सबके मानों लुटे हुये थे ॥

विस्तृत था पंडाल वहाँ पर,
झूम रही बल्बों की माला ।
कदली, स्तम्भ, झंड़ियों, राडों,
से आलोकित थी मखशाला ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दोनों साधक इस उत्सव में,
घूम-घूम कर चकराते थे ।
जाते जहाँ वहीं मन लगता,
गुरु-दर्शन हित अकुलाते थे ।।

बड़ी कठिनता से जा पहुँचे,
बहुत दूर से दर्शन पाया ।
पर घट-घटवासी गुरुवर ने,
दोनों को निज पास बुलाया ।।

कितनी भीड़ चीर कर पहुँचे,
नारद ने बहु प्यार किया था ।
इनका सबको परिचय देकर,
वास्तव में सत्कार किया था ।।

दोनों साधक गद्-गद् होते,
प्रेम-सुधा में मग्न हो गये ।
श्री देवर्षि-प्रभाव देखकर,
वे विचार संलग्न हो गये ।।

कौन पूछता, यदि गुरुवर का,
उद्घाटित उर द्वार न होता ।
हमसे प्रेम सहित क्यों मिलते,
यदि दीनों पर प्यार न होता ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घट-घट वासी क्यों बनते यदि,
मिला हृदय का तार न होता ।
भक्तोद्धार कौन करता यदि,
ऋषि नारद अवतार न होता ।।

जिनकी प्रदत्त सन्मति द्वारा,
सब साधक सद्गति पाते हैं ।
उन पूज्य देवऋषि नारद को,
हम सादर शीश झुकाते हैं ।।

—::o::—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विंशति सर्ग

विधि ने निज सृष्टि संग में ही,
शुभ यज्ञों का निर्माण किया ।
उनकी आज्ञा से मानव ने,
यज्ञों से निज-उत्थान किया ॥

यज्ञों द्वारा रवि, चन्द्र, अनिल,
आदिक सुर, हवि को पाते हैं ।
सम्पोषित होकर यही देव,
मानव को पुष्ट बनाते हैं ॥

वह बिना याचना भोगों का,
जगती में वर्षण करते हैं ।
देकर प्रकाश, जल, अग्नि, वायु,
मानव के संकट हरते हैं ॥

वैदिक-विधान से किया हुआ,
यह यज्ञ सघन घन बन जाता ।
फिर सुखद-वृष्टि से धान्य आदि—
उद्भव कर बनता सुखदाता ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यज्ञों में सन्त, विरक्त, भक्त,
विद्वान् मनीषी आते हैं ।
सत्संग प्राप्त करके जिनका,
सब जीवन भव्य बनाते हैं ॥

कलि में यज्ञों की परम्परा,
प्राय: विलुप्त हो जाती है ।
अति वर्षण तथा अवर्षण से,
छाया अकाल की आती है ॥

श्री नारद जी ने यज्ञों का,
सामूहिक रूप बनाया है ।
सहयोग दीन से धनिकों तक—
का, यज्ञ समिति ने पाया है ॥

नगरों, ग्रामों में कितने ही,
वार्षिक गति से शुभ याग हुये ।
कामादिक दोषों से प्रपूर्ण—
स्थल, तीरथराज-प्रयाग हुये ॥

जिनमें मानस के महारथी,
मानस-रहस्य समझाते हैं ।
पौराणिक, विविध पुराणों का,
पावन नवनीत खिलाते हैं ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कितने ही तपः पूत मुनि-जन,
वेदान्त-पियूष पिलाते हैं।
यतिवर श्री नारद के अनुभव,
चेतना-सूत्र बन जाते हैं॥

नैमिष में नारद के द्वारा,
वानप्रस्थाश्रम खुल जाता।
वृद्धों के जीर्ण-कलेवर में,
अब नव-जीवन है लहराता॥

कलि में यह आश्रम था विलुप्त,
नारद से पुनरुत्थान हुआ।
अवकाश-प्राप्त कितने वृद्धों—
का नैमिष में आह्वान हुआ॥

नारद की नवल-चेतना से,
तप-संयम में मन लग जाता।
कुंजों या गुफा, काननों में,
सोया सा, तप-बल जग जाता॥

श्री नारद ने नैमिषारण्य,
आदर्श तपो-वन बना दिया।
कितने ही भोगी पुरुषों को,
मन-निग्रह करना सिखा दिया॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निस्पृह, निर्मम, आलस्यहीन,
जो सबको ही सुख देता है ।
ऐसा आदर्श तपस्वी ही,
सच्चा भारत का नेता है ॥

निष्काम, अक्रोधी, मान रहित,
जो सच्चरित्र शुभ चेता है ।
निर्मल प्रशान्त मानस वाला,
बन सकता सच्चा नेता है ॥

जिसका अन्तर ही दूषित है,
जग का सुधार क्या कर सकता ।
सच्चा विद्वान् तपस्वी ही,
मानव के संकट हर सकता ॥

शतशः अवकाश प्राप्त अब तो,
आ जाते सात्विक-अधिकारी ।
यह पाप रूप तृण-राशि हेतु,
जाज्वल्यमान हैं चिनगारी ॥

नगरों, ग्रामों के निकट मंजु,
शतशः ऋषि-आश्रम बन जाते ।
नारद आदर्श-व्यवस्था से,
उनका प्रबन्ध हैं करवाते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रति आश्रम में धार्मिक-शिक्षा,
वानप्रस्थी-गण देते हैं ।
अपने पावन उपदेशों से,
चित्ताकर्षण कर लेते हैं ॥

धार्मिक-प्रचार ही साध्य बना,
है साधन, सुन्दर ऋषि-आश्रम ।
साधक नारद ने दूर किया,
जिनसे मानव मन का विभ्रम ॥

प्रति आश्रम में कालेजों के,
आ जाते बालक संस्कारी ।
धार्मिक शिक्षायें सुन-सुन कर,
जीवन बन जाता दुख-हारी ॥

ऋषि आश्रम शुक्लागंज मध्य,
कितने ही सात्विक छात्र बने ।
धार्मिक शिक्षा को पा करके,
यह सब बालक सत्पात्र बने ॥

इन छात्रों का अनुरोध हुआ,
खुल जायें, धार्मिक-विद्यालय ।
दैनिक धार्मिक-साहित्य सुने,
जिससे हो दोषों का संक्षय ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुरुवर की सुखद-प्रेरणा से,
सुन्दर विद्यालय चलता है ।
भौतिकवादी शिक्षा के,
तम में दीपक सा जलता है ।

प्रति वर्ष ग्रीष्म-अवकाश मध्य,
सब ऋषीकेश को जाते हैं ।
मोक्षाश्रम बनता सुखद शिविर,
जिसमें सत्-शिक्षा पाते हैं ॥

प्रति नगर-नगर में यज्ञों का,
जो सुन्दर जाल बिछाया है ।
उसके माध्यम से छात्रों का,
सात्विक दल छंट कर आया है ॥

ये सभी तर्क ले गुरुवर के,
पावन चरणों में आते हैं ।
फिर समाधान हो जाने पर,
ये अनुयायी बन जाते हैं ॥

नगरी लखीमपुर यज्ञ-मध्य,
सत् छात्र नर्मदेश्वर आया ।
तार्किकता युक्त, कुतूहल था,
श्री नारद का दर्शन पाया ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपदेश सुना, पर कुछ शंका,
फिर भी मानस में बनी रही।
जिज्ञासा, श्रद्धा, संयम के,
पीयूष स्वरस में सनी रही॥

आया ऋषि-आश्रम पर, उसने,
कितने आध्यात्मिक प्रश्न किये।
पर संयत-शब्दों में गुरुवर—
ने उत्तर उचित प्रकार दिये॥

सदसद्विवेकिनी प्रज्ञा से—
प्रेरित हो, निज को जान गया।
गुरु-नारद-चरणों में नत हो,
पथ-दर्शक अपना मान गया॥

रज, तम का परदा हटते ही,
सात्विकता उर में जग जाती।
गुरुवर-सन्निधि से प्रभु-दर्शन,
की इसमें भी लौ लग जाती॥

मोक्षाश्रम को यह चल देता,
गुरुवर का शुभ सहयोग मिला।
शिक्षा प्रयोग में आते ही,
मानस का सुन्दर कमल खिला॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हो प्रति निवृत्त नैमिष आया,
नव कुंज, गुफाओं को देखा ।
गोमा-तट पर कर रहा भ्रमण,
उर में थी श्रद्धा की रेखा ।।

देखा सुदूर नैमिष-टीला,
संस्थित कोई है सन्यासी ।
ध्यानावस्थित हो देख रहा,
जो निज घट में घट-घट वासी ।।

जिज्ञासु-भावना से पहुँचा,
तब ऋषिवर प्रेमानन्द मिले ।
पद-वन्दन करके कहा—"मुने !
दर्शन करके मम नेत्र खिले ।।

गुरुवर-नारद की सन्निधि में,
साधन परिपक्व बनाया है ।
कुछ आप मुझे भी बतलायें,
सेवक सेवा में आया है ।।"

ऋषिवर ने उससे कहा—"वत्स !
भय जरा-मृत्यु का हरना है ।
जीवन में जीवन धन पाकर,
निर्भय-निर्द्वन्द्व विचरना है ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्मरण एक श्री गुरुवर का,
सुन लो—वह नहीं पुराना है ।
जिसके द्वारा यह देह छोड़,
कैसे जाना ? यह जाना है ॥

श्री नारद की शिष्या मीरा,
सत्संग नियम से करती थी ।
निज सभी मानसिक रोगों को,
अन्वेषित करके हरती थी ॥

गुरुवर की शुभ अनुकम्पा से,
सदसद् विवेकिनी बुद्धि मिली ।
मन के विकार व्यपगत होते,
मुनि दुर्लभ मानस शुद्धि मिली ॥

सहसा वह रोगाक्रान्त हुई,
साधना न सम्यक् चल पाई ।
तब एक दिवस, निज देवर के,
सँग में इस आश्रम पर आई ॥

बोली गुरुवर से—"देव ! मुझे,
अब प्रभु सन्निधि में पहुँचाओ ।
इस रोगाक्रान्त कलेवर को,
मेरे स्वामी ! मत कलपाओ ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुरुवर ने कुछ मृदु शब्द कहे,
तब चली गई मीरा बाई ।
पर एक दिवस, लघु शिविका पर,
संस्थित हो, आश्रम पर आई ॥

मुझसे अतिशय अनुनय करती,
ऋषिवर ! सहायता पहुँचाओ ।
मरने का शुभ मुहूर्त हम को,
गुरुवर नारद से पुछवाओ ॥

सम्भ्रम बढ़ जाता मानस में,
क्या कहती मीराबाई है ।
निज मृत्यु-मुहूर्त पूछने को,
गुरुवर समीप में आई है ॥

गुरुवर आये तब रो पड़ती,
मुझको मुहूर्त अब बतलायें ।
यह लाला, मेरे देवर हैं,
इनको सामग्री लिखवायें ॥

ऐसा मुहूर्त हो मरने का,
जब आप स्वयं भी रह पायें ।
मरने के पहिले भंडारा—
में आप कृपा करके आयें ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैं तो विचारती मैंनपुरी,
आषाढ़ शुक्ल में जायेंगे ।
उस एकादशी मध्य प्रभु के,
दर्शन दुर्लभ हो पायेंगे ॥

यह एकादशी पुनीत मुझे,
आषाढ़ कृष्ण की सुखदाई ।
गुरुवर प्रसाद को पाकर ही,
यह जायेगी मीराबाई ॥

पर यह उपाय भी बतला दें,
अन्तिम क्षण प्रभु का ध्यान रहे ।
मानस में जगदासक्ति न हो,
अपने स्वरूप का ज्ञान रहे ॥"

गुरुवर बोले—"जब हाथों या—
पैरों की नाड़ी छुट जाती ।
फिर माला जपना दुष्कर है,
वाणी भी शब्द न कह पाती ।

तब मानस जप ही श्रेयस्कर,
या ऊर्ध्व श्वास में 'रा' कहना ।
फिर अधोश्वास में हो 'म' कार,
श्वासा का जप करती रहना ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मीरा बोली—"मैं समझ गई,
अब कल ही मुझ को जाना है।
उसके पहिले सब सन्तों को,
गुरुवर ! भोजन करवाना है ।।

कल सभी साधकों के समेत,
मेरा ही भोजन अपनायें ।
जूठन प्रसाद हम भी पाकर,
फिर अपने परम लोक जायें ।।"

इतना कह कर वह चली गई,
सब साधक-गण चकराते थे ।
क्या घटना होगी सत्य ? यही,
सब साधक-गण बतलाते थे ।।

दूसरे दिवस इस आश्रम पर,
बनता उसका ही भंडारा ।
गुरुवर ने 'आम' प्रसाद-रूप,
भेजा मीरा को अति प्यारा ।।

मीरा ने पूछा साधक से—
लेकर प्रसाद जो आया है ।
"सब साधक भी खा चुके याकि—
गुरुवर ने केवल खाया है ।।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वह बोला—"सब भोजन करते",
उसने देवर को बुलवाया ।
नीचे गौ के गोबर द्वारा,
सुन्दर सा चौका लगवाया ॥

सुन्दर सी एक सवत्सा गौ,
जो पहिले से मँगवाई थी ।
संकल्प पढ़ा कर पंडित को,
देकर कुछ मृदु मुसकाई थी ॥

गंगाजल, तुलसी, स्वर्ण, कुशा,
सब आज्ञा देकर मँगवाया ।
कुछ अन्न दान निज कर द्वारा,
करके मीरा ने सुख पाया ॥

अब गोमय-लिप्त धरा पर ही,
कुश-आसन उसका लग जाता ।
दक्षिण को अभिमुख हो लेटी,
मन, ईश-ध्यान में पग जाता ॥

देवर से बोली—"ऐ लाला !
सन्तान हीन तू सुत पाये ।
मेरी इस अन्तिम सेवा के—
फल से न कभी संकट आये ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फिर द्रव्य, अन्न का दान किया,
गंगा-जल मुख में डलवाया ।
तुलसीदल, स्वर्ण डाल मुख में,
फिर पद्मासन को लगवाया ॥

देवर जो टेक लगाये था,
बोली—"अब लाला ! हट जाओ ।
मरने के समय आप कोई,
मेरे समीप में मत आओ ॥"

लाला पीछे ही चुप बैठे,
पद्मासन से न लुढ़क जाये ।
पर वह आसन पर डटी हुई,
उर में माधव को बिठलाये ॥

कुछ देर राम का जप करती,
फिर वाणी सहसा बन्द हुई ।
पर ओष्ठ अभी तक चलते थे,
अब तो मीरा निष्पन्द हुई ॥

गुरुवर की आज्ञा से मीरा—
सुधि लेने हेतु देव पूजन ।
जाते, पर कुछ ही समय बाद,
सुन पड़ता करुणामय क्रन्दन ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुष्पों से सज्जित था विमान,
लेटी जिस पर मीराबाई ।
जनता के शतशः कण्ठों से,
श्री 'राम सत्य' की ध्वनि आई ॥

श्री छोटेलाल देवपूजन,
निज कन्धा मंजु लगाये थे ।
साधक इस अघटित घटना पर,
विस्मित होकर चकराये थे ॥

देखा जब वस्त्र उठा करके,
मीरा अब भी मुसकाती थी ।
मर कर भी मानों जीवों को,
जीवन सन्देश सुनाती थी ॥"

यह छात्र नर्मदेश्वर सुनता,
जब ऋषि से सत्य कहानी है ।
उसके युग नयन पंकजों में,
तत्क्षण आ जाता पानी है ॥

नश्वर जीवन की सार्थकता,
जीवन को अभय बनाना है ।
गुरुवर की सन्निधि में अब तो,
निज परम-लक्ष्य को पाना है ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसका मन सभी प्रपंचों से,
होकर विरक्त है हट जाता ।
बी० ए० की छोड़ परीक्षा को,
साधना क्षेत्र में डट जाता ।।

जिज्ञासु, नर्मदेश्वर का अब,
नैमिष में शौनक नाम हुआ ।
वह ज्ञान मिल गया, जगती का,
कण-कण ही उसका धाम हुआ ।

अब धर्म महा-विद्यालय का,
वह प्रमुख बन गया संचालक ।
सब कुछ पाता जो बन जाता,
श्री नारद का आज्ञा पालक ।।

कर्षित करके मृदु वाणी से,
व्यपगत करते विपुल विकार ।
पाठक गण ! उन पूज्य चरण का,
कर लो मिल कर जय-जय कार ।।

———::०::———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एकविंशति सर्ग

"मृग एकाकी कभी न रहते,
रहते सदा बना कर वृन्द ।
वन्य गजादिक सभी जीव निज—
दल में विचर रहे सानन्द ।।

वानर-दल संगठित भाव से,
देखे हैं करते प्रतिकार ।
चीटों तथा चीटियों की भी,
सुगठित चलती पंक्ति अपार ।।

नभ में एक साथ उड़ते हैं,
हंसादिक विहँगों के वृन्द ।
मीनादिक समस्त जलचर भी,
लेते सुगठन का आनन्द ।।

मुस्लिम, ईसाई सुगठित हो,
करते सदा प्रार्थना एक ।
एक समय पर एक पंक्ति में,
कितना उनमें प्रेमोद्रेक ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रमिकों का संगठन बन गया,
प्राय: सब सुगठित हैं वर्ग ।
विघटित बस यह ईश-भक्त ही,
चाह रहे हैं, केवल स्वर्ग ॥

किन्तु स्वर्गवासी देवों में—
जब-जब आ जाती है फूट ।
तब-तब असुर संगठित होकर,
स्वर्ग-भूमि को लेते लूट ॥"

मुनिवर नारद बोल रहे थे—
ऐक्य, संगठन का ले भाव ।
श्रोता मन्त्र-मुग्ध हो सुनते,
भरा हुआ था मन में चाव ॥

रामभरोसे जी यस० पी० तब,
सुनकर, तात्विक मधुरालाप ।
बोले—"भक्तों के सुगठन की,
क्या विधि हो ? बतलायें आप ॥"

गुरुवर बोले—"एक योजना,
सुन्दर बतलाता हूँ आज ।
संस्थात्मक-संगठन हेतु अब,
खोलो भारत भक्त समाज ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भय-लिप्सा से रहित वर्ग यह,
वेद-शास्त्र का ले आधार ।
प्रेम-तन्त्र हो अनुशासन में,
ब्रह्म-प्राप्ति हो लक्ष्य उदार ॥

सभी प्राणियों में ईश्वर है,
उर में यह लेकर सुविचार ।
यह समाज-सेवा में उतरे,
नैतिक-बल का ले आधार ॥

रज, तम से अभिभूत संगठन,
करते हैं विरोध की सृष्टि ।
हिंसा, लोलुपता, विरोधमय,
हो जाती कलुषित सी दृष्टि ॥

यह सात्विक विचार के बल पर,
सदाचार का करे प्रसार ।
सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह का,
हो समाज में प्रबल प्रचार ॥

जब सतोगुणी भक्त वृन्द का,
निकलेगा धार्मिक-अभियान ।
सुगठित सभी भक्त-गण होगा,
होगा, फिर चरित्र उत्थान ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यतिवर नारद के प्रभाव से,
संस्था का बन गया स्वरूप ।
सभी सदस्य तथा अधिकारी,
मिलते हैं विचार अनुरूप ।।

"भारत के कोने-कोने में,
होवे इसका सफल प्रसार ।
वेद, शास्त्र-पद्धति के द्वारा,
हो सात्विकता का संचार ।।

इस विचार से सत्वर निकले,
तीर्थ-यात्रा-स्पेशल ट्रेन ।
यह धर्माभियान होगा, इस—
संस्था की सुन्दरतम देन ।।

इस गाड़ी में सब सात्विक ही,
होंगे प्रान्त-प्रान्त के भक्त ।
संयम, यम, नियमों के पालक,
ईश्वर, गुरु-पद के अनुरक्त ।।

यद्यपि डिंडिम-घोष पूर्वक,
करना नहीं हमें शास्त्रार्थ ।
किन्तु विश्व के सम्मुख रखना,
हैं अपने सुविचार, यथार्थ ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एतदर्थ शास्त्र-ज्ञाता हों,
अपने संग माधवाचार्य ।
वेद-शास्त्र या युक्तिवाद से,
जिनके तर्क सभी को धार्य ।।

ब्रह्मनिष्ठ संतों के मंडल,
चलें भागवत, मानस-व्यास ।
ऐसा रक्षा का प्रबन्ध हो,
यात्री किंचित करें न त्रास ।।

भोजन में विशुद्ध-घृत का हो,
यात्रा भर सुन्दर उपयोग ।
डाक, बैंक की सफल व्यवस्था,
अनुशासन में प्रेम-प्रयोग ।।

तीर्थ-तीर्थ में कुछ साधक-गण,
प्रथम गमन कर करें प्रचार ।
इस यात्रा की लक्ष्य नीति का,
व्यक्ति-व्यक्ति में करें प्रसार ।।"

वह जनता ही सभा रूप में,
संस्था के सुनकर उपदेश ।
शाखा तीर्थ-तीर्थ में खोले,
पाकर श्री नारद-निर्देश ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह विचार कर श्री नारद का,
पा करके आशीष प्रसाद ।
सब सदस्य अधिकारी सुगठित,
करते कुछ विचार सम्बाद ॥

फिर तिथि का निश्चय हो जाता,
हुआ शीघ्र अति सफल प्रबंध ।
सभी कार्य-कर्ता उत्साही,
जिनमें लेश न तम की गंध ॥

कानपूर सेण्ट्रल स्टेशन पर,
स्वागतार्थ भक्तों का वृन्द ।
पुष्प, पुष्प-माला वर्षण कर,
जय-जय ध्वनि करता सानंद ॥

तिल रखने का स्थान नहीं था,
इतना अधिक भक्त समुदाय ।
जिनको टिकट न मिलता उनके,
उर से निकल रही थी हाय ॥

प्रचुर-पुष्प-मालाओं द्वारा,
हो समलंकृत चलती यान ।
एक साथ इतने भक्तों को,
लेकर मानों चला विमान ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रति स्टेशन पर मची हुई थी,
श्री नारद की जय-जयकार ।
रुकती जहाँ ट्रेन, आ जाता,
वहीं भक्त-मण्डल में ज्वार ।।

प्रचुर फूल-फल मेवा लाकर,
देते यतिवर को उपहार ।
जो विलम्ब कर आते गृह से,
उनको होता दुःख अपार ।।

प्रति तीर्थों में भ्रमण-व्यवस्था,
चलता था सुन्दर सत्संग ।
तीर्थ-पुरोहित मुदित हो गये,
देखा जब प्रचार का ढंग ।।

प्रायः सब तीर्थों में बनती,
शाखा भारत भक्त समाज ।
दिल्ली-स्टेशन पर आयंगर,
कहते, धन्य हुये हम आज ।।

कलकत्ता, बम्बई, लखनऊ,
पुरी, गया अथवा मद्रास ।
भारत के विशाल इन नगरों,
में छाया अतिशय उल्लास ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सभी-स्थान पर स्वागत होता,
मिलते साधक, भक्त-अपार ।
वेद-शास्त्र—सम्मत होता है,
भारत-भर में सफल-प्रचार

लौटी जब यह ट्रेन कानपुर,
यात्री बोले-बिकल अपार ।
"गुरुवर ! चरण छोड़ने को अब,
मानस होता नहीं तयार ।।

कहाँ मिलेंगे ? भक्त वृन्द यह,
कहाँ मिलेगा ? यह सत्संग ।
गुरुवर ! वर दो उतर न जाये,
चढ़ा दिया जो उर पर रंग ।।

नारद बोले— "सब यात्री गण !
जाओ अपने अपने गेह ।
सफल आप सबकी यात्रा है,
धन्य आप सबका है स्नेह ।।

भारत की गौरव रक्षा हित,
मेरा तत्पर गौरव-पत्र ।
सब भक्तों को सुख देता है,
हरता सबके दुख सर्वत्र ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इसके माध्यम से गृह संस्थित,
पाओगे मम विमल विचार ।
जिनका यदि आचरण कर लिया,
होगा, भव-भय से उद्धार ॥

इसमें साधन-निष्ठ साधकों,
के आते हैं, विमल विचार ॥
गौरव के पाठक बन जाओ,
दूर करेगा बुद्धि-विकार ॥

गुरु-गौरव की राशि एक है,
दोनों ही दे देते ज्ञान ।
दोनों का सेवन करने से,
मिलते भक्तों को भगवान ॥"

गौरव को पढ़ते सब जाते,
एक एक प्रति लेकर संग ।
तीर्थ यात्रियों का दल जाता,
बदल गया जीवन का ढंग ॥

'चाऊ यन लाई, जब आया,
लेकर छद्म-पूर्ण-सद्भाव ।'
'हिन्दी चीनी भाई भाई,
शब्दों में सबका था चाव ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारत चीन एक हो जाते,
पंचशील का ले आधार ।
इन दोनों की मिलित शक्ति से,
स्तब्ध हो गया सब संसार ।

किन्तु चाइना दुरभिसन्धि से,
करता तिब्बत को आक्रान्त ।
घातक शस्त्र-प्रवर्षण द्वारा,
जन-जन मानस हुआ अशान्त ॥

इधर चीन रूपी अजगर ने
व्यात्त किया निज-मुख विकराल ।
कई हजार वर्ग-माइल की
सीमा निगल गया तत्काल ॥

नेहरू के विरोध-पत्रों का,
पड़ा न उस पर तनिक-प्रभाव ।
भारत की उत्तर-सीमा पर,
सेना का कर रहा जमाव ॥

अब भारत की सैन्य-शक्ति भी,
ले लेकर अपने शस्त्रास्त्र ।।
लड़ने लगी, इधर नारद ने,
छोड़ दिया अपना ब्रह्मास्त्र ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'आक्रान्ताओ ! भारत छोड़ो',
का यतिवर करते उद्घोष ।
अर्थ–संकलन कर भर देते,
सत्वर राष्ट्र-सुरक्षा कोष ॥

जन-जागरण हेतु लग जाती,
नारद के प्रचार की शक्ति ।
भर देते भारती-जनों के,
मानस में स्वदेश की भक्ति ॥

भगा चाइना युद्ध छोड़ कर,
दूर सुदृढ़ कर लेता पाँव ।
कब आक्रमण करूं ? यह उसके,
मन में संस्थित था दुर्भाव ॥

भेद-नीति से सैन्य-शक्ति दे,
रण-तत्पर कर पाकिस्तान ।
काश्मीर में छद्म वेष धर,
प्रेषित किये विपुल बलवान ॥

जनता को पथभ्रष्ट बनाना,
राष्ट्र-सम्पदा करना नष्ट ।
यही लक्ष्य ले, घूम रहे थे,
यवनों को करते आकृष्ट ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारत के विरोध पत्रों का,
क्रूर-भाव से कर परिहास ।
किया आक्रमण था 'अयूब' ने,
कर कश्मीर-विजय की आस ॥

भारत सहसा स्तब्ध हो गया,
नारद जी करते प्रभु-ध्यान ।
नैमिष तपोभूमि में करते,
भारत-जय-विशदानुष्ठान ॥

सात्विक-गोघृत से जलवाया,
नारद जी ने दीप अखण्ड ।
तान्त्रिक विधि से यह चलता था,
जप मारुति का परम-प्रचण्ड ॥

'आद्याचरण' कई विषयों के,
जो आश्रम पर हैं आचार्य ।
उनकी संनिधि में संचालित,
होकर, यह चलता था कार्य ॥

इधर देवऋषि श्री नारद जी,
लेकर निज प्रचार की वीण ।
निकले भारत प्रान्त-प्रान्त में,
जिससे हो न मनोबल क्षीण ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिसका यह प्रभाव पड़ता है,
'लाल बहादुर' सचिव प्रधान ।
आज्ञा दिलवाता सेना को,
तुम लाहौर करो प्रस्थान ।।

सैन्य अनेकों, विविध पथों से,
रिपु-प्रदेश में हुईं प्रविष्ट ।
पैटन टैंक आदि नाशित कर,
पाता भारत, विजय विशिष्ट ।।

'भुट्टो' शीघ्र भाग कर पहुँचा,
राष्ट्र-संघ में कम्पित गात ।
त्राहि माम्, की ध्वनि कर बोला—
हम पर हुआ प्रबल आघात ।।

राष्ट्र-संघ में सब राष्ट्रों ने,
रक्खा एक छद्म-प्रस्ताव ।
युद्ध बन्द कर दो तुम दोनों,
पारस्परिक बढ़े सद्भाव ।।

इस भारत की पूर्ण-विजय में,
सैन्य शक्ति को जितना श्रेय ।
उतना नैमिष-अनुष्ठान के,
संचालक नारद श्रद्धेय ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री नारद के अन्तराल में,
इतना दीन, दुखी पर प्रेम।
एक बार वार्षिक मख का ही,
भंग कर दिया अपना नेम॥

कुछ ही वर्ष प्रथम आई थी,
सरिताओं में भीषण बाढ़।
जल-प्लावन से कुछ प्रदेश पर,
संकट छाया था अतिगाढ़॥

नगर लखनऊ के प्रदेश कुछ,
हुये गोमती जल-आक्रान्त।
जल-निमग्न भवनों के ऊपर,
क्रन्दन करते व्यक्ति अशान्त॥

अन्न, वस्त्र, गृह के अभाव में,
कुछ मानव थे अति संत्रस्त।
उसी समय नारद बुलवाते,
मख सदस्य अति शीघ्र समस्त॥

बोले—"सच्चा भक्त वही है,
करता जो दीनों का त्राण।
अन्न, वस्त्र, आवास-दान दे,
सभी प्राणियों में भगवान॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इससे संचित यज्ञ-दृव्य से,
दीनों का कर लो उद्धार ।
मेरे इस करुणार्द्र-हृदय का,
भी होगा इससे उपचार ।।

भारत सन्तों का प्रदेश है,
होते यहीं अनूपम संत ।
इन संतों से सब जनता के,
सकल-क्लेश का होता अंत ।।

देख जग को दुख से परितप्त,
द्रवित होता जिनका उर-देश ।
त्याग कर नैमिष-कानन-कुंज,
चल पड़े ले सुशांति सन्देश ।।

——::o::——

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

द्वाविंशति सर्ग

गर्जना नभ में करते मेघ,
चमकती चपला को ले संग ।
भाद्र-पद गंगा की उत्तुङ्ग—
उठ रहीं थीं अति तरल तरंग ।।

एक क्षण में ही बदला दृश्य,
डोलती पुरवा-तरल-वयार ।
फुहारें नभ से झरने लगीं,
वही फिर हुईं मूसलाधार ।।

राज-पथ पर बहता था प्रचुर,
मलिन जल पूरित प्रबल प्रवाह ।
चण्ड रवि किरणों से संतप्त,
अवनि का अपगत अन्तर्दाह ।।

कट रहा विकट-वेग से वारि,
बज रही झड़-झड़-झड़-झड़ टीन ।
झूम कर ऐसे बरसे मेघ,
भीग कर व्यक्ति हुये कुछ दीन ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लगे कट-कट-कट बजने दंत,
प्रकम्पित थर-थर-थर-थर गात ।
चिढ़ाते दादुर करके शब्द,
विहँसते छत के पतित प्रपात ॥

लग गई इतनी भीषण झड़ी,
मेघ अब कभी न होंगे बन्द ।
विवस हो चिंतत थे कुछ व्यक्ति,
ले रहे थे कुछ परमानन्द ॥

मेघ ! तुम सुख-दुख के हो द्वन्द्व,
हास्य चपला का अमित अमंद ।
छुड़ा कर कुछ क्षण को छल-छंद,
बन गये तुम ही परमानन्द ॥

तुम्हीं मेघो ! मयूर के प्राण,
तुम्हीं करते सुधान्य की सृष्टि ।
हरी चादर सी दिखती भूमि,
जहाँ तक जाती जन की दृष्टि ॥

अभी पहुँचा तक चातक नहीं,
स्वाति की जल कणिका के पास ।
वियोगी की कब पूरी हुई,
बता दो, घन ! जीवन की आस ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सरोवर सा बरसा ने किया,
ताल खेतों को एकाकार ।
आज पावस, पावस में मेघ,
व्यक्त होता बन कर साकार ॥

सूर्य-नृप प्रबल करों से नित्य,
कृष्ट कर संचित करते कोश ।
समय पर करके उसकी वृष्टि,
रिक्त थल भर बनते निर्दोष ॥

जिस समय होता वर्षारम्भ,
शिष्य दो नारद के मतिमान ।
कानपुर परमट गंगा घाट,
तीर-संस्थित, करके सुस्नान ॥

प्रबल वर्षा से हो संत्रस्त,
किया पथिकालय मध्य प्रवेश ।
मिलन से दोनों के अति मुदित,
हो रहे थे पावन-उर-देश ॥

कहा—भगवानदास ने शीघ्र,
प्रथम करके कर-बद्ध प्रणाम ।
सुहृद् वर मेरे विष्णुदयाल !
आप वास्तव में हैं निष्काम ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आप प्रार्थना कराते रहे,
मिलों में होकर तल्लीन ।
संगठन द्वारा कुछ पथ-भ्रष्ट,
बचाये तुमने हिन्दू दीन ॥

इसाई जिन्हें बनाया गया,
मिली जिनको अंग्रेजी मेम ।
उन्हें करके तुमने परिशुद्ध,
कर दिया उनका जीवन क्षेम ॥

प्रभु कृपा से तव दर्शन हुआ,
बैठ लो, जाना कहीं दुरूह ।
हो रही भीषण वर्षा आज,
नीरदों का अति विकट समूह ॥

अंग-प्रोक्षण का आसन बना,
युगुल साधक होते आसीन ।
समय की सार्थकता के हेतु,
हुये सत-चर्चा में तल्लीन ॥

दृष्टि की मधुर, मित्र की ओर,
लगे कहने फिर विष्णुदयाल ।
आप भगवान दास हो धन्य,
देवऋषि मानस मंजु मराल ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूर्ण गुरु आज्ञा पालक आप,
पूज्य नारद के लीला पात्र ।
बाल-जीवन से कर सत्संग,
तुम्हारा धन्य हुआ यह गात्र ॥

मुझे इस परमट पर ही मिला,
श्री चरण का सुन्दर-संयोग ।
यहीं से संस्थात्मक था हुआ,
प्रार्थना का शुभ सफल प्रयोग ॥

प्रचारक मुझे बनाया गया,
संगठित किया, एक लघु क्षेत्र ।
इसाई बनते देखे दीन,
सजल तब हो जाते मम नेत्र ॥

पूज्य गुरुवर का करके स्मरण,
गया था, मैं उनके जब पास ।
विवशता से वे रोने लगे,
बँधा दी मैंने उनको आस ॥

पूज्य गुरुवर की ही थी कृपा,
हो गये वे सब हिन्दू, भक्त ।
प्रार्थना की सामूहिक शक्ति,
हो गई थी उन पर अनुरक्त ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहा भगवान दास ने—"तात !
हमारे गुरुवर हैं सर्वज्ञ ।
जान पाते पर उनको नहीं,
प्रबल माया में उलझे अज्ञ ।।

विगत आया प्रयाग का कुंभ,
कर दिये भक्त पंक्ति में बद्ध ।
कराने को अब पर्व-स्नान,
हो गये श्री नारद सन्नद्ध ।।

किन्तु कुछ दूरी पर देवर्षि,
सुसंस्थित करते अपने भक्त ।
स्नान का ध्यान भुला कर किया,
सभी को प्रवचन में अनुरक्त ।।

इधर संगम पर प्रेषित किये,
आपने अपने सेवक चार ।
बताया आकर सबने यही,
मर गये यात्री पाँच हजार ।।

प्रमुख दो पुल भी हुये विनष्ट,
यात्रियों का है जाना बन्द ।
धन्य ये गुरु नारद के शिष्य,
ले रहे प्रवचन का आनंद ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तीर्थ केदारनाथ से प्रथम,
एक चट्टी है, गौरी कुण्ड ।
पूज्य गुरुवर थे ठहरे वहाँ,
साथ में था भक्तों का झुंड ।।

एक तो शीताधिकता वहाँ,
दूसरे वर्षा प्रबल प्रचण्ड ।
तीन बजते ही उठ कर आप,
उठा लेते हैं अपना दण्ड ।।

कहा—"सब साथी मेरे शीघ्र,
चलें सँग में होकर कटि-बद्ध ।
देख भक्तों की ऊहा-पोह,
चल दिये एकाकी सन्नद्ध ।।

एक चिल्लाया स्वर कर तीव्र,
पहाड़ी अति सात्विक मजदूर ।
अरे ! तुम पड़े, किन्तु भगवान,
तुम्हारा निकल गया वह दूर ।।

श्रवण कर साधक चले सवेग,
मिले अग्रिम-चट्टी पर संत ।
सभी बैठे यतिवर के निकट,
हो गया सारे श्रम का अंत ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शीघ्रता में आई थी छोड़,
एक वृद्धा कुछ वस्तु विशेष।
चले अन्वेषण करने हेतु,
सर्वदानन्द, मुदित उर-देश ॥

किन्तु जाकर क्या देखा वहाँ,
गिर पड़ा फट कर पर्वत श्रृंग।
हो गये चूर्ण सभी हैं गेह,
लौट कर कहते करुण प्रसंग ॥

अभी तक ज्ञात हुआ था नहीं,
जिन्हें नारद का परम प्रभाव।
आज इस घटना से हो गया,
उन्हें आज्ञा पालन में चाव ॥

× × ×

हुये भगवानदास कुछ मौन,
क्योंकि उर गद्-गद् प्रेम विभोर।
पोंछ कर नेत्रों से जब बिन्दु,
निहारा फिर विष्णू की ओर ॥

कहा—"गुरुवर सामान्य न संत,
हरण करने को भू का भार।
दूर करने कलियुग के पाप,
हुआ फिर नारद का अवतार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूर कुछ ही दिल्ली से एक,
घनी जनसंख्या से युत ग्राम।
वहाँ का सेठ हो गया सर्प,
रहा करता था अपने धाम ॥

पतोहू, पुत्र, पौत्र को दिया,
स्वप्न में दर्शन हो अति दीन।
"हमारा तुम कर दो उद्धार,
तुम्हारे ही जीवन आधीन ॥

भार जिनके ऋण का हे पुत्र!
हमारे शिर पर पाँच हजार।
वही नैमिष वासी शुचि संत,
हमारा कर सकते उद्धार ॥"

पुत्र आदिक सब बोले—"असत्,
मानता कौन स्वप्न की बात।"
बहिन, बहिनोई को भी हुआ,
स्वप्न में समाचार यह ज्ञात ॥

पौत्र को अब तक विस्मृत नहीं,
बताया था जो संत स्वरूप।
अस्तु उसको लेकर के पिता,
आगये नैमिष-हनुमत कूप ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अभी यह अर्ध-रचित था कूप,
हो रहा वहीं सुखद सत्संग ।
पिता-पुत्रों के इंगित देख,
अनूपम जिज्ञासा का ढंग ॥

बंद कर प्रवचन पूछा—"सेठ !
पूछते क्या बालक से आप ।"
तभी कहता वह सारा वृत्त,
बताता अपने सब संताप ।

कुतूहल सबके उर भर गया,
श्रवण कर, मैंने वार्तालाप ।
कहा श्री गुरुवर से सस्नेह,
पधारें उस नगरी में आप ॥

साथ श्री हरिनारायण चले,
अर्थ-मंत्री होकर सानंद ।
मुझे भी आज्ञा मिलती शीघ्र,
चल दिये साथ विवेकानंद ॥

कुतूहल नगरी में छा गया,
आगई जनता वहाँ अपार ।
सेठ का सर्प-योनि से शीघ्र,
करेंगे ऋषि नारद उद्धार ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भावगत का महानतम ग्रन्थ,
व्यास आसन पर कर आसीन ।
अनुष्ठानिक विधि से सप्ताह,
हो रहा श्रोता सब तल्लीन ॥

सातवें दिन गुरुवर के निकट,
शीश पर पगड़ी, जोड़े हाथ ।
मध्य निशि में, कहता वह सेठ,
क्षमा मुझ को कर दो मुनिनाथ ॥

पुत्र जो भी दे देवें द्रव्य,
उसी से कर दो मम उद्धार ।
आप जैसे ऋषि जग में स्वल्प,
करें जो पतितों पर उपकार ॥

सर्प की योनि छुड़ा कर नाथ,
किया है मुझ को आज सनाथ ।
बना कर शिष्य सभी परिवार,
दया का घर दें इन पर हाथ ॥

बता कर सब को यह वृत्तान्त,
कर दिया था ऋण से उन्मुक्त ।
आज तक नहीं दिखाई पड़ा,
सर्प वह पाकर गति उपयुक्त ॥"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लौट कर आये दिल्ली-मध्य,
वहाँ पर निगम बोध है घाट।
पूज्य नारद के प्रवचन हेतु,
वहाँ संस्थित थी सभा विराट॥

वहाँ की भी घटना है दिव्य,
साथ ले निज सुत सत्यप्रकाश।
एक अति दुखित पिता आ गया,
हृदय में लेकर नव अभिलाष॥

बताया हम शरणार्थी-व्यक्ति,
त्याग कर आये पाकिस्तान।
पास में धन था किंचित नहीं,
क्षेत्र भी था मम हेतु अजान॥

अस्तु इस सुत को पढ़ने हेतु,
मिला इस्लामी शिक्षा केन्द्र।
साथ में दो हिन्दू थे छात्र,
रामनारायण तथा महेन्द्र॥

साथ छूटा कुछ ही दिन बाद,
हुआ जब एकाकी यह छात्र।
तभी यवनों ने इसको किया,
विधर्मी, कलुषित तथा कुपात्र॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

खिला कर इसे धेनु का मांस,
पढ़ाया कलमा देकर लोभ ।
बीच से मूछें कटती देख,
हुआ मम मानस में अति क्षोभ ।।

इसे समझाया मैंने बहुत,
किन्तु जब ठुकरा कर मम प्यार ।
दुराग्रह करने पर डट गया,
हुआ मैं अनशन हेतु तयार ।।

सामने सीता राघव मूर्ति,
कहा मैंने—मेरे भगवान !
हमारा बालक कर दो शुद्ध,
नहीं तो हम त्यागेंगे प्रान ।।

उसी दिन इसे स्वप्न में सदय,
आप मिल जाते हैं शुचि संत !
कह रहे—मैं तेरा हूँ पिता,
शीघ्र कर दूंगा, दुख का अंत ।।

पिता जी ! कहाँ मिलेंगे आप ?
मिलूंगा निगम बोध के घाट ।
देख कर यह विचित्रतम स्वप्न,
खुल गये इसके नयन कपाट ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बताया हम को जब यह स्वप्न,
लिवा लाया दिखलाये संत ।
आप को ही पहिचाना अस्तु,
दूर करदें अब दुःख दुरंत ॥

पूज्य नारद जी लाये उसे,
कराते उसकी सुन्दर शुद्धि ।
प्राप्त कर सुन्दरतम सत्संग,
हो गई उसकी सात्विक बुद्धि ॥

× × ×

विगत वर्षा का भीषण वेग,
चल दिये दोनों पुलकित अंग ।
आज तक भूल न पाये उन्हें,
शान्त गोष्ठी के मधुर प्रसंग ॥

पड़ा अबकी प्रयाग में कुंभ,
शिविर तब भारत-भक्त समाज ।
बढ़ा मत्स्यावतार सा किंतु,
भीड़ थी अतिशय रही बिराज ॥

ज्ञात होता था होकर चयन,
आगये सब मेला के भक्त ।
प्रात से अर्ध रात्रि तक सभी,
सुना करते प्रवचन, अनुरक्त ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सभी संतों, आचार्यों तथा,
मण्डलेश्वर, यतियों के वृन्द ।
शंकराचार्यों ने सस्नेह,
कहा उर में भर कर आनन्द ।।

पुराना सबसे नैमिषपीठ,
व्यास थे जिस पद पर आसीन ।
काल के प्रबल वेग से नष्ट,
हुआ था, अब चेतना नवीन ।।

देख कर्तृत्व शक्ति भवदीय,
उठ रहा सबके मन में भाव ।
आप नैमिष पीठाधिप बनें,
हमारा सामूहिक प्रस्ताव ।।

आप की है प्रचार गति दिव्य,
आप के भव्य सभी हैं कार्य,
आज से नैमिष-पीठाधीश !
आपका पद है जगदाचार्य ।।

पूज्य नारद की स्वीकृति मिली,
किया सब संतों ने अभिषेक ।
मंजु माधवाचार्य विद्वान्,
तिलक कर देते सहित विवेक ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपस्थित जनता ने तव किया,
प्रबल स्वर से था जय-जयकार।
मंच पर मुद्रा-वर्षण हुआ,
द्रव्य आ जाता कई हजार ॥

किसी ने चाँदी का शुचि मंच,
किसी ने चँवर किसी ने दंड।
दान करने का व्रत ले लिया,
सभी में श्रद्धा-भाव अखंड ॥

पीठ के शुभ-उद्घाटन हेतु,
महोत्सव नैमिष में इस बार।
परम अद्भुत हो जिस को देख,
चकित हो जाये सब संसार ॥

देवऋषि नारद जी ने कहा,
प्रचारक बनें विवेकानन्द ।
वही संकलन द्रव्य का करें,
रहेंगे हम तटस्थ स्वच्छन्द ॥

"छोड़ कर अग्नि पक्व सब भोज्य,
करूँगा मैं प्रचार सानन्द ।
रातदिन मैं कर दूंगा एक",
कह रहा शिष्य विवेकानन्द ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

योजना दश पुरियों की बना,
अष्ट उत्तर शतकुण्डी याग ।
करूँगा वह रचना सुविचित्र,
बनेगा नैमिष कुंभ-प्रयाग ॥

साथ लेकर कुछ साधक भव्य,
करूँगा मैं धार्मिक-अभियान ।
मिले आशिष मुझ को गुरुदेव,
न हो कर्तापन का अभिमान ॥

श्रवण कर गद्-गद् होता चित्त,
कहा नारद ने तुम निर्मान ।
सन्त गुरु सेवी के सन्निकट,
कभी क्या आ सकता अभिमान ??

सुन अज्ञ विमोहित होते,
बुध-बुद्धि विनोदन शीला ।
यतिवर श्री नारद जी की,
है अति-विचित्र नर लीला ॥

--::०::---

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्रयोविंशति सर्ग

शौनक कुटीर के सम्मुख,
विस्तृत पाकर की छाया ।
उसमें विवेक का प्रतिनिधि,
वट का तरुवर जम आया ॥

यह प्रकृति और परमेश्वर,
या भक्ति ज्ञान अवतारी ।
वट सा वर पाकर पाकर,
कितनी हो गई सुखारी ॥

दम्पति दोनों बढ़ते हैं,
सहयोग परस्पर पाते ।
दोनों दोनों को अपने,
मानस के मध्य लगाते ॥

दोनों का व्रत पावन है,
भक्तों की सेवा करना ।
संतप्त-स्वान्त मनुजों के,
संताप, क्लेश को हरना ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नैमिष पीठाधीश्वर पर,
नैमिष ने छत्र लगाया ।
कितनी शीतल हो जाती,
इस वट पाकर की छाया ॥

देवर्षि यहीं पर संस्थित,
उपदेश-सुधा बरसाते ।
चातक से साधक, दुर्लभ,
शुचि ज्ञान स्वाति जल पाते ॥

प्रवचन में यतिवर मख की,
बतलाते विशद महत्ता ।
"इन यज्ञों से ही संस्थित,
है धर्म, कर्म की सत्ता ॥

अष्टोत्तर शतकुण्डी का,
मख, है विस्तृत आयोजन ।
दस पुरी विभाग व्यवस्था,
हों विविध जहाँ सम्मेलन ॥

भोजन, आवास, प्रकाशन,
स्वच्छता, प्रकाश, सुरक्षा ।
वितरण, संचालन, आदिक—
की भिन्न-भिन्न हैं कक्षा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हो प्रचुर द्रव्य का संचय,
अति दक्ष, व्यवस्था कारी ।
साधक सब तत्पर होकर,
यह यज्ञ करें मनहारी ॥

मेरे आशिष को लेकर,
कुछ साधक-गण अपनायें ।
फिर शीघ्र विवेकानँद जी,
मख के प्रचार को जायें ॥"

आज्ञा होते ही कविगण,
अभियान गीत हैं गाते ।
कुछ प्रमुदित होकर साधक,
शुभ सुमन-माल पहिनाते ॥

श्री संत विवेकानँद जी,
चलते प्रचार जब करने ।
सब अमर, व्योम से लगते,
पावन प्रसून हैं झरने ॥

गोमा ने कल-कल स्वर से,
अभिनन्दन-गीत सुनाया ।
ललिता माता का कर भी,
साधक के शिर पर आया ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कत्था वाली माता की,
अर्पित जो जीप निराली ।
उसने भी वायु-विनिंदक,
गति, अपनी तीव्र निकाली ॥

है चक्रपाणि-वश वर्तिनि,
चंचल गति चलने वाली ।
शुभ स्नेह वारि की भूखी,
लक्ष्मी सी सुषुमा शाली ॥

नगरों-नगरों में जाकर,
निज अरुण-ध्वजा लहराती ।
यह कार, कार्य में तत्पर,
अर्थोपार्जन करवाती ॥

नारद, शिष्यों को लेकर,
सुन्दर श्रमदान कराते ।
बालू का ऊँचा टीला,
निम्न स्तर पर भरवाते ॥

शतशः नरनारी जुटते,
कितना था दृश्य निराला ।
अष्टोत्तर शत कुंडों की,
फिर बनी यहीं मखशाला ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री संत विवेकानँद जी,
थे जहाँ-जहाँ पर जाते ।
धनपति शतशः प्रतिदिन ही,
सादर धन प्रचुर चढ़ाते ॥

दस पुरियों हित हो जाती,
भोजन की पृथक व्यवस्था ।
यजमान यज्ञ के बनते,
धन-पूरित होती संस्था ॥

नैमिष की ऊँची, नीची,
हो भूमि सपाट रही थी ।
अनगिन भृत्यों की अवली,
अतिशय धन चाट रही थी ॥

अष्टोत्तर शतवेदी से,
अब कलित हुई मखशाला ।
सिरकियों, बल्लियों, बांसों—
से मन्दिर सी द्युति वाला ॥

शिवराज सिंह जी मंडप,
विरचित सस्नेह कराते ।
विवुधेश व्यवस्था करके,
दस पुरी विभाग बनाते ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अष्टोत्तर शत मंचों की,
दो स्थानों मध्य अवलियाँ ।
हो चूर्ण विलिम्पित चमकी,
मानों वेला की कलियाँ ॥

आगरा तथा मेरठ से,
बहु संख्यक शिविर मँगाये ।
चालिस सहस्र ही केवल,
इस उत्सव में लग पाये ॥

श्री राज्यपाल की आज्ञा,
दो राज-मार्ग बन जाते ।
डामर, कंकड़ के क्रमशः,
ट्रक इन्हीं पथों से आते ॥

यह राज-मार्ग आश्रम को,
स्टेशन, बस्ती से जोड़े ।
थे खड़े हुये स्वागत में,
सब का श्रम-संकट तोड़े ॥

या उत्सव यह आश्रम का,
निज दोनों कर फैलाये ।
दोनों पथ के पथिकों को,
मानो निज निकट बुलाये ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बासों के सुन्दर फाटक,
फिर उन पर बन्दनवारी ।
संकेत वाक्य बोर्डों से,
शोभा होती मन-हारी ॥

बन रूप गगन में शिविरों—
की घिरी श्वेत घन माला ।
विद्युत् भी चमक रही क्या,
पावस ने डेरा डाला ॥

बहु रंग वल्व, तरुओं में,
सुमनों से चमक रहे थे ।
ऋतुराज, स्वयं क्या उत्सव—
दर्शन को लमक रहे थे ॥

शतशः कुण्डों की ज्वाला,
छूकर लू तुल्य प्रभंजन ।
संतप्त बालुका को ले,
करता था ग्रीष्म निदर्शन ॥

श्री अजय प्रताप करों से,
भरता शुभ स्वच्छ सरोवर ।
प्रतिबिम्बित बल्व-सरोजों—
से दृश्य शरद का सुन्दर ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुछ वैरागी गण अपनी—
धूनी में आग लगाये ।
मानो हेमंत महोदय—
ही विविध रूप में आये ।।

इस शिशिर काल में भी यह,
ऋतु पाँचों झाँक रहीं थीं ।
अथवा सौभाग्य शिशिर का,
निज मन में आंक रही थीं ।।

होता था देवपुरी में,
मन्त्रों से देवाराधन ।
चैतन्य-पुरी में चलता,
निशि दिन अखंड संकीर्तन ।।

अष्टोत्तर शत पंडित गण,
श्री विष्णु-पुरी में सुन्दर ।
भागवत-पाठ करते थे,
यह दृश्य मनोरम सुखकर ।।

थे धर्म-पुरी में धार्मिक,
जो प्रचुर द्रव्य के दाता ।
अष्टोत्तर शत पंडित गण,
साकेत पुरी में आता ।।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वे तन्मय होकर करते,
मानस सप्ताह परायण ।
लाखों नर नारी करते,
थे घूम-घूम कर दर्शन ॥

बिजली से जगमग बल्वों—
से फाटक सभी सजाये ।
तारागण मानों नभ से,
हैं उतर-उतर कर आये ॥

सारे पथ के स्तम्भों पर,
शोभित बल्वों की माला ।
गन्धर्व नगर सा दिखना,
आश्रम का दृश्य निराला ॥

गुरुवर नारद जी अपना,
हरिहर-पर्वत बनवाये ।
एकान्त गोमती तट पर,
थे आसन मंजु लगाये ॥

थी हरित-तृणों की चादर,
भक्तों के हेतु बिछौना ।
दर्शन करके, आश्रम का,
प्रमुदित उर कोना-कोना ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यतिवर श्री बारद करते,
गोमा-तट से संचालन ।
सब हरिहर-यज्ञ प्रबंधक,
करते आज्ञा का पालन ॥

पंडाल मध्य प्रवचन में,
अपना मन मंजु लगाये ।
लाखों नर नारी बैठे,
श्रद्धा के भाव सजाये ॥

द्वारिका पीठ के आये,
शंकराचार्य निष्कामी ।
श्री 'पथिक' अनेकों योगी,
उपदेशक-गण बहु नामी ॥

श्री जगन्नाथ, सन्तोषी,
शिवलाल, लाल जी आये ।
श्री सिन्धु, उमाशंकर ने,
मानस रहस्य बतलाये ॥

विवुधेश विदुर आदिक थे,
पावन पंडाल प्रवक्ता ।
ब्रजरानी, काली, विद्या,
गुरु, पद रज की अनुरक्ता ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रामा, सरस्वती, मुक्ती,
गोपी, शारदा, सुशीला ।
आश्चर्य-चकित सी लखतीं,
गुरुवर की पावन लीला ॥

श्री संत विवेकानँद की,
करके शुचि सफल समीक्षा ।
नारद जी प्रमुदित देते,
सन्यास कर्म की दीक्षा ॥

श्री वेणीराम, बनारस,
माधवाचार्य जी आये ।
सन्यास कर्म-दीक्षा में,
शुभ वैदिक मंत्र सुनाये ॥

नारद बोले— "सन्यासी,
होता नर से नारायण,
सब नैमिष आश्रम वासी,
कर लें इनका अभिवादन ॥"

गोमा के तट पर अनगिन,
स्वर करते, जय-जय कारी ।
सन्यास-कर्म-दीक्षा से,
प्रमुदित थे सब नर-नारी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूसरे दिवस गुरुवर की,
सन्निधि में सब सन्यासी ।
शुचि परमहंस, मुनि वैष्णव,
त्यागी व वनस्थ, उदासी ॥

हरिहर पर्वत पर संस्थित,
कितने विद्वान् तपस्वी,
कुछ राज्य सचिव कुछ कवि गण—
कुछ लेखक मंजु मनस्वी ॥

विस्तृत-समाज में नारद,
ज्यों अमर-सभा में वासव ।
श्री शौनक ज रख देते,
प्रस्ताव एक शुभ अभिनव ॥

यह यज्ञ महोत्सव जिसके,
हित सुन्दर गया मनाया ।
वह शुभ मुहूर्त अब सबके,
सम्मुख, अति अद्भुत आया ॥

नैमिष में सबसे पहिले,
था व्यास पीठ अति सुन्दर ।
यह धर्म-स्थापना का था,
शुचि केन्द्र सभी को सुखकर ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अब सभी शंकराचार्यों—
की हुई पुनः अभिलाषा ।
सारा जग आज लगाये,
इस नैमिष वन से आशा ॥

श्री जगदाचार्य महोदय,
पीठाधिप पद अपनायें ।
हम सभी समर्थन करते,
नारद न विलम्ब लगायें ॥

अतएव आप सब चल कर,
पहुँचेगे नैमिष टीला ।
फिर व्यास पीठ उद्घाटन—
की होगी सुन्दर लीला ॥

श्री जगदाचार्य वहीं पर,
कुछ शुभ सन्देश सुनायें ।
हम सभी संत उस पर चल,
निज जीवन भव्य बनायें ॥

सब साधुवाद कह आये,
होता विधि से उद्घाटन ।
कलियुग के सब दोषों का,
होता मानों उच्चाटन ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घंटा, शंख ध्वनि होती,
सब करते जय-जय कारी।
जयनारायण डमरू लेकर,
नर्तन करते मनहारी॥

श्री व्यास-पीठ पर संस्थित,
देवर्षि, दिव्य द्युति-शाली।
विद्वान् वेद-ध्वनि करते,
झर-झर झरती, सुमनाली॥

विधिवत् फिर षोडश विधि से,
होती देवर्षि-समर्चा।
अगणित दर्शक आ जाते,
सुन व्यास पीठ की चर्चा॥

शतशः मातायें, पूजन—
कर, आरति-दीप, जलातीं।
विधिवत गुरु-पूजन करके,
शुभ, सुमन-माल पहनातीं॥

कवि-गण भी कल कंठों से,
गायन प्रशस्ति के गाते।
फिर उपदेशामृत पाने—
के हेतु मौन हो जाते॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री जगदाचार्य महोदय,
देवर्षि व्यास पीठेश्वर ।
निज उर के उद्‌गारों को,
कहते, मानस संशय हर ॥

वह बोले— "इस नैमिष में,
ऋषिवर थे सहस अठासी ।
जग को चरित्र की शिक्षा,
देते थे वे वनवासी ॥

सुन्दर, समाज-रचना के,
शुभ सूत्र बताने वाले ।
भव-भ्रान्त सभी पथिकों को,
सत् पथ पर लाने वाले ॥

वे मेरे उर-अन्तर में,
सच मानों बोल रहे हैं ।
भावी प्रचार गति-विधि का,
आवृत पट खोल रहे हैं ॥

जितने विरक्त, वैष्णव हैं,
साधक, वनस्थ सन्यासी ।
वे जगती के कण-कण में,
बतला कर, घट-घट वासी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वेदों, शास्त्रों में वर्णित,
जो धर्म, कर्म की शिक्षा ।
संयम, यम, नियम, तपस्या,
साधन, शुभ शांति तितिक्षा ॥

इनका मानव-जीवन में,
व्यवहारिक रूप बनावें ।
एकात्मवाद की शिक्षा—
से एक सूत्रता लावें ॥

भावात्मक ऐक्य, जगत में,
कर सकता शांति व्यवस्था ।
व्यपगत कर सकता विघटन,
मानव की विषमावस्था ॥

सुन्दर चरित्र की शिक्षा,
घर-घर जन-जन पहुँचावें ।
तीर्थों को केन्द्र बना कर,
यह राम-राज्य को लावें ॥

यह धर्म और ईश्वर की,
सत्ता का तत्व बतावें ।
फिर सदाचार की शिक्षा—
से भ्रष्टाचार भगावें ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रज, तम को दूर भगा दें,
सात्विक-शिक्षा के द्वारा ।
याचक अयाच्य बन जावें,
सब धनिक करें भंडारा ॥

दुर्गुण, दुर्व्यसन हटाने,
का प्रण उनसे करवायें ।
जग को कुमार्ग से सत्वर,
सात्विक-शुभ पथ पर लायें ॥

इन्द्रिय-संयम करवा कर,
भोगों की वृत्ति छुड़ावें ।
वा न प्र स थी, स न्या सी,
अब जग हित में जुट जावें ॥

नैमिष-आश्रम में मैंने,
विरचित की भव्य गुफायें ।
हठयोगी, इनमें आकर,
प्रभु में निज ध्यान लगायें ॥

अणिमादिक सिद्धि स्वयं ही,
उनके समीप आयेंगी ।
भौतिक-उपलब्धि सभी ही,
नत-मस्तक हो जायेंगी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैं नारद, नैमिष आया,
लेकर प्रचार गति-वीणा ।
कर दूंगा कलि की भीषण—
गति, जीवन में परिक्षीणा ॥

रोती है भक्ति न इसका,
जग में कोई परित्राता ।
वैराग्य, ज्ञान भू लुण्ठित,
मैं इनका आश्रय-दाता ॥

मेरी प्रचार-गति विधि से,
तीनों का नर्तन होगा ।
सहयोग सभी का वाञ्छित,
अब युग-परिवर्तन होगा ॥

सुन कर सभी प्रहर्षित होते,
जनता करती जय-जय कार ।
नील-निलय से निखिल निर्जरों—
ने बरसाये पुष्प अपार ॥

———::०::———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परिशिष्ट

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५१	४	वठे	उठे
६९	५	गति, ममता	गतिमयता
९७	१०	खड़े	पड़े
९७	१५	हाँ	हा !
९९	११	सम्मुख	सम्भ्रम
१०५	११	निष्पीड़ित	निष्पीडित
१४४	१८	उतारो	उतरो
१५६	२०	अवदत्त घ्यान	अब, दत्तघ्यान
१६३	८	श्री	भी
१८७	१२	घर	घट
१९३	१७	विद्वन !	विद्वन् !
१९४	११	कणादि	कणाद
२०५	९	ब्रह्माचर्याश्रम	ब्रह्मचर्याश्रम
२०७	६	पितृ-चरणों में	पितृ-चरणों ने
२१०	५	वक्सर खेड़ा	वक्स खेड़ा
२२९	१२	हिन्दू जन जा	हिन्दू जन का
२३१	११	अंचल ने	अंचल से
२४७	८	कि-गंगावत्स	भक्तवर, स्वर्ग
२५४	१९	झंड़ियों	झंडियों
२६२	३	भौतिक वादी	भौतिकतावादी
२८९	७	चिंतत	चिंतित
२९१	२	होकर	हो करके
२९५	१५	जब-विन्दु	जल विन्दु

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कविवर पं० 'विमलेश' शास्त्री की अन्य रचनायें

१—गर्जना	३-५०
२—शुकामृत तरङ्गिणी (अप्र०)	७-००
३—अमर सेनानी तात्या (महाकाव्य) अप्र०	७-००
४—विहार केशरी कुंवर सिंह (खण्डकाव्य) प्रेस में	३-५०
५—धनुष यज्ञ नाटक (अप्र०)	४-००
६—बाल पद्यावली	०-६२
७—कपिल देवहूति सम्वाद	०-१०
८—अम्बरीष दुर्वासा	०-०५
९—कीर्तन कुसुमावलि	०-२५

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

फोन - ३८५६६
मनोहर प्रेस
पी.रोड - कानपुर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi